Barcode : 99999990292975
Title - Madanapala-Nighantu
Author - Pala,.Raja Madana
Language - sanskrit
Pages - 184
Publication Year - 1902
Barcode EAN.UCC-13



BHAVAN'S LIBRARY

This book is valuable and
NOT to be ISSUED
out of the Library
without Special Permission

मदनपालनिघण्टुः ।

न्मदनपाल नृपतिना विरचितः ।

पण्डितकुलपति

आनन्द विद्यासागर भट्टाचार्य्यात्मजेन

ति श्रीआशुबोध विद्याभूषण भट्टाचार्य्येण

तथा

डित श्रीनित्यबोध विद्यारत्न भट्टाचार्य्येण

परिवर्द्धित, परिवर्त्तित, संस्कृत संशोधित

प्रकाशितश्च ।

तृतीय संस्करणम् ।

कलिकातानगर्य्याम्

एन, एस्च योदफिन्याचरण चक्रवर्त्तिना

मुद्रित ।

१८०२ ।


28445
LIBRARY

अथ मदनपालनिघण्टौ वर्गानुक्रमेण

सूचीपत्रम् ।

विषयाः	पृष्ठाङ्काः ।	विषयाः	पृष्ठाङ्काः ।
मङ्गलाचरणम्	१	इन्द्रियवर्गौ	७
ग्रन्थप्रस्तावना	,,	हड्डसौ	,,
अथ आम्रादिवर्गः ।		कण्टकारी	,,
		लघुपञ्चमूलम्	,,
हरीतकी	२	दशमूलम्	,,
आमलकम्	३	ऋद्धिः-वृद्धिः	८
विभीतकः	,,	काकोलीद्वयम्	,,
त्रिफला	४	मेदाद्वयम्	,,
भूधात्री	,,	जीवकर्षभकौ	,,
माक्षोलामलकौ	,,	अष्टवर्गः	,,
आमलकः (अष्टरूपः)	,,	जीवन्ती	८
गुडूची	,,	मधुयष्टी	,,
बिल्वः	५	माषपर्णी मुद्गपर्णी	,,
अग्निमन्थः	,,	जीवन्तीयुगल	,,
पाटला	,,	एरण्डद्वयम्	,,
काश्मरी	,,	शारिवाद्वयम्	१०
श्योनाकः	६	यवास धन्वयास	,,
मदनपञ्चमूलम्	,,	मुञ्जी	,,
गोक्षुरः	,,	महामुञ्जी	११
माषपर्णी	,,	अपामार्गद्वयम्	,,

विषयाः	पृष्ठाङ्काः।	विषयाः	पृष्ठाङ्काः।
काम्पिल्यः	११	प्रसारणी	१८
दन्तोद्वयम्	,,	शतावरीद्वयम्	,,
जयपालः	१२	बलाचतुष्टयः	,,
चित्रतृद्वयम्	,,	ज्योतिष्मतीद्वयम्	१८
इन्द्रवारुणीद्वयम्	,,	देवदारु	,,
आरग्वधः	,,	सरलः	,,
नीलिनी	१३	पुष्करमूलम्	२०
कटुकी	,,	कुष्ठम्	,,
अङ्कोलकः	,,	काकटशृङ्गी	,,
सेहुण्ड	१४	कट्फलम्	,,
निम्बद्वयम्	,,	रोहिषम्	,,
किरातिक्तः	,,	भार्गी	२१
कुटज	१५	पाषाणभेदः	,,
इन्द्रयव	,,	मुस्तम्	,,
मदनः	,,	धातुकी	,,
कदुष्ठम्	,,	माक्षिका	,,
हेमाङ्गा	,,	विदारीकन्दद्वयम्	२२
सातला	१६	वाराहीकन्दः	,,
अश्मन्तः	,,	पाठा	,,
काञ्चनारः	,,	मोरटी	,,
निर्गुण्डीद्वयम्	,,	मञ्जिष्ठा	,,
मेषशृङ्गी	१७	हरिद्रा	२३
पुनर्नवाद्वयम्	,,	दारुहरिद्रा	,,
राजा	,,	अपुषाटः	,,
अश्वगन्धा	,,	वाकुची	,,

विषया:	पृष्ठाङ्का: ।
भृङ्गराज:	२४
पर्पट:	,,
पायमाणा	,,
मङ्काजालनिका	,,
अतिविषाचतुष्टयम्	२५
काकमाची	,,
काकजङ्घा	,,
लोध्रद्वयम्	,,
खदिरद्वयम्	२६
देवदाली	,,
शंखपादी	,,
सोमवल्ली	,,
आकाशवल्ली	,,
शाकुली	,,
वटपत्री	२७
मञ्जिष्ठा	,,
शुपर्णी	,,
कपिकच्छु:	,,
पृश्निपर्णी:	,,
यष्ट्याह्वयगुंटिको	,,
विष्णुक्रान्ता	२८
गङ्गपुष्पी	,,
मुण्डिका	,,
धनंपुष्पी	,,
अक्षातक:	,,

विषया:	पृष्ठाङ्का: ।
घरपोटा	२८
द्रोणपुष्पी	२९
ब्राह्मी-मण्डूकपर्ण्यौ	,,
सुवर्चलाद्वयम्	,,
मत्स्याक्षी	,,
जलपिप्पली	,,
गोजिह्वा	,,
नागदमनी	३०
गुञ्जाद्वयम्	,,
वेल्लन्तर:	,,
यव्दाक:	,,
पिण्डार:	,,
छिछिका	,,
रोहित:	,,
मोचरस:	३१
अजगन्धा	,,
मोरियक:	,,
व्यव्दाद्वयम्	,,
दन्ती:	,,
कार्पास:	३२
आरामशीतला	,,
कुक्कुरट:	,,
वासी	,,
गरपुङ्खा	,,
बलामोटा	,,

विषयाः	पृष्ठाङ्काः।
सदर्भना	३२
मयूरशिखा	,,
लक्ष्मणा	३३
मांसरोहिणी	,,
अस्थिसंहारकः	,,
अर्कहयम्	,,
करवीरहयम्	,,
धत्तूरः	,,
कलिकारी	३४
कुमारी	,,
भद्रा	,,
काञ्चनी	,,
दूर्वाहयम्	,,
गण्डदूर्वा	३५
काशः	,,
कुशः	,,
मुञ्जः	,,
नलः	,,
वशः	,,
जवानी	,,
खसतिलः	३६
अहिफेनः	,,
किलिञ्जिष्टः	,,

अथ शुण्ठ्यादिवर्गः।

विषयाः	पृष्ठाङ्काः।
शुण्ठी	३६
आर्द्रकम्	३७
मरिचम्	,,
पिप्पली	,,
चूर्णम् चतुरूपणम्	३८
पिप्पलीमूलम्	,,
चव्यम्	,,
चित्रकः	,,
पञ्चकोल-षडूषणम्	३९
शतपुष्पाहयम्	,,
मिश्रेया	,,
वनमिथो	,,
अजमोदा	,,
जीरकद्वितयम्	,,
यवानीहयम्	४०
अजगन्धा	,,
वचा	,,
हपुषा	,,
विडङ्गम्	४१
धान्याकम्	,,
शिग्रुपत्रोहयम्	,,
शिग्रुकम्	,,
वंशलोचना	४२

विषयाः	पृष्ठाङ्काः।
सैन्धवम्	४२
सौवर्चलम्	,,
विड्म्	,,
सामुद्रम्	,,
औद्भिदम्	,,
गण्डाख्यम्	,,
क्षारम्	४३
काचलवणम्	,,
यवक्षार-सर्जिकाक्षारः	,,
टङ्कणः	,,
सुधाक्षारः	,,
सर्वक्षारः	,,

अथ कर्पूरादिवर्गः।

कर्पूरः	४४
कस्तूरिकाद्वयम्	,,
मार्जारी	,,
चन्दनचतुष्टयम्	४५
कुङ्कुमम्	,,
सिल्हकः	,,
एलवालुकम्	४६
जातीफलम्	,,
जातीपत्री	,,
लवङ्गम्	,,
कङ्कोलम्	,,

विषयाः	पृष्ठाङ्काः।
एलाद्वयम्	४६
गुडत्वचम्	४७
तेजपत्रम्	,,
नागकेशरम्	,,
त्रिजात-चतुर्जातम्	,,
तालीशपत्रम्	,,
सरलः	,,
श्रीवासः	,,
बालकम्	४८
जटामांसीद्वयम्	,,
उशीरम्	,,
रेणुका	,,
प्रियङ्गुः	,,
परिपेलम्	,,
शैलेयम्	,,
लामज्जकम्	४९
कुन्दुरुः	,,
गुग्गुलुः	,,
शाला	,,
स्थौणेयम्	,,
चोरकः	५०
मुरा	,,
कर्चूरः	,,
शटी	,,
सटका	,,

विषयाः	पृष्ठाङ्काः ।	विषयाः	पृष्ठाङ्काः ।
ग्रन्थिपर्णः	५०	वासन्ती	५४
नलिका	,,	नैपालीद्वयम्	,,
पद्मकम्	,,	माधवी	,,
प्रपौण्डरीकम्	५१	चम्पकः	५५
तगरद्वयम्	,,	पुन्नागः	,,
गोरोचना	,,	वकुलः	,,
नखद्वयम्	,,	वुकः	,,
पत्तङ्गम्	,,	कुन्दः	,,
लाक्षाऽलक्तकः	,,	मुचुकुन्दः	,,
पर्पटो	५२	विचच्छिद्रः	,,
पद्मिनो केरविणो	,,	तिलकः	,,
पद्मचारिणो	,,	मणिरुकः	५६
कमलम्	,,	वन्धूकः	,,
रक्तोत्पलम्	,,	जपा-विलम्ब्या	,,
नीलोत्पलम्	,,	सिन्दूरी	,,
कुमुदम्	,,	तुलसो	,,
कह्लारम्	५३	मरुवकः	,,
किञ्जल्कः	,,	दमनः	,,
पद्मवीजम्	,,	वर्वरीवयम	,,
मृणाल शालुकम्	,,	अथ सुवर्णादिवर्गः ।	
जातीद्वयम्	,,	सुवर्णम्	५७
मल्लिका	,,	रूप्यकम्	,,
यूथिकाद्वयम्	५४	ताम्रम्	५८
कुब्जकाद्वयम्	,,	कांस्यम्	,,
केतकीद्वयम्	,,	पीतलोहम्	,,

विषयाः	पृष्ठाङ्काः	विषयाः	पृष्ठाङ्काः ।
रङ्गम्	५८	सूर्य्यकान्त	६२
यशदम्	,,	चन्द्रकान्त	६३
सीसम्	,,	गोमेदम्	,,
लोहम्	५९	हीरकम्	,,
पारद	,,	नील वैदूर्य्यम्	,,
अभ्रकम्	,,	मरकतम्	,,
गन्धक	,,	मुक्तास्फोट	,,
सुवर्णमाक्षिकम्	,,	शङ्ख	,,
मन शिला	६०	लघुशङ्ख कपर्दक	,,
हरितालम्	,,	खटोदयम्	६४
गैरिकम्	,,	पङ्क बालुका	,,
तुत्थद्वयम्	,,	शुक्ति	,,
कासीसद्वयम्	,,	काच	,,
हिङ्गुलम्	६१	**अथ वटादिवर्गः ।**	
सिन्दुरम्	,,	वट	६५
सौवीर सौराष्ट्रनम्	,,	पिप्पल	,,
रसाञ्जनम्	,,	पारिभ	,,
पुष्पाञ्जनम्	,,	उदुम्बर	,,
शिलाजतु	,,	प्लक्ष	,,
गोलद्वयम्	६२	पञ्चवीरद्वय	,,
स्फटिकाख्या तुवरी	,,	नन्दीवृक्ष	६६
समुद्रफेन	,,	कदम्बद्वयम्	,,
प्रवालम्	,,	ककुभ	,,
मौक्तिकम्	,,	गिरीष	,,
माणिक्यम्	,,	भार्त्तगल	,,

विषयाः	पृष्ठाङ्काः	विषयाः	पृष्ठाङ्काः ।
वेतसद्वयम्	६६	शाल्मली	७१
इङ्गलः	६७	तूणिः	”
शेषान्तकः	”	सप्तपर्णः	”
पीलुः	”	हारिद्रकः	”
शाकः	”	कारञ्जचतुष्टयम्	”
सालः	”	शमीद्वयम्	७२
तमालः	६८	टिण्टिनिका	”
खदिरद्वयम्	”	अरिष्टकः	”
हरिमेदः	”	शिंशपाद्वयम्	”
बर्बूरः	”	अगस्त्यः	”
बीजकः	”	**अथ द्राक्षादिवर्गः ।**	
तिनिशः	”		
भूर्जपत्रम्	६९	द्राक्षा	७३
पलाशः	”	आम्रः	”
धवः	”	जम्बूवयम्	७४
धन्वनः	”	नारिकेलः	”
सर्जः	”	खर्जूरिका	”
श्लाघोटः	”	सलेमानी	७५
वरुणः	”	कदली	”
जिङ्गिनी	७०	दाडिमी	”
शल्लकी	”	कतकः	”
क्षुद्रः	”	बदरी	”
कटभरः	”	क्षीरी	७६
मुष्ककः	”	चारः	”
पारिभद्रः	”	परूषकः	”

विषया'	पृष्ठाङ्का ।
तिन्दुकद्वयम्	७६
किङ्किणी	७७
आरुकम्	,,
मधूकद्वयम्	,,
पनस	,,
लकुच	७८
ताल	,,
खर्बूजम्	,,
स्यन्दनकम्	,,
मेवम्	,,
अम्र फलम्	,,
अम्रतफलम्	७९
वादामम्	,,
पित्तद्वयम्	,,
एला	,,
आलुकम्	,,
अम्लोरम्	,,
आचोटम्	,,
पालेवतद्वयम्	८०
तूतम्	,,
गङ्गेरुकम्	,,
तुम्बरम्	,,
बीजपूरम्	,,
मधुककंटी	८१
नारङ्गद्वयम्	,,

विषयाः	पृष्ठाङ्काः ।
जम्बीरम्	८१
अम्लवेतसम्	,,
सारात्मकः	,,
निम्बूकम्	,,
कर्मरङ्गम्	८२
अम्लिका	,,
तिन्तिडीकम्	,,
करमर्दम्	,,
कपित्थम्	,,
कपित्थपची	,,
आम्रातकम्	,,
राजाम्र	८३
पञ्चाम्लम्	,,
कोशाम्रः	,,
पूगोफलम्	,,
ताम्बूलम्	८४
लवलोफलम्	,,
अथ कुष्माण्डादिवर्गः ।	
शाकनिरूपणम्	८५
कुष्माण्डको	,,
ककंटी	,,
कालिङ्गम्	८६
मिष्टतुम्बी	,,
कटतुम्बी	,,

विषया	पृष्ठाङ्क ।
वपुषम्	८६
चिर्भटम्	,,
वालुकम्	,,
शीर्षन्तम्	,,
कोशातकीद्वयम्	८७
इक्ष्वाकीद्वयम्	,,
विम्बी	,,
कारवेल्लम्	८८
कर्कोटकीद्वयम्	,
डोडिका	,,
डिण्डिश	,,
कोलशिम्बी	,,
कृशिम्बी	,
वास्तुक	,,
जीवन्त	८९
चिल्ली	,,
कालशाकद्वयम्	,
तण्डुलीयद्वयम्	,,
शोग	,
पटोल	,,
पर्षुडद्वयम्	९०
पालक्या	,,
पोतकी	,
लोणी कुटोर	,
सर्षपशाक तिलपर्णी	,

विषया	पृष्ठाङ्क ।
सूक्ष्मपत्र	९१
टुटुक	,,
वस्तिज	,,
शोतवार नाडी	,,
सार्षप कौसुम्भम्	,,
चणकम्	,,
कलायम	,,
चाङ्गेरी	,,
कासमर्द गुञ्जन	९२
मूलकम्	,,
करीर	,
शोभाञ्जनद्वयम्	,,
लशुनद्वयम्	९३
पलाण्डु	,,
गृरण्डद्वयम्	,,
ग्रन्थिगृञ्जलिका	,,
वाराही	९४
मुसली	,,
कशेरुका	,,
भूच्छत्रम्	,,
स्थूलकन्द मानकन्द	,,
कसेरुद्वय गृञ्जाट	,,
पिण्डालुकादि	,,
केयूरम्	९५

विषयाः	पृष्ठाङ्काः ।
अथ पानीयादिवर्गः ।	
पानीयनामानि	९५
साधारण दुग्धनामानि	९८
गोदुग्धम्	१००
अजादुग्धम्	»
आविकदुग्धम्	"
महिषीदुग्धम्	"
नारीदुग्धम्	»
हस्तिनीदुग्धम्	"
औष्ट्रदुग्धम्	१०१
आश्वदुग्धम्	"
दधिनाम	१०२
तक्रवर्गः	१०४
नवनीतवर्गः	१०५
घृतम्	"
तिलतैलम्	१०६
एरण्डतैलम्	"
कटुतैलम्	"
निम्बतैलम्	१०७
अतसीतैलम्	"
सार्षपतैलम्	"
कुसुम्भतैलम्	"
ज्योतिष्मतीतैलम्	"
नारिकेलतैलम्	"

विषयाः	पृष्ठाङ्काः ।
शिंशपातैलम्	१०७
भल्लातकतैलम्	"
पालाश-माधूक-पाटलातैलम्	१०८
वपुषादितैलम्	"
एकैषिजतैलम्	"
यवतिक्तोऽवतैलम्	"
आम्रतैलम्	"
स्नेहवर्गः	"
मद्यम्	१०८
काञ्जिकम्	११२
मूत्रगुणाः	"
अश्वमूत्रम्	"
अजमूत्रम्	११३
आविकमूत्रम्	"
गर्दभमूत्रम्	"
उष्ट्रमूत्रम्	"
नरमूत्रादि	"
अथ इक्षुक्षादिवर्गः ।	
इक्षुः	११३
इक्षुरसः	११४
मत्स्याण्डी	"
सितोपला	"
खण्डम्	"
मधुशर्करा	११५

विषया	पृष्ठाङ्का ।
मांसरस सौरस	१३६
खानिष्कम्	,,
क्वथितम्	१३७
पर्पटा	,,
पिण्याक	,,
पललम्	,,
अथ मांसवर्गः ।	
हस्ति	१३७
घोटक	१३८
अश्वतरी	,,
उष्ट्रः	,,
गर्दभ	,,
महिष	,,
भल्लूक गण्डक	१३९
सिंह शार्दूल	,,
व्याघ्र	,,
चित्रक	
हरक तरक्षादि	,,
कुक्कुर	,,
शूकर	,,
छागी	,,
मेष मेढ पुरुष	१४०
हरिण	,,
एण	,,

विषया	पृष्ठाङ्का ।
गोकर्ण अश्वर	१४०
गवय	,,
कस्तूरी मुण्डिनी	,,
क्षतमालादि	१४१
रुरु न्यङ्कु	,,
शश	,,
महाशृग	,,
शल्लक	,,
विडाल नकुल	,,
वानर	१४२
शृगाल	,,
मूषक	,,
पक्षी	,,
तित्तिरि	,,
वर्त्तीक	,,
लावचतुष्टयम्	,,
घटक	१४३
वार्त्तिक	,,
पारावत कपोतादि	,,
मयूर	,,
कुक्कुट	१४४
शुक	,,
कोकिल	,,
काक भाष	,,
वध्र	,,

विषया'	पृष्ठाङ्का	विषया'	पृष्ठाङ्का ।
ैष	१४४	स्वभावतोहितानि	१५१
ऐक्ष्वाक कङ्क	१४५	दन्तधावनगुणा	,,
ऐक .	,,	मुखप्रक्षालनगुणा	,,
ओडि	,,	पादप्रक्षालनगुणा	,,
कारेटु	,,	गण्डूषगुणा	,,
खद्योट चाष	,,	अञ्जनगुणा	१५२
चातक	,,	व्यायामगुणा	,,
भारद्वाज	,,	मर्दन कर्त्तनगुणा	,,
श्येन चिरि	१४६	अभ्यङ्गगुणा	,,
उलूक	,,	उद्वर्त्तनगुणा	१५३
चकोर	,,	स्नानगुणा	,,
क्रौञ्चादि	,,	अनुलेपादिधारणगुणा	,,
रोहितादि मत्स्य	,,	उष्णोषधारणगुणा	१५४
क्षुद्रमत्स्य मत्स्याण्डम्	१४७	छत्रधारणगुणा	,,
शिशुमार मकर	,,	व्यजनधारणगुणा	,,
कच्छप	,,	यष्टिधारणगुणा	,,
मण्डूक	१४८	अवस्थानगुणा	,,
कर्कट	,,	शय्यागुणा	,,
सर्पभेदा	,,	आतपच्छायासेवनगुणा	,,
गोधा	,,	अग्न्यादिसेवनगुणा	,,
सद्योहतादिमासम्	,,	ज्योत्स्नादिसेवनगुणा	१५५
अथ मिश्रवर्गः ।		प्रवातसेवनगुणा	,,
		आयुष्यकर्माणि	,,
अनुपानादि	१५०	स्वभावतो वर्जनीयानि	,,
क्षीरपानम्	,,	अम्लादि गुणा	,,

विषयाः -	पृष्ठाङ्काः।
यवासशर्करा	११५
पुष्पसिताशर्करा	”
फाणितम्	”
मधूकम्	”
गुड़ः	”
मधु	”

अथ धान्यादिवर्गः।

धान्यादि	११७
गोधूमः	११८
यवः	”
शिम्बी	११९
मद्गः	”
माषः	”
राजमाषः	१२०
मकुष्ठः	”
निष्पावः	”
सतीनः	”
कलायः	”
चणकः	”
मसूरिः	”
कुलत्थः	१२१
तिलः	”
तुम्बरी	”
अतसी	”

विषयाः	पृष्ठाङ्काः
कुसुम्भम्	१२१
सर्षपः	१२२
शणः	”
क्षुद्रधान्यम्	”
नीवारः	१२३
यवनालः	”
गवेधुका	”

अथ कृतान्नवर्गः।

आहारनामानि	१२४
भक्तम्	”
यवागूः	”
विलेपी	१२५
पेया	”
मण्डः	”
याव्यमण्ड-लाजमण्डः	”
अष्टगुणमण्डः	”
मुद्गयूषः	”
दाडिमामलकयूषः	”
मुद्गामलकयूषः	१२६
कुलत्थयूषः	”
सूप्यमूलकयूषः	”
चणकयूषः	”
मकुष्ठयूषः	”
कृताकृतयूषः	”

विषया	पृष्ठाङ्का ।
मासरस सौरस	१३६
क्षानिष्कम्	,,
क्वथितम्	१३७
घण्टा	,,
पिण्याक	,,
पललम्	,,
अथ मांसवर्गः ।	
हस्ति	१३७
घोटक	१३८
अश्वतरी	,,
उष्ट्रः	,,
गर्दभ	,,
महिष	,,
भल्लूक गण्डक	१३९
सिंह शार्दूल	,,
व्याघ्र	,,
चित्रक	,,
वृक तरक्षादि	,,
कुक्कुर	,,
शूकर	,,
छागो	,,
मेष मेद पुच्छ	१४०
हरिण	,,
एण	,,

विषया	पृष्ठाङ्का ।
गोकर्ण-गवयः	१४०
गवय	,,
कस्तूरी मुण्डिनी	,,
क्षतमालादि	१४१
रुरु न्यङ्कु	,,
प्रसृ	,,
महामृगः	,,
शल्लकः	,,
बिडाल नकुल	,,
वानर	१४२
शृगाल	,,
मूषक	,,
पक्षी	,,
तित्तिरि	,,
वर्त्तीक.	,,
लावचतुष्टयम्	,,
चटक	१४३
वार्त्तिक	,,
पारावत कपोतादि	,,
मयूर	,,
कुक्कुट	१४४
शुक	,,
कोकिल	,,
काक भास	,,
श्येनः	,,

विषया'	पृष्ठाङ्का
हंस	१४४
चक्रवाक कङ्क	१४५
बक	,,
बाडि	,,
करेटु	,,
खञ्जरीट पाप	,,
चातक	,,
भारद्वाज	,,
श्येन चिरि	१४६
उलूक	,,
चकोर	,,
कौञ्चादि	,,
रोहितादि मत्स्य	,,
क्षुद्रमत्स्य मत्स्याण्डम्	१४७
शिशुमार मकर	,,
कच्छप	,,
मण्डूक	१४८
कर्कट	,,
सर्पभेदा	,,
गोधा	,,
सर्पोष्टतादिमांसम्	,,

अथ मिश्रवर्गः ।

घृतपालादि	१५०
क्षीरपायसम्	,,

विषया'	पृष्ठाङ्का ।
स्वभावतोहितानि	१५१
दन्तधावनगुणा	,,
मुखप्रक्षालनगुणा'	,,
पादप्रक्षालनगुणा	,,
गण्डूषगुणा	,,
अञ्जनगुणा'	१५२
व्यायामगुणा	,,
मर्दन कर्त्तनगुणा	,,
अभ्यङ्गगुणा	,,
उद्वर्त्तनगुणा	१५३
स्नानगुणा	,,
अनुलेपादिधारणगुणा	,,
उष्णोपधारणगुणा	१५४
छत्रधारणगुणा	,,
व्यजनधारणगुणा	,,
यष्टिधारणगुणा	,,
अवस्थानगुणा	,,
शय्यागुणा	,,
आतपच्छायासेवनगुणा	,,
अग्न्यादिसेवनगुणा	,,
ज्योत्स्नादिसेवनगुणा	१५५
प्रवातसेवनगुणा	,,
आयुष्यकर्माणि	,,
स्वभावतो वर्जनीयानि	,,
अपादि गुणा	,,

विषयाः	पृष्ठाङ्काः।
लङ्घनगुणा	१५५
पूर्वादिक्रमेण वायुगुणाः	,,
मधुररस गुणा	१५६
अम्लरस गुणा	,,
कटुरस गुणा	,,
तिक्तरस गुणा	,,
लवणरस गुणा	१५७

विषयाः	पृष्ठाङ्काः।
कषायरस गुणाः	१५७
वमन गुणा.	,,
विरेचन गुणा	,,
वस्तिकर्मादि गुणाः	,,
रक्तमोक्षण गुणा	,,
ऋतुचर्य्या	१५८
ग्रन्थकृत् परिचय	१५८

सूचीपत्र सम्पूर्णम्।

—•—

सर्वौषधिनामगुणानाम्
निघण्टुः ।

मङ्गलाचरणम् ।

यौजं सुतीनां सुघनं सेनीनां
लोयं जड़ानां मद्दादिकानाम् ।
पाश्वेयमस्लं भवपातकानां
किञ्चिन्मद्दः श्यामलमाश्रयामि ॥ १ ॥
लुब्धा यपोलमधुवारिमधुव्रतालो
कुम्भस्थलो मधुविभूषणलोहितार्द्रो ।
माणिक्यमौलीरिव राजति यस्य मौलौ
पिघ्नं स धूनयतु विघ्नपतिः सदा नः ॥ २ ॥
यो ध्वान्तमस्तिगभीरपयोधिमध्या-
त्विष्कासयत्यगरणं भुवनं निमज्जत् ।
दत्वा जगत्प्रथितः स्वकरायलग्नं
पाश्वां स वो दिनकरः सफलीकरोतु ॥ ३ ॥
मिथ्यागमादिकृतदोषचयै न कोपा-
त्स्वस्मुर्वहिति उपद्रवमक्षभीमे ।
रोगाम्बुधौ भवजनस्य निमज्जतो यः
पोतः प्रयच्छतु शुभानि स काशिराजः ॥ ४ ॥
केचिन्नलि निघण्टवोऽतिलाघवः केचिन्मद्दान्तः परं
केचिद् दुर्गममानसाः कतिपये भाषाः स्वभावोज्झिताः ।
सम्पादानिमपुनं पातिविपुलः ख्यातादिमामा मतां
पोत्थे इत्यनुषाम्यिलोऽयमधुना धन्यो मया सद्धते ॥ ५ ॥

सर्वं कायेन संसाध्यं तस्यायुः स्थितिकारणम् ।
आयुर्वेदोपदेशस्तु कस्य न स्यात् फलावहः ॥ ६ ॥
तत्रापि पूर्वं ज्ञातव्या द्रव्यनामगुणागुणाः ।
अतस्तु एव वक्ष्यन्ते तज्ज्ञाने हि क्रियाक्रमः ॥ ७ ॥

अथ हरीतक्यादिनामगुणाः ।

हरस्य भवने जाता हरिता च स्वभावतः ।
हरयेत् सर्वरोगांश्च तेन प्रोक्ता हरीतकी ॥ ८ ॥
जीवन्ती पूतना पयादमृता विजयाभया ।
रोहिणी चेतकी सप्तभेदभिन्ना हरीतकी ॥ ९ ॥
जीवन्ती जीवनोद्योगात् पावनात् पूतनामृता ।
सुधावदमृता ज्ञेया विजया विजयप्रदा ॥ १० ॥
नृणामभयदा यस्मादभया तत् प्रकीर्त्तिता ।
रोहिणी तु गुणारोहाच्चेतनाच्चेतकी मता ॥ ११ ॥
जीवन्ती स्वर्णवर्णाभा पूतनास्थिमती मता ।
अमृता त्रिदला प्रोक्ता विजया तुम्बरूपिणी ॥ १२ ॥
पथ्याङ्गी त्वभया ज्ञेयामृता हृत्ता तु रोहिणी ।
वयङ्गी तु चेतकी ज्ञेया कर्म्म तासामथोच्यते ॥ १३ ॥
सर्वरोगेषु जीवन्ती प्रलेपे पूतना हिता ।
शुद्ध्यर्थममृता प्रोक्ता विजया सर्वरोगहृत् ॥ १४ ॥
अक्षिरोगेऽभया श्रेष्ठा रोहिणी व्रणरोहिणी ।
चेतकी चूर्णयोगे स्यात् साधैव प्रकीर्त्तिता ॥ १५ ॥
नवा स्निग्धा घना हृत्ता गुर्वी क्षिप्ता च वाम्भसि ।
निमज्जेत् सा प्रवरा स्यादोगघ्नीति गुणप्रदा ॥ १६ ॥
शीर्णाच्छिन्ना गुडनिभा किञ्चिदल्पा कषायणी ।
स्थूलत्वक् सरसा स्वल्पबीजा गुर्वी हरीतकी ॥ १७ ॥
चर्विता वर्द्धयत्यग्निं पेषिता मलशोधिनी ।

स्निग्धा सड्याहिगो पथ्या भृष्टा भोज्या विदोषनुत् ॥१८॥
योपे तुल्यगुडां सुमैन्धवयुतां मेघाग्निनद्धेऽम्बरे
तुल्यां शर्करया गरत्यमलया शुण्ठ्या तुपाराम्भसे।
पिप्पल्या गिरिरे वसन्तसमये क्षौद्रेण संयोजिता
राजन्! प्राप्य हरीतकीमिव रुजो नश्यन्ति ते मानवः ॥१८॥
गिवा हरीतकी पथ्या चेतकी विजया जया।
प्रपथ्या प्रमथा मोघा कायस्था प्राणदामृता ॥ २० ॥
जीवनीया हैमवती पूतना स्तनाभया।
वयस्था नन्दिनी क्षेया श्रेयसी रोहिणी तथा ॥ २१ ॥
हरीतकी पञ्चरसा लवणा तुवरोत्कटा।
कट्वोष्णा दीपनी मेध्या स्वादुपाका रसायनी ॥ २२ ॥
मरा बृष्यप्रदा हृद्या चक्षुष्या हृंहणी लघुः।
ग्रामक्कामप्रमेहार्शःकुष्ठगोफोदरान् क्रमीन् ॥ २३ ॥
वैस्वर्य्यपक्षणीदोषविबन्धविषमज्वरान्।
गुल्माध्मानव्रणक्लैदिक्लाक्कण्डूहृदामयान् ॥ २४ ॥
कामला गुल्मशानाहं प्लीहालं घापकर्षति।
मधुराम्लरसा यात कषायस्वादुभावतः।
पित्तं हन्ति कफं हन्ति षट्रसेन हरीतकी ॥ २५ ॥

अथ आमलकनामगुणाः।

धात्रीफलामृतफलामलक श्रीफल शिवम्।
तदाख्यौफल हृद्य विशेषाद्रक्तपित्तजित् ॥ २६ ॥
अम्लत्वात् पवन हन्ति पित्त माधुर्यशैत्यत।
कफं कषायगाढत्वात् तस्मात् किमधिक फलम् ॥२७॥

अथ विभीतकनामगुणाः।

विभीतक कर्षफलो मृदावाम. कफिष्टम.।
वातश्लेष्मी हृद्यजाम' सुवर्णस्निग्धपुष्पक. ॥ २८ ॥

विभीतकः स्वादुपाकः कषायः कफपित्तनुत् ।
उष्णवीर्य्यो हिमस्पर्शो भेदनः कासनाशनः ।
रूक्षो नेत्रहितः केश्यो मज्जा तोयदकारकः ॥२८॥

अथ त्रिफलानामगुणाः ।

हरीतक्यास्त्रयो भागा शिवा द्वादशभागिकाः ।
षड्भागाः स्युर्विभीतस्य त्रिफलेयं प्रकीर्त्तिता ॥३०॥
पित्तं माधुर्य्यशैत्यन्तु कफं रूक्षकषायनुत् ।
त्रिफलैतत्त्रयेण स्याद्वरा श्रेष्ठा फलोत्तमा ॥ ३१ ॥
त्रिफला कुष्ठमेहार्शःकफपित्तविनाशिनी ।
चक्षुष्या रोपणी हृद्या वयसः स्थापिनी परा ॥ ३२ ॥

अथ भृङ्गाचीनामगुणाः ।

भृङ्गावी बहुपत्री स्यादमृतामलका शिवा ।
भृङ्गात्रो वातश्लेष्मघ्ना कषाया मधुरा हिमा ।
पिपासाकासपित्तास्रश्रमिपाण्डुरुजापहा ॥ ३३ ॥

अथ प्राचीनामलकीनामगुणाः ।

प्राचीनामलको प्राची नागरं रक्षकं मतम् ।
तत्पक्वं पित्तकफहृत् उष्णं गुरुसमीरजित् ॥ ३४ ॥

अथ उत्पाटारूपकनामगुणाः ।

अरूषकेणावकाशा हृषा सिंहमुखी भिषग् ।
सिंहपर्णी हृषी वासा सिंहकोत्पाटरूपकः ॥ ३५ ॥
वासको वातश्लेष्मघ्नः कफपित्तास्रनाशनः ।
श्वासकासज्वरच्छर्दिमेहकुष्ठक्षयापहः ॥ ३६ ॥

अथ गुडूचीनामगुणाः ।

गुडूची कुण्डली छिन्ना वयस्यामृतवल्लरी ।
छिन्नोद्भवा छिन्नरुहामृता ज्वरविनाशिनी ॥ ३७ ॥
वत्सादनी चन्द्रहासा जीवन्ती चक्रलक्षणा ।

गुडूची कटुका मधौ स्वादुपाका रसायनी ॥ ३८ ॥
मंग्राहिणी कषायोष्णा वल्या तिक्ताग्निदीपनी ।
कामला कुष्ठवातास्रज्वरपित्तकफान् जयेत् ॥ ३९ ॥
घृतेन वातं सगुडा पित्तं सिताक्षा मधुना कफञ्च ।
पातालमूपं कटुतैलमिश्रा गुण्ठ्यामवातं शमयेद्गुडूची ॥४०॥

अथ बिल्वनामगुणाः ।

बिल्वः शलाटुः शैलूषो मालूरश्च सदाफलः ।
लक्ष्मीफलो गन्धगर्भः शाण्डिल्यः कण्टकी मतः ॥ ४१ ॥
बिल्वं वाहि कषायोष्णं कटुदीपनपाचनम् ।
हृद्यं वातं लघु स्निग्धं तिक्तं वातकफापहम् ॥४२॥
हृद्यं गुरु विदोषं स्याद् दुर्जरं पूतिमारुतम् ।
विटाहि विष्टम्भकरं मधुरं बद्धिमान्यलत् ।
बद्धपोकफयातामगुल्मानी बिल्वपेषिका ॥ ४३ ॥

अथ अग्निनामगुणाः ।

अग्निमन्थो मयः केतुरग्निर्वैजयन्तिका ।
अग्निमन्थः क्षयव्युष्टदौर्ग्योषः कफवातजित् ॥ ४४ ॥

अथ पाटलानामगुणाः ।

पाटला कामदूतिः स्यात् कुम्भिका फालगुन्तिका ।
ताम्रपुष्पाम्बुवासिनी ॥ ४५ ॥
अस्या फलिकया सैला कुम्भिका लघुपाटला ।
पाटलाकर्णिकोद्याना शादलट् वर्दिमालिनी ॥ ४६ ॥
वातघ्नमधुरं स्वादु तत्पुष्पं कफपित्तजित् ।
विषातिसारदाहघ्न फलं विद्यादविष्टगत् ॥ ४७ ॥

अथ काश्मरीनामगुणाः ।

काश्मरी मधुपर्णी स्यादग्निमन्थी लघुपर्णिका ।
श्यामा भद्रा शिवा काश्मर्यां भद्रपर्णिका ॥४८॥

काश्मरी ज्वरशूलघ्नी वीर्योष्णा मधुरा गुरुः ।
तत्पुष्पं वातलं ग्राहि पित्तासृक्प्रदरापहम् ॥४८॥
फलं रसायनं केश्यं हृद्यं शुक्रलं गुरु ।
वातपित्तक्षयक्षारक्तशूलविबन्धनुत् ॥ ५० ॥

अथ श्योनाकनामगुणाः ।

श्योनाकः पृथुशिम्बिः स्यात् शुक्रनाम्नः कुटन्नटः ।
भूतवृक्षश्च कट्वङ्गः टुण्टुकः शलको रलुः ।
मयूरजङ्घो भल्लूकः प्रियजोवः वाटम्भरः ॥ ५१ ॥
श्योनाको दीपनः पाके कटुस्तुवरको हिमः ।
ग्राही तिक्तोऽनिलश्लेष्मपित्तकासविनाशनः ॥ ५२ ॥
टुण्टुकस्य फलं बाले रूक्षं वातकफापहम् ।
हृद्यं कषायमधुरं लघु रोचनदीपनम् ॥ ५३ ॥

अथ महत्पञ्चमूलनामगुणाः ।

विल्वादिभिः पञ्चभिरैभिरेतत्स्यात्पञ्चमूलं महदग्निकारि ।
लघूष्णतिक्तं रसतः कषायं मेदःकफश्वासमरीरहारि ॥ ५४ ॥

अथ गोक्षुरनामगुणाः ।

त्रिकण्टकः कण्टफलो गोक्षुरः स्वादुकण्टकः ।
गोकण्टको भक्ष्यटक त्रिकण्टो व्याघ्रदृक्षकः ॥ ५५ ॥
श्वदंष्ट्रा व्यूलमूलाट पडङ्ग क्षुरशल्यिकः ।
गोक्षुरः शीतलः स्वादुर्बलकृद् वस्तिशोधनः ।
प्रमेहश्वासकासाश्मकृच्छ्रदोषवातजित् ॥ ५६ ॥

अथ शालपर्णीनामगुणाः ।

शालपर्णी ध्रुवा सौम्या त्रिपर्णी पोतनी स्थिरा ।
पिण्डारिगन्धातिगन्धा दीर्घमूलाऽगुमत्यपि ॥ ५७ ॥
शालपर्णी गुरुः स्निग्धा दाहज्वरश्वासातिसारनुत् ।
शोषदोषक्षयहरा हृद्या बल्या रसायनी ॥ ५८ ॥

अथ पृश्निपर्णीनामगुणा ।

पृश्निपर्णी क्रोष्टुपुच्छा धावनी फलमारुहा ।
शृगालबृन्ताछिन्ना पृथक्पर्णी च पर्णिका ॥ ५८ ॥
पृश्निपर्णी लघुर्ग्राही मधुरोष्णा विनाशयेत् ।
रक्तातिसारदाहज्वरदोषत्रयवमिज्वरान् ॥ ५९ ॥

अथ स्थूलभण्टाकीनामगुणाः ।

वृक्षती स्थूलभण्टाकी विषघ्ना च मदोत्कटा ।
म्लाकी मधुरा मिष्टा कण्ठ्या गुल्मकफापहा ॥ ६० ॥
वृक्षती वातिनी हृद्या पाचनी कफवातजित् ।
उष्णा कुष्ठज्वरानाहगुल्मकासाग्निमान्द्यजित् ॥ ६१ ॥

अथ क्षेत्रकण्टकादीनामगुणा ।

कण्टारिका कण्टकिनी कण्टकारी निदिग्धिका ।
दुःस्पर्शा धावनी क्षुद्रा व्याघ्री दुष्प्रदर्षिणी ॥ ६२ ॥
गिरा क्षुद्रा चन्द्रदाग्रा लक्ष्मणा श्वेतदूतिका ।
कण्टकारी सरा तिक्ता कटुका दीपनी लघु ॥ ६३ ॥
कफोष्णा पाचनी कासश्वासज्वरकफानिलान् ।
निहन्ति पीनस पार्श्वरुक्शूलहृद्रोगमयान् ।
सदन् प्रोक्ता गिरा क्षुद्रा विशेषात् गर्भकारिणी ॥ ६५ ॥

अथ स्वयंगुप्तमूलनामगुणा ।

स्वयंगुप्त पञ्चमूल्यां पञ्चभिर्मौक्तिकादिभिः ।
कथितं विषानिलहरं मातुलुङ्गसमं गुणैः ॥ ६६ ॥

अथ दशमूलनामगुणा ।

पलाशैः पञ्चमूलाभ्यां दशमूलमुदाहृतम् ।
दीपनीयगणश्लक्ष्णैर्वीरतरुभिरन्वितम् ।
सन्धानदीप्यनालाढ्यविषार्तिश्वासनुत् ॥ ६७ ॥

अथ ऋद्धिवृद्धिनामगुणाः ।

ऋद्धिः सुखं युगं लक्ष्मीः सिद्धिः सर्वजनप्रिया ।
ऋषिदृष्टा रथाङ्गं स्यान्माङ्गल्यं भावणी वसूः ॥
योग्यं युग्या तुष्टिरागिर्बृद्धिरप्येतदाह्वया ॥ ६८ ॥
ऋद्धिर्बल्या त्रिदोषघ्नी शुक्रला मधुरा गुरुः ।
हृद्विर्गभ्रंशदा शीता हृद्या कासक्षयास्रनुत् ॥ ६९ ॥

अथ काकोलीक्षीरकाकोलीनामगुणाः ।

काकोली मधुरा वीरा कायस्था क्षीरशुक्लिका ।
ध्वांक्षोली वायसोली स्यात् स्वादुमांसी पयस्विनी ॥७०॥
द्वितीया क्षीरकाकोली सुराङ्गा क्षीरिणी मता ।
पोवरी सट्टगस्कन्धः स क्षीरः स सुगन्धकः ।
क्षीरकाकोलिकाख्यात पित्तदोषज्वरापहः ॥ ७१ ॥
काकोलीयुगलं शीतं शुक्रलं मधुरं गुरु ।
जयेत्समीरदाहास्रपित्तशोषट्पाज्वरान् ॥७२॥

अथ मेदामहामेदानामगुणाः ।

मेदा ज्ञेया शालपर्णी ह्रस्वा मेदोद्भवा धरा ।
महामेदा मणिच्छिद्रा वदन्ता दैवता मणिः ॥७३॥
मेदायुग गुरु स्वादु ह्रस्वं स्नन्यकफापहम् ।
ह्रस्वं शीतल रक्त पित्तक्षयसमीरनुत् ॥७४॥

अथ जीवकर्षभकनामगुणाः ।

जीवको मधुरः स्निग्धो ह्रस्वाङ्गः कूर्चशीर्षकः ।
ऋषभो वीर इन्द्राक्षी विषाणी दुर्धरो ह्रषः ॥७५॥
जीवकर्षभकौ वर्ण्यौ शीतौ शुक्रकफप्रदौ ।
दहतः पित्तदाहास्रकासवातक्षयामयान् ॥७६॥

अथ अष्टवर्गनामगुणाः ।

अष्टवर्गोऽष्टभिर्द्रव्यैरेतैः शीतोऽतिशुक्रल ।

हृद्गन्धः पित्तदाहास्रगोषघ्नस्तन्यगर्भकृत् ॥७७॥

अथ जीवन्तीनामगुणाः ।

जीवन्ती जीवनी जीवा जीवनीया यशस्करी ।
शाकश्रेष्ठा जीवभद्रा माङ्गल्या जीवयर्द्धनी ॥७८॥
जीवन्ती शीतला स्वादुः स्निग्धा दोषत्रयापहा ।
रसायनी बलकरी चक्षुष्या वातिनी लघुः ॥७९॥

अथ मधुयष्टीनामगुणाः ।

मधुयष्टी क्लीतनकं यष्टी मधु मधूलिका ।
यष्ट्याह्वं मधुकं यष्टिमधुकं जलजा मधुः ।
मधुयष्टी गुरुः शीता वृष्या वृष्ट्यर्दिपित्तजित् ॥८०॥

अथ माषपर्णीमुद्गपर्णीनामगुणाः ।

माषपर्णी क्षुद्रसहा काम्बोजी हयपुच्छिका ।
मांसमाषा सिंहमुखी व्याघ्रमाषा महामहा ॥८१॥
मुद्गपर्णी क्षुद्रमहा मृग्येपर्णी कुरङ्गिणी ।
वनजा रिङ्गिणी गिम्बी सिंही मार्जारगन्धिका ॥८२॥
माषपर्णी हिमा तिक्ता कषा गुर्वनिलापहा ।
मधुरा वातिनी शोषवातपित्तज्वरापहा ।
मद्गपर्ण्यमुद्गपर्णी दृष्टदोषगर्भोद्भवा लघुः ॥८३॥

अथ जीवर्षभनामगुणाः ।

जीवन्ती मृग्येपर्णीयुक् काकोल्यो जीवकर्षभौ ।
ऋद्धिवृद्धी मधुरौ जीवर्षभगणौ गुरू ॥८४॥
गुरुस्तद्वद् हृद्गन्धः शीतः स्नाय्यर्शकफप्रदः ।
रक्तपित्तवमीशोषज्वरदाहश्रमापहः ॥८५॥

अथ वराङ्गकेरुवारुनामगुणाः ।

वरार्ङ्गी दीर्घदण्डः स्यात्केरुको वर्षमानक. ।
पिण्डः पद्माङ्गुली श्यामः पुष्पी गन्धर्वदण्डक ॥८६॥

रक्तैरण्डो हस्तिकर्णो व्याघ्रो व्याघ्रतरो लघु ।
उत्तानपत्र उरुवु वातारिर्वो च चुञ्चुला ॥८७॥
एरण्ड युग्म मधुरमुष्ण गुरु विनाशयेत् ।
शूलगोथकटीवस्तिशिर पीडोदरज्वरान् ॥८८॥
ब्रध्नश्वासकफानाहकासकुष्ठाममारुतान् ।
तत्फल भेदन स्वादु क्षारमुष्ण समीरजित् ॥८९॥

अथ काष्ठसारिवाक्षुद्रसारिवानामगुणा ।

शारिवा शारदास्फोता गोपकन्या प्रतानिका ।
गोपाङ्गना गोपवल्ली लताह्वा काष्ठशारिवा ॥९०॥
शारिकन्या क्षुद्रमूली भद्रा चन्दनशारिवा ।
भद्रा चन्दनगोपा च चन्दना क्षुद्रवल्लयपि ॥९१॥
सारिवायुगल स्वादु स्निग्ध शुक्रकर गुरु ।
अग्निमान्द्यार्शश्छर्द्यास्रवमिकासटपापहम् ।
दोषत्रयास्रप्रदरज्वरातीसारनाशनम् ॥ ९२ ॥

अथ यवासधन्वयवासनामगुणा ।

यासो मरुद्भवोऽनन्तो दीर्घमूलो यवासक ।
वालपत्र ससुद्रान्तो दूरमूलोऽतिकण्टक ॥९३॥
धन्वयासस्साम्रमूली दु स्पर्शा स्याद् दुरालभा ।
यासक' कच्छुरा चास्ममूलो धन्वयवासय' ॥९४॥
यास स्वादुरसस्तिक्तो हिम पित्तहरो लघु ।
हन्ति रक्तकफभ्रान्तीस्तद्वद्धन्वयवासक ॥ ९५ ॥

अथ मुण्डीनामगुणा ।

मुण्डी भिक्षु परिव्राजी पावनी स्यात् तपोधना ।
श्यामा श्रीमती मुण्डी तिक्ता श्रावणशीर्षका ॥९६॥
मुण्डी तिक्ता कटु पाके वीर्योष्णा मधुरा लघु ।
मेध्या गण्डापचीकुष्ठकृमियोन्यर्तिपाण्डुजित् ॥९७॥

अथ महामुण्डीभूमिकदम्बनामगुणाः ।

महामुण्डी लोमनीया छिन्नपत्रीनिका स्मृता ।
भूतघ्नः कुलहलो लम्बुशालूकदम्बकः ।
कदम्बपुष्पमुण्डीवत् गुणैर्भूमिकदम्बकः ॥९८॥

अथ अपामार्गनामगुणाः ।

अपामार्गस्तु गिरिरी किणही खरमञ्जरी ।
अधःशल्यः शैखिरिकः प्रत्यक्पुष्पी मयूरका ॥ ९९ ॥
अपामार्गः सरस्तीक्ष्णो दीपनः कफवातजित् ।
निहन्ति दद्रुसिध्मार्शं कण्डूगुल्मोदरारुचीः ॥१००॥

अथ रक्तापामार्गनामगुणाः ।

धन्यो रक्तो हस्तफली वर्गिरः कपिपिप्पली ।
अपामार्गोऽरुणो यातविट्घ्नो कफनाशनः ।
कटुः पूर्वगुणे कषाम्लत्वं रक्तपित्तनुत् ॥१०१॥

अथ काम्पिल्यनामगुणाः ।

काम्पिल्लो रेचनो रक्तचूर्णको रक्तगोधनः ।
लोहितो रक्तगमनो रेचो रञ्जनको मतः ॥१०२॥
काम्पिल्लः कफपित्तामकृमिगुल्मोदरप्रणुत् ।
हन्ति रेचो कटूष्णश्च तत्फलं वाहि शीतलम् ॥१०३॥

अथ दन्तीनामगुणाः ।

दन्ती गुप्तफला नागदन्ती शीघ्रानुकुलकः ।
उपचित्रानुकूर्मी व्याघ्रदन्तीदुरत्यदा ॥१०४॥
वातघ्नी हृद्यरेचन्या दन्ती मर्मगदे मता ।
मृदुरुष्णा सुतीक्ष्णा च बलकृद्वह्निदा च कफिका ॥१०५॥
दन्तीद्वयं गरे पाकरक्तयोः कटु दीपनम् ।
तीक्ष्णोष्णं हन्ति विषाग्निकफगोदोषकृमीन् ॥१०६॥

अथ जयपालनामगुणाः ।

जयपाली दन्तीबीजं ख्यातं तत् तिक्तिरीफलम् ।
जयपाली गुरुस्निग्धो रेचो पित्तकफापहः ॥१०७॥

अथ श्वेतविहल्लतानामगुणाः ।

विहत् क्षुभोऽरुणा वत्सभक्षी कूटरवाहिनी ।
सर्वानुभूतिस्विहता त्रिपुटा सरलासिता ॥१०८॥
विहत्तिक्ता सरा रूक्षा स्वादुरुष्णा समीरहृत् ।
कटुः पाके ज्वरश्लेष्मपित्तगोफोदरापहा ॥१०९॥

अथ कृष्णविहल्लतानामगुणाः ।

विहत्काला कालमेषी कालपर्ण्यर्द्धचन्द्रिका ।
सर्वेनाख्यामालिविका मधुरा विदलान्विता ॥११०॥
विहत्काला हीनगुणा तस्यास्तीव्रविरेचिनी ।
मूर्च्छादाहमदभ्रान्तिवान्तिकार्मणकारिणी ॥१११॥

अथ इन्द्रवारुणीद्वयनामगुणाः ।

इन्द्रवारुण्यधेन्द्राह्वं हयभाची गवादनी ।
ऐन्द्रवारुः क्षुद्रफला विषालेन्द्री हयादनी ॥११२॥
अन्येन्द्रवारुणी चित्रफला चित्रमहाफला ।
आमरक्षा नागदन्ती सुपुषी गजचिर्भटी ॥११३॥
श्वेतपुष्पी मृगाक्षी च तथा पक्षसुरा मता ।
मरुद्भवा क्षमिगुहा चित्रदेवी च कीर्त्तिता ॥११४॥
ऐन्द्रवारुद्वय तिक्त कटुपाके सरं लघु ।
वीर्योष्णं कामलापित्तकफश्लीहोदरापहम् ॥११५॥

अथ आरग्वधनामगुणाः ।

आरग्वधो राजवृक्षः शम्याकः क्षृतमालकः ।
व्याधिघातः कर्णिकारः प्रपञ्चयतुरङ्गुलः ॥११६॥
आरोग्यशिम्बी स्वर्णाटः कर्णी दीर्घफलो मतः ।

कुण्डली हिमपुष्पा च कलिख्यातो नृपद्रुमः ॥११७॥
स्वर्णशेफालिका श्यामा कुष्ठसूदननाम तत्।
स्वर्णश्यामा पित्तला च सुवर्णद्रुम ईरितः ॥११८॥
भारद्वधो गुरुः स्वादुः शीतलो मृदुरेचनः।
ज्वरकुष्ठरोगपित्तास्रवातोदावर्त्तशूलजित् ॥ ११९ ॥
तत्पुष्पं वातलं ग्राहि तिक्तं पित्तकफापहम्।
तन्मज्जा मधुरः पाके तिक्तः पित्तसमीरजित् ॥ १२० ॥

अथ नीलिनीनामगुणाः।

नीलिनी नीलिका ग्राम्या श्रीफला भारवाहिनी।
रञ्जनी कलिकामेला तूणी रूक्षा विशोधिनी ॥ १२१ ॥
नीलिनी रेचनी तिक्ता कोष्ठ्या मोहभ्रमापहा।
उष्णा हन्त्युदरश्लीहवातपित्तकफानिलान् ॥ १२२ ॥

अथ कटुकीनामगुणाः।

कटुकी रोहिणी तिक्ता चक्राङ्गी कटुरोहिणी।
मत्स्यपित्ता पाण्डुरुहा कृष्णभेदा द्विजाङ्घिका।
अशोका रोहिणी मत्स्या सकुला सकुलादिनी ॥ १२३ ॥
कटुकी कटुपाके च तिक्ता रूक्षा सरा लघुः।
हिमा हन्ति कृमिश्वासदाहपित्तकफज्वरान् ॥ १२४ ॥

अथ अङ्कोलकनामगुणाः।

अङ्कोलकस्ताम्रफलः पीतसारो निकोचकः।
गुल्मस्नेहो विरेची स्यात् भूपितो दीर्घकीलकः ॥ १२५ ॥
अङ्कोलकः कटुस्निग्धतीक्ष्णोष्णस्तुवरो लघुः।
रेचनः कृमिशूलामशोफश्लेष्मविषापहः ॥ १२६ ॥
तत्फलं शीतलं स्वादु श्लेष्मलं हृंहणं गुरु।
बल्यं विरेचनं वातपित्तदाहक्षयास्रजित् ॥ १२७ ॥

अथ सेडुण्डनामगुणाः ।

सेडुण्डो वज्रसुण्डस्तु गारुडीरो वज्रकण्टकः ।
क्षुद्रोऽमल दुग्धोऽसिपत्रो वज्री महातरुः ॥ १२८ ॥
सेडुण्डो रेचनस्तीक्ष्णो दीपनो कटुको गुरुः ।
शूलामाष्ठीलिकाध्मानगुल्मशोफोदरानिलान् ।
हन्ति कृमीविषप्लीहकुष्ठोन्मादाश्मपाण्डुताः ॥ १२९ ॥

अथ निम्बनामगुणाः ।

निम्बो नियमनो नेतारिष्टः स्यात्पारिभद्रकः ।
सुतिक्तः सर्वतोभद्रः पिचुमन्दः प्रभद्रकः ॥ १३० ॥
कुठहा देवदत्तश्च रविसन्निभसूर्यकः ।
निम्बः शीतो लघुः ग्राही कटुपाकोऽग्निवातजित् ॥१३१॥
व्रणपित्तकफच्छर्दिकुष्ठकृच्छ्रास्रमेहनुत् ।
निम्बपत्रं घृतं नेत्र्यं कृमिपित्तविषप्रणुत् ॥ १३२ ॥
तत्फलं भेदनं स्निग्धमुष्णं कुष्ठहरं लघु ।
सपक्वं पाचयेन्निम्बः पक्वाशयविशोधयेत् ॥ १३३ ॥

अथ महानिम्बनामगुणाः ।

महानिम्बो निम्बकरः कासुको विषमुष्टिकः ।
रम्यको गिरिकोद्रेकाचारः स्यात् केशमुष्टिकः ॥१३४॥
महानिम्बो हिमो रूक्षस्तिक्तो ग्राही कषायकः ।
कफपित्तक्षमिच्छर्दिकुष्ठकृच्छ्रास्रमेहजित् ॥१३५॥

अथ किराततिक्तनामगुणाः ।

किराततिक्तः केरातो भूनिम्बो रामसेनकः ।
किरातकोऽन्यो नैपालो नाडितिक्तो ज्वरान्तकः ।
कण्डूतिनोऽर्द्धतिक्तः स्याद्विद्रारिः सन्निपातहा ॥१३६॥
किरातो वातलो रूक्षः शीतलस्तिक्तको लघुः ।
सन्निपातज्वरश्वासकासपित्तासदाहनुत् ॥१३७॥

अथ कुटजनामगुणाः।

कुटजो मल्लिकापुष्पः कलिङ्गो गिरिमल्लिका।
वत्सकः कुटजः कोटिद्रुचकः शक्रभूरुहः ॥१३८॥
कुटजः कटुको रूक्षो दीपनस्त्वरो लघुः।
अर्शोऽतिसारपित्तास्रकफव्रणकृमिकुष्ठनुत्।
तत्पुष्पं वातलं शीतं तिक्तं पित्तातिसारजित् ॥१३९॥

अथ इन्द्रयवनामगुणाः।

ऐन्द्रयवस्तस्य फल कालिङ्गः कोटजो मतः।
शक्राह्वः पुरुहूतश्च प्रोक्तो भद्रयवस्तया ॥१४०॥
ऐन्द्रयवस्त्रिदोषघ्नः सग्राही शीतलः कटुः।
ज्वरातिसाररक्तार्शःकृमिविषमर्पकुष्ठनुत् ॥१४१॥

अथ मदननामगुणाः।

मदनः कृर्दन पिण्डी राजपिण्डान्तकं फलम्।
वरहाटश्च तगरः शल्यको विषपुष्पकः ॥१४१॥
मदनो वमनस्त्रिनो वीर्योष्णो लेखनो लघुः।
रूक्षः कुष्ठकफानाहशोफगुल्मव्रणापहः ॥१४२॥

अथ कङ्कुष्ठनामगुणाः।

कङ्कुष्ठं कङ्काकुष्ठं रेचनं रङ्गनामकम्।
शोधनं पुलहं हार्सं वराङ्गं कुष्ठवालुकम् ॥१४४॥
कङ्कुष्ठं रेचनं तिक्तं कटुष्णं वर्णकारकम्।
कृमिशोफोदराधानगुल्मानाहकफापहम् ॥१४५॥

अथ हैमाह्वानामगुणाः।

हैमाह्वा कनकक्षीरी हेमपुष्पी हिमावती।
क्षीरिणी काञ्चनक्षीरी कटुपर्णी चिकर्षणी।
तिक्तदुग्धा हैमवती पीतदुग्धा हिमाद्रिका ॥१४६॥

हेमाह्वा रेचनी तिक्ता मन्दाग्न्युत्क्लेदकारिणी ।
कृमिकण्डूकफानाहविषकुष्ठविनाशनी ॥१४७॥

अथ सातलानामगुणाः ।

सातला विरला सारी सत्फला बहुफेनका ।
चर्मसाह्वा चर्मकसा फेना दीप्ता च नालिका ॥१४८॥
सातला कटुका पाके वातला शीतला लघुः ।
तिक्ता शोथकफानाहपित्तोदावर्तरक्तजित् ॥१४९॥

अथ अश्मन्तकनामगुणाः ।

अश्मन्तो मातुकापत्रो युग्मपत्रोऽम्लपत्रकः ।
शल्यत्वग्वृक्षयोनिः स्यात् कुशलो पापनाशनः ॥१५०॥
अश्मन्तस्तुवरो ग्राही शीतोष्णः कफवातजित् ।
निहन्ति गण्डमालाग्रगलगण्डगलामयान् ।
तत्फलं लेखनं ग्राहि गुरुश्लेष्मानिलापहम् ॥१५१॥

अथ काञ्चनारनामगुणाः ।

काञ्चनारः काञ्चनक. पाकारी रक्तपुष्पकः ।
कोविदारोऽस्य भेदः स्यात् कुदालः कुड्मली कुली ।
पाश्फोतो दालक स्वल्पकेसरश्चमरी मता ॥१५२॥
काञ्चनारो हिमो ग्राही तुवरः श्लेष्मपित्तनुत् ।
क्रिमिकुष्ठगुदभ्रंशगण्डमालाव्रणापहः ॥१५३॥
कोविदारोऽपि तद्वत् स्यात् पुष्पं शीतं त्रयीलघुः ।
रूक्षं संग्राहि पित्तास्रप्रदरक्षतकासनुत् ॥१५४॥

अथ निर्गुण्डीद्वयनामगुणाः ।

निर्गुण्डी श्वेतकुसुमः सिन्दुकः सिन्दुवारकः ।
भूतकेशापरो नीलसिन्दुकः पुष्पनीलकः ॥१५५॥
श्वेफालिका शोतभीरुर्घनकोऽनिलसञ्ज्ञरी ।
निर्गुण्डी स्मृतिदा तिक्ता कषाया कटुका लघुः ॥१५६॥

केश्या नेत्रहिता हन्ति शूलग्रोथाममारुतान् ।
क्रिमिकुष्ठरुचिः श्वेतव्रणानीलापि तद् द्विधा ॥१५७॥

अथ मेषशृङ्गीनामगुणाः ।

मेषशृङ्गी मेषवल्ली सादंष्ट्राजशृङ्गिका ।
अन्या तु दक्षिणावर्त्ता ह्यजिकाली विषाणिका ॥१५८॥
मेषशृङ्गी रसे तिक्ता वातला कासनाशनी ।
रूक्षा पाके कटुः पित्तव्रणश्वेताक्षिशूलनुत् ॥१५९॥

अथ पुनर्नवाद्वयनामगुणाः ।

पुनर्नवा श्वेतमूला पृथ्वीको दीर्घपत्रकः ।
विषादंदीर्घवर्षाभूः पुनर्भूर्मण्डलच्छदा ॥१६०॥
पुनर्नवा सरा तिक्ता रूक्षोष्णा मधुरा कटुः ।
पुनर्नवारुणा तिक्ता रक्तपुष्पा कठिल्लका ॥१६१॥
क्रूरकः क्षुद्रवर्षाभूर्वर्षकेतुः शिवाटिका ।
शोफानिलव्रणश्वेतहरा रूक्षा रसायनी ॥१६२॥
पुनर्नवा वरा तिक्ता कटुपाका हिमा लघुः ।
वातला ग्राहिणी श्वेतरक्तपित्तविनाशनी ॥१६३॥

अथ रास्नानामगुणाः ।

रास्ना रम्या युक्तरसा रसना गन्धनाञ्जली ।
सुगन्धमूलातिरसा श्रेयसी सुवरा रसा ॥१६४॥
रास्नामपाचनी तिक्ता गुरूष्णा श्वेतवातजित् ।
शोफश्वासज्वरास्रवातशूलोदरापहा ॥१६५॥

अथ अश्वगन्धानामगुणाः ।

अश्वगन्धा सुगन्धाढ्या गोकर्णयावरोहकः ।
वराङ्गवर्णी वरदा बल्या वाजीकरी हया ॥१६६॥
अश्वगन्धानिलश्लेष्मगोकर्णविषजित्वापहा ।
बल्या रसायनी तिक्ता कषायोष्णातियुक्कला ॥१६७॥

अथ प्रसारणीनामगुणा ।

प्रसारणी राजबला चारुपर्णी प्रतानिका ।
शरणी सारणी भद्रपर्णी सुप्रसरा सरा ॥१६८॥
प्रसारणी गुरुर्ह्यां सन्धानबलप्रदा सरा ।
वीर्य्योष्णा वातनुत् तिक्ता वातरक्तकफापहा ॥१६९॥

अथ शतावरीनामगुणा ।

शतावरी द्वीपिशतपुर्द्विपकाधरकण्टका ।
नारायणी शतपदी शतपादु बहुपत्रिका ॥१७०॥
शतावरी गुरु शीता स्वादु स्निग्धा रसायनी ।
शुक्रस्तन्यकरा बल्या वातपित्तास्रमोक्षजित् ॥१७१॥

अथ महाशतावरीनामगुणा ।

शतावर्य्यूर्द्ध्वकण्डाख्या पीवरी धीवरी वरी
अभीरुर्बहुपत्रा च महापुरुषदन्तिका ।
महावीर्य्या केशी स्यात् तुङ्गिनी सूक्ष्मपत्रिका ॥१७२॥
महाशतावरी मेध्या हृद्या हृष्या रसायनी ।
शीतवीर्य्या निहन्त्यशाग्रहणीनयनामयान् ।
तदङ्कुरस्त्रिदोषघ्नो लघुर्वर्ण्य त्वयापह ॥१७३॥

अथ बलानामगुणा ।

बला वाट्यालक शीतपाकी वाट्योदराह्वया ।
भद्रौदनी समङ्गा स्यात् समांसा खरयष्टिका ॥१७४॥

अथ महाबलानामगुणा ।

महाबला पीतपुष्पी महाबला हृद्यबला ।
वाट्यायनी देवसहा वाट्या स्यात् पीतपुष्पिका ॥ १७५ ॥

अथ बलाकानामगुणा ।

बलातिबला भारद्वाजी स्याद् हृद्यगन्धिनी ॥ १७६ ॥

अथ गङ्गेरुकीनामगुणाः।

गङ्गेरुकी नागबला विश्वदेवा गवेधुका ॥ १७७ ॥

अथ बलाचतुष्टयगुणाः।

बलाचतुष्टयं शीतं मधुरं बलकान्तिकृत्।
स्निग्धं वाह्नि समीरासृपित्तास्रक्षतनाशनम् ॥ १७८ ॥
वासां हृद्बला क्षच्छ्र हन्ति वातानुलोमनी।
गुर्वी नागबला ह्रद्या विशेषाद्रक्तपित्तजित्।
बल्या रसायनी पुंस्त्ववर्द्धिनी हृंहणी तथा ॥ १७८ ॥
तस्याः फलं हिमं स्वादु स्तम्भनं गुरुलेखनम्।
विबन्धाध्मानजननं रक्तपित्तविवर्द्धनम् ॥ १८० ॥

अथ ज्योतिष्मतीनामगुणाः।

ज्योतिष्मती वह्निरुचि कटुणी कटभी तथा ॥ १८१ ॥
ज्योतिष्मती कटुस्तिक्ता सरा कफसमीरजित्।
अत्युष्णा वामनी तीक्ष्णा वह्निबुद्धिस्मृतिप्रदा ॥ १८२ ॥

अथ महाज्योतिष्मतीनामगुणाः।

तेजस्विनी तेजोवती तेजिन्या लघुवल्कला।
महौजसी पारिजाता शीता तिक्ततितेजिनी ॥ १८३ ॥
तेजस्विनी कफश्वासकासशूलामवातजित्।
पाचन्युष्णा कटुस्तिक्ता रुचिवह्निप्रदीपनी ॥ १८४ ॥

अथ देवदारुनामगुणाः।

देवदारु सुराह्व स्याद्भद्रदारु सुरद्रुम।
भद्रकाष्ठं स्रेदनञ्च कृमिघ्नं शक्रदारु च ॥ १८५ ॥
देवदारु कटु स्निग्धं तिक्तोष्णं लघु नाशयेत्।
आध्मानज्वरशोथामक्षिकाकण्डुकफानिलान् ॥ १८६ ॥

अथ सरलनामगुणाः।

सरलो नन्दनो द्रौडा नमेरुद्विकटद्रुका।

पीतदारु पीतह्वो महादीर्घकलिद्रुमा ॥ १८७ ॥
सरलः कटुकः पाकरसयोर्मधुरो लघुः ।
उष्णो घिग्धो समीराश्विकण्डूकर्णामयापहः ॥ १८८ ॥

अथ पुष्करमूलनामगुणाः ।

पौष्करार्ह पद्मपत्रं पौष्करं पुष्करार्हयम् ।
काश्मीरं पुष्करजटा मूलवीरं सुगन्धिकम् ॥ १८९ ॥
पौष्करं कटुकं तिक्तमुष्णवातकफज्वरान् ।
हन्ति शोफार्तिश्लासान् विशेषात् पार्श्वशूलजित् ॥ १९० ॥

अथ कुष्ठनामगुणाः ।

कुष्ठं रोगाह्वयं दिव्य कौवेरं पारिभद्रकम् ।
पारिहार्यं पारिभाव्यमुत्पलं पारिभव्यकम् ॥ १९१ ॥
कुष्ठमुष्ण वाट स्वादु तिक्त शुक्रप्रदं लघु ।
हन्ति वातार्बुदार्शःकुष्ठकासमरुत्कफान् ॥ १९२ ॥

अथ कर्कटशृङ्गीनामगुणा ।

शृङ्गी कुलीरशृङ्गी स्याद्वक्रा कर्कटशृङ्गिका ।
कर्कटाख्या महाघोषा शृङ्गनाम्नी नताह्वयापि ॥ १९३ ॥
शृङ्गी कषायतिक्तोष्णा हन्ति छर्दिकृमिज्वरान् ।
हृद्या वमिकफश्वासहिक्कामोर्ध्वमारुतान् ॥ १९४ ॥

अथ कट्फलनामगुणाः ।

कट्फल कुमुदा कुम्भी शीतपर्णी सोमपादपः ।
सोमवल्को महाकुम्भी भद्रा भद्रवती शिवा ॥ १९५ ॥
कट्फल तुवरं तिक्त कटुवातकफज्वरान् ।
हन्ति श्वासमरोचकं कासकण्ठामयारुचीः ॥ १९६ ॥

अथ रोहितनामगुणाः ।

रोहितं कनकं भूतिर्भूतिकं सरलं दृढम् ।
श्यामलं युग्मकं धीर व्यापकं देवगन्धकम् ॥ १९७ ॥

रौहिषं कटुकं पाके तिक्तोष्णं तुवरं जयेत्।
हन्ति मारुतपित्तास्रं क्षणाच्छ्वासकफज्वरान् ॥ १९८ ॥

अथ भार्गीनामगुणाः।

भार्गी भृगुभवा पद्मा कासघ्नी गन्धपर्वणी।
खरशाकं शुक्रमाता फञ्जी ब्राह्मणयष्टिका ॥ १९९ ॥
भार्गी रूक्षो कटुस्तिक्ता रुच्योष्णा पाचनी भवेत्।
शोथकासकफश्वासपीनसज्वरमारुतान् ॥ २०० ॥

अथ पाषाणभेदनामगुणाः।

पाषाणभेदः पाषाणोऽश्मरीभेदोऽश्मभेदकः।
शिलाभेदो दृषद्भेदो नागभिन्नाङ्गभेदनः ॥ २०१ ॥
पाषाणभेदस्तुवरः शीतलो वस्तिशोधनः।
सरस्तिक्तः प्रमेहार्शःकृच्छ्राश्मरीरुजो जयेत् ॥ २०२ ॥

अथ मुस्तानामगुणाः।

मुस्तं वारिधरो मुस्तो मेघाख्यः कुरुविन्दकः ॥ २०३ ॥
वराहोऽब्दो घनो भद्रमुस्तं राजकसेरुकः।
पिण्डमुस्तं विषध्वंसी नागरोऽन्यः प्रकीर्त्तितः ॥ २०४ ॥
मुस्तं कटु हिमग्राहि तिक्तं दीपनपाचनम्।
कषायं कृमिपित्तास्रक्कफक्षयाज्वरापहम् ॥ २०५ ॥

अथ धातुकीनामगुणाः।

धातुकी कुञ्जरा सिन्धुपुष्पी प्रमदिनी मदा।
पार्वतीया ताम्रपुष्पी सुभिक्षा मद्यवासिनी ॥ २०६ ॥
धातुकी कटुका शीता मन्दोष्णा तुवरा लघुः।
क्षयातीसारपित्तास्रविषकृमिविसर्पजित् ॥ २०७ ॥

अथ माक्षिकानामगुणाः।

माक्षिका धातुकाम्बष्ठा शठी दन्तशठाम्बिका।
कम्बष्ठकी सूचीमुखी कषाया कण्ठमुख्यपि ॥ २०८ ॥

माचिकाम्ला रसे पाके कषायो शीतलो लघुः ।
पक्वातीसारपित्तास्रकफकण्डूकामयापहा ॥ २०९ ॥

अथ विदारिकन्दहयनामगुणाः ।

विदारिका हयनखो हयकन्दा विदालिका ।
शृगालिका कन्दवल्ली स्वादुकन्दा विडालिका ॥ २१० ॥
अन्या शुक्ला चीरशुक्ला क्षारवल्ली पयस्विनी ।
इक्षुवल्ली महाश्वेता चीरकन्देक्षुगन्धिका ॥ २११ ॥
विदारी मधुरा स्निग्धा हृंह्रणी स्तन्यशुक्रदा ।
गुरुपित्तास्रपवनदाहान् हन्ति रसायनी ॥ २१२ ॥

अथ वाराहीकन्दनामगुणाः ।

वाराही माधवी यष्टि शौकरी वनमालिका ।
विश्वक्सेनप्रिया क्रोड़नाम्ना शम्बरकन्दका ॥ २१३ ॥
वाराही मधुरा कन्दे कटुस्तिक्तातिशुक्रला ।
बल्या शुक्रकरा वातकफमेहव्रणान् जयेत् ॥ २१४ ॥

अथ पाठानामगुणाः ।

पाठाम्बष्ठा हृद्दत्तिका प्राचीनाम्बष्ठिका रसा ।
वरा तिक्ता पाषचेली श्रेयसी हृदयगणिका ॥ २१५ ॥
पाठोष्णाकटुका तीक्ष्णा वातघ्नी पाचनी लघुः ।
हन्ति शूलज्वरच्छर्दिकुष्ठातीसारकृद्रुजः ।
दाहकण्डूविषश्वासकृमिगुल्मगरव्रणान् ॥ २१६ ॥

अथ मोरटीनामगुणाः ।

मूर्वादेवी मधुरसा देवश्रेणी मधुव्रता ।
स्निग्धपर्णी पृथक्पर्णी मोरटी पीलुपर्णिका ॥ २१७ ॥

अथ मञ्जिष्ठानामगुणाः ।

मञ्जिष्ठा विजया रक्ता रक्ताङ्घ्री कालमेषिका ।
रक्तयष्टी ताम्रवल्ली समङ्गा वस्त्रभूषणा ॥ २१८ ॥

यष्ट्याह्वा यष्टिमधुकं भण्डी क्लीतिका व्यरनाशिनी ।
मञ्जिष्ठा मधुरा तिक्ता कषाया स्वरवर्णकृत् ॥ २१८ ॥
गुरुरुष्णा विषश्लेष्मशोफयोन्यक्षिशूलनुत् ।
रक्तालोसारकुष्ठास्रपीसर्पव्रणमेहजित् ।
तच्छाकं दीपनं स्वादु स्निग्धं पित्तानिलापहम् ॥ २२० ॥

अथ हरिद्रानामगुणा ।
हरिद्रा रजनी गौरी रञ्जिनी वरवर्णिनी ।
पिण्डा पीता वर्णवती निशावर्णा विलासिनी ॥ २२१ ॥
हरिद्रा कटुका तिक्ता रूक्षोष्णा श्लेष्मपित्तनुत् ।
वर्ण्या त्वग्दाहमेहास्रशोफपाण्डुव्रणापहा ॥ २२२ ॥

अथ दारुहरिद्रापीतदारुनामगुणा ।
दार्वी दारुहरिद्राऽन्या पीतदारु च पञ्चधा ।
कटं कटेरी पित्तघ्नं स्वर्णवर्णा कटङ्कटी ॥ २२३ ॥
दार्वी तद्वद्विशेषात्तु नेत्रकर्ण्यक्षिरोगनुत् ॥ २२४ ॥

अथ प्रपुन्नाटनामगुणाः ।
प्रपुन्नाटस्त्वेडगजयक्ष्मार्दः प्रपुन्नडः ।
दद्रुघ्नो मर्दको मेषकुसुम कुष्ठकृत्तम ॥ २२५ ॥
प्रपुन्नाटो लघु स्वादु रूक्ष पित्तानिलापह ।
कृमिकफश्वासकुष्ठदद्रुक्षयान् जयेत् ॥ २२६ ॥
हन्युष्णं तत्फल कुष्ठकण्डूदद्रुविषानिलान् ।
वातरक्तापहत्तस्या शाक कफकर लघु ॥ २२७ ॥

अथ वाकुचीनामगुणा ।
वाकुची चन्द्रिका सोमवल्ली पूतिफला वरा ।
सोमराजी सुपर्णफला बलगुजा कालमेषिका ।
चन्द्रलेखा तथा सोम. कुष्ठघ्नो च सितावरी ॥ २२८ ॥
वाकुची मधुरा तिक्ता कटुपाका रसायनी ।

विष्टम्भघ्नी हिमा रूक्षा सरा हृद्याऽस्रपित्तनुत् ॥ २२९ ॥
रूक्षा श्लेष्मिकफ श्वासकुष्ठमेहज्वरक्रमीन् ।
तत्फलं पित्तकृत् केश्यं कुष्ठवातकफापहम् ॥ २२० ॥

अथ भृङ्गराजनामगुणाः ।

भृङ्गराजो मेकराजो मार्कवः केशरञ्जकः ।
भृङ्गारको भृङ्गराजो भृङ्गाह्वः सूर्यवल्लभः ॥ २२१ ॥
भृङ्गराजः कटुस्निग्धो रूक्षोष्णः कफवातहृत् ।
दन्त्यो रसायनस्त्वक्य. कुष्ठमेचगिरोऽर्त्तिजित् ॥ २२२ ॥

अथ पर्पटनामगुणाः ।

पर्पटः कवचो रेणु· पित्तघ्ना वरकण्टकः ।
वरतिक्तः पर्पटकः पृथ्विकयर्मकण्टकः ॥ २२३ ॥
पर्पटो हन्ति पित्तास्रभ्रमतृष्णाकफज्वरान् ।
मंघाहो शीतलस्निग्धो दाहनुत् वातलो लघुः ॥२२४॥
रक्तपुष्पोऽतिसारस्य वारको ज्वरनाशनः ।
पर्पट पित्तघ्नदाहज्वरजित् श्लेष्मशोषणः ।
तिक्तशीतौ ज्वरहरौ लघू भूनिम्बपर्पटौ ॥ २२५ ॥

अथ वायमाणानामगुणाः ।

शणपुष्पी माल्यपुष्पो धावनी शणघण्टिका ।
क्षुद्रपुष्पी स्वल्पघण्टा घण्टामन्दा तु पुष्पिका ॥ २२६ ॥
शणपुष्पी कटुः पित्तश्लेष्मजिच्छर्दिकारिणी ।
वायमाणा सुदृश्याणा वायन्ती गिरिजानुजा ।
बलभद्रा क्षतघ्राणा वार्षिकं वायमाणिका ॥ २२७ ॥
वायमाणा सरा पित्तज्वरश्लेष्मामशूलजित् ॥ २२८ ॥

अथ महाजालनिकानामगुणाः ।

महाजालनिका घर्मरङ्गः स्यात् तिलपुष्पिका ।
वार्त्ताकी स्निग्धपिच्छी विभाण्डी रक्तपुष्पिका ॥ २२९ ॥

महाजालनिका तिक्ता रेचनो कफपित्तजित् ।
हन्ति दाहोदरानाहगोफकुष्ठक्षमिज्वरान् ॥२४०॥

अथ अतिविषाभेदनामगुणा ।

अतिविषा शुक्लकन्दा विषा प्रतिविषापरा ।
श्यामकन्दा शिवाशृङ्गी भङ्गुरोपविषाणिका ॥२४१॥
विषोषणा पाचनी तिक्ता श्लेष्मपित्तातिसारजित् ॥२४२॥
श्यामकन्दा चोपविषा सा विज्ञेया चतुर्विधा ।
रक्ता श्वेता भृशं कृष्णा पीतवर्णा तथैव च ॥२४३॥
यथापूर्ववद्विज्ञेया बल्या श्रेष्ठा गुणोत्तमा ।
सर्वदोषहराऽग्नित्वाल्लेखनात् क्षयघुनाग्निनी ।
श्लेष्मजान् विंशतिरोगान् सद्यो हन्याद्रसायनी ॥२४४॥

अथ काकमाचीनामगुणा ।

काकमाची ध्वाङ्क्षमाची वायसी च घनाघना ।
रसायनवरा सर्वतिक्ता स्यात् काकिनी कटु ॥२४५॥
काकमाची विदोषघ्नी स्निग्धोष्णा स्वरगुक्रदा ।
हृद्या रसायनी गोफकुष्ठार्शोज्वरमेहजित् ॥२४६॥

अथ काकजङ्घानामगुणा ।

काकजङ्घा नदीकान्ता काकतिक्ता सुलोमशा ।
पारावतपदी काका मदान्या छर्दिकारिणी ॥२४७॥
काकजङ्घा हिमा हन्ति रक्तपित्तकफज्वरान् ॥२४८॥

अथ लोध्रद्वयनामगुणा ।

लोध्रस्तिरोट कालीनस्तिलक मन्ततोऽद्रव ।
अन्यो घनत्वात् सरक श्वेतलोध्रोऽक्षिभेषजम् ॥२४९॥
लोध्रो विरेचक शीतश्चक्षुष्य कफपित्तनुत् ।
कषायो रक्तगोफास्रग्ज्वरातीसारनाशन ।
तत्पुष्पं मधुरं प्राहि सतिक्त श्लेष्मपित्तजित् ॥२५०॥

अथ हड्दारुहयनामगुणाः ।

हड्दारुर्मड्ह्याम्यामा लाङ्गली जीर्णवल्कलः ।
अन्या कोटरपुष्पी स्यादावेगी छागलान्त्रिका ॥२५१॥
हड्दारुः कषायोष्णः सरस्निग्धो रसायनः ।
हृद्यो वातामवातास्रश्लेष्मेड्कफान् जयेत् ॥२५२॥

अथ देवदालीनामगुणाः ।

देवदाली हस्तकोशी देवताण्डो गरागरी ।
जीमूतस्तारका वेणी जालिन्याऽयुर्विषापहा ॥२५३॥
देवदाली रसे तिक्ता कफार्शःश्लेष्मपाण्डुताः ।
नाशयेद् वामनी तीक्ष्णा क्षयहिक्काक्षमिज्वरान् ।
देवदाली च कटुका प्रमेहकामलापहा ॥२५४॥

अथ हंसपादीनामगुणाः ।

हंसपादी हंसपदी रक्तपादी त्रिपादिका ।
प्रच्छादिनी कोटमारी कोटमाता मधुस्रवा ॥२५५॥
हंसपादी गुरुः शीता हन्ति रक्तविषव्रणान् ।
विसर्पदाहतीसारलूताभूताग्निरोहिणीः ॥२५६॥

अथ सोमवल्लीनामगुणाः ।

सोमवल्ली यज्ञनेता सोमचौरी द्विजप्रिया ॥२५७॥
सोमवल्ली विदोषघ्नी कटुस्निग्धा रसायनी ॥२५८॥

अथ आकाशवल्लीनामगुणाः ।

आकाशवल्ली तु बुधैः कथितामरवल्लरी ॥२५९॥
खवल्ली पाण्डिणी तिक्ता पित्तश्लेष्मामयापहा ॥२६०॥

अथ नाकुलीनामगुणाः ।

नाकुली सर्पहासर्पगन्धिनी गन्धनाकुली ।
नकुलेष्टा महासर्पनेत्रा रोचकपत्रिका ॥२६१॥
नाकुली तुवरा तिक्ता कटुकोष्णा विनाशयेत् ।

विषं लूताहयिकाखुसर्पाणाञ्च क्रिमिव्रणान् ॥२६२॥

अथ वटपत्रीनामगुणाः ।

वटपत्री मोहिनी स्याद्दीपनी रेचनी मता ।
वटपत्री योनिगदान् कषायोष्णा विनाशयेत् ॥२६३॥
तत्फलं स्तम्भनं शीतं वातलं कफपित्तजित् ॥२६४॥

अथ लज्जालुनामगुणाः ।

लज्जालुर्मोहिनी स्पृक्का खदिरो गन्धकारिणी ।
नमस्कारी शमीपत्री समङ्गा रक्तपादिका ॥२६५॥
लज्जालुः शीतला तिक्ता कषाया श्लेष्मपित्तजित् ।
रक्तपित्तमतीसारं योनिरोगान् विनाशयेत् ॥२६६॥

अथ मुषलीनामगुणाः ।

मुषली खलिनी तालपत्री काञ्चनपुष्पिका ।
महाद्रुचा द्रुचकन्दः खजूरी तालमूलिका ॥२६७॥
मुषली मधुरा हृद्या वीर्योष्णा हृंहणी गुरुः ।
तिक्ता रसायनी हन्ति गुदजाननिलांस्तथा ॥२६८॥

अथ कपिकच्छूनामगुणाः ।

कपिकच्छूः स्वयंगुप्ता कण्डूला दुरवग्रहा ।
चण्डालगुप्ता लाङ्गूली मर्कटी स्यात् प्रहर्षणी ॥२६९॥
कपिकच्छूः परं हृद्या मधुरा हृंहणी गुरुः ।
तद्बीजं वातशमनं वाजीकरणमुत्तमम् ॥२७०॥

अथ पुत्रजीवनामगुणाः ।

पुत्रजीवो गर्भकरो यष्टीपुत्रोऽर्थसाधनः ।
पुत्रजीवो गुरुर्ग्राही गर्भदः श्लेष्मवातजित् ॥२७१॥

अथ वन्ध्याकर्कोटकीनामगुणाः ।

वन्ध्याकर्कोटकी हृद्या कुमारी सितपुष्पिनी ।
मनोज्ञा नागदमनी वन्ध्या योगीश्वरी मता ॥२७२॥

बन्ध्याकर्कोटकौ लघ्वौ कफघ्नौ व्रणशोधनौ ।
सर्पदंष्ट्राहरा तीक्ष्णा विसर्पविषनाशिनी ॥२७३॥

अथ विष्णुक्रान्तानामगुणाः ।

विष्णुक्रान्ता नीलपुष्पी ज्या वश्यापराजिता ॥२७४॥
विष्णुक्रान्ता कटुर्मेध्या क्रिमिव्रणकफान् जयेत् ॥२७५॥

अथ शङ्खपुष्पीनामगुणाः ।

शङ्खपुष्पो शङ्खनाम्नी किरीटी कम्बुमालिनी ॥२७६॥
शङ्खपुष्पो सरा मेध्या हृद्या मानसरोगहृत् ।
रसायनो कषायोष्णा स्मृतिकान्तिबलाग्निदा ।
दोषापस्मारभूताखुकुष्ठक्रिमिविषव्रणुत् ॥२७७॥

अथ दुग्धिकानामगुणाः ।

दुग्धिका मधुपर्णी स्यात् क्षीरिणी स्वादुपुष्पिका ॥२७८॥
दुग्धिकोष्णा गुरू रूक्षा वातला गर्भकारिणी ।
स्वादुविष्टम्भिनी हृद्या कफकुष्ठकृमीन् जयेत् ॥२७९॥

अथ अर्कपुष्पीनामगुणाः ।

अर्कपुष्पी क्रूरकर्मा जलकामा भिरिण्टिका ॥२८०॥
अर्कपुष्पी क्रिमिश्लेष्मपित्तविकारजित् ॥२८१॥

अथ भल्लातकानामगुणाः ।

भल्लातको नभोवल्लो वीरवृक्षोऽग्निवक्त्रकः ।
अरुष्करस्तथा रूक्षश्चानलोऽग्निमुखो धनुः ॥२८२॥
भल्लातक. कषायोष्ण गुरुर्लो मधुरो लघुः ।
वातश्लेष्मोदरान्नरुक्कुष्ठार्शोव्रणोगदान् ।
हन्ति गुल्मज्वरश्लिवयष्टिमान्द्यक्रिमिव्यरान् ॥२८३॥

अथ चरपोटानामगुणाः ।

चरपोटा दीर्घपर्णी कुन्तली तिलका मता ॥२८४॥
चरपोटा हिमा रूक्षा मेदिनी श्वासकासजित् ॥२८५॥

अथ द्रोणपुष्पीनामगुणाः ।

द्रोणपुष्पी श्वसनकः पालिन्दी कुम्भयोनिका ।
छत्राणी छत्रको द्रोणा कौडिन्यो दृढसारकः ॥२८६॥
द्रोणपुष्पी गुरू रूक्षा स्वादूष्णा वातपित्तनुत् ।
मेदिनी कामलाशोफकफकृमिहरा कटुः ॥२८७॥

अथ ब्राह्मीब्राह्ममण्डूकीनामगुणाः ।

ब्राह्मी सरस्वती सोमा सत्याह्वा ब्रह्मचारिणी ।
मण्डूकपर्णी माण्डूकी लट्वी दिव्या महौषधी ।
कपोतवेगा सुनिका लावण्या सोमवल्लरी ॥२८८॥
ब्राह्मी हिमा सरा स्वादुर्लघुर्मेध्या रसायनी ।
स्वर्या स्मृतिप्रदा कुष्ठपाण्डुमेहास्रकासजित् ।
विषशोफज्वरहरा तद्वत् मण्डूकपर्णिनी ॥२८९॥

अथ सुवर्चलाब्रह्मसुवर्चलानामगुणाः ।

सुवर्चलाऽर्ककान्ता स्यात् सूर्यभक्ता सुखोद्भवा ।
सूर्यावर्त्ता रविप्रीता स्वल्पा ब्रह्मसुवर्चला ॥२९०॥
सुवर्चला गुरू शीता मूत्रला कफवातजित् ।
अल्पोष्णा कुष्ठमेहाश्मकृच्छ्रज्वरहरा लघुः ॥२९१॥

अथ मत्स्याक्षीनामगुणा ।

मत्स्याक्षी बालिका मत्स्यगन्धी मत्स्यादनी तया ।
मत्स्याक्षी ग्राहिणी शीता कुष्ठपित्तकफास्रनुत् ॥२९२॥

अथ जलपिप्पलीनामगुणाः ।

जलपिप्पल्यम्बुवल्ली पल्वलः कच्छटस्तथा ॥२९३॥
जलपिप्पलिका हृद्या चक्षुष्या शुक्रला लघुः ।
संग्राहिणी हिमा रूक्षा रक्तदाहव्रणापहा ॥२९४॥

अथ गोजिह्वानामगुणा ।

गोजिह्वा गोजिका गोभी दार्विका खरपर्णिनी ॥२९५॥

गोजिह्वा वातला शीता ग्राहिणी कफपित्तनुत् ।
हृद्या प्रमेहकासास्रव्रणज्वरहरा लघुः ॥२८६॥

अथ नागदमनीनामगुणाः ।

नागाह्वादमनी नागगन्धा भुजगपर्णिनी ॥२८७॥
स्यान्नागदमनी वर्ष्या लूतासर्पविषापहा ॥२८८॥

अथ गुञ्जाद्वयनामगुणाः ।

गुञ्जा शिखण्डिनी ताम्रा रक्तिका काकनासिका ।
श्वेतान्या चक्रिका चूडा दुर्मुखा काकपीलुका ॥२८९॥
गुञ्जा केश्या बलकरा त्वच्या पित्तकफापहा ।
नेत्रामयहरा हृद्या हन्ति कण्डूग्रहव्रणान् ।
कृमीन् प्रलुप्तकुष्ठानि तद्वच्छ्वेतापि शस्यते ॥३००॥

अथ वेल्लन्तरनामगुणाः ।

वेल्लन्तरो दीर्घपत्रो वीरद्रुर्बहुवारकः ॥३०१॥
वेलन्तरोऽश्मनुद् ग्राही कफश्वासानिलार्त्तिजित् ॥३०२॥

अथ वन्दाकनामगुणाः ।

वन्दाकः स्याद्वृक्षरुहा शेखरी कामवल्लकः ।
वृक्षादनी कामतरु कामिनी पदरोहिणी ॥३०३॥
वन्दाकः कफवातास्रशोफव्रणविषापहः ॥३०४॥

अथ पिण्डारनामगुणाः ।

पिण्डारः करहाटः स्याद् तीक्ष्णकील. कुरङ्गकः ॥३०५॥
पिण्डारो मधुरः शीत. शोथपित्तकफापहः ॥३०६॥

अथ छिक्किकानामगुणाः ।

छिक्किका चवक. क्रूरो नासासंवेदना पटुः ॥३०७॥
छिक्किका पित्तला कुष्ठकृमिवातकफापहा ॥३०८॥

अथ रोहितनामगुणा. ।

रोहितो दाडिमीपुष्पो रोहितः भूटगाल्मलिः ।

प्लीहारी रोहिणी रोही रक्तघ्न. पारिजातक. ॥२०८॥
रोहितक सरो गुल्मयकृत्प्लीहोदरापह. ॥२१०॥

अथ मोचरसनामगुणा ।

मोचक स्याम्मोचरस. शाल्मलीवेष्टक: स्मृत. ।
मोचनिर्यासक: पिच्छा मोचास्रावी च वेष्टक ॥२११॥
मोचक शीतलो ग्राही गुरुर्वृष्योऽतिसारजित् ।
प्रवाहकासपित्तासृक्कफदाहनिबर्हण. ॥२१२॥

अथ अजगन्धानामगुणा ।

अजगन्धा बस्तगन्धा कवरी पूतवर्वर: ॥२१३॥
अजगन्धा लघू रुच्या हृद्या तु कफवातनुत् ॥२१४॥

अथ सौरेयकनामगुणा. ।

सौरेयक सहचर' सौरेय किङ्किरातक ।
दासी सहचर: झिण्टी शैर्षको मृदुकण्टक ॥२१५॥
रक्तपुष्प झुरुवक. पीतो ज्ञेय कुरण्टक: ।
नील शार्ङ्गल प्रोक्तो याप्य योदनपाक्यपि ॥२१६॥
सौरेय कुष्ठवातासृक्कफकण्डूविषापह ।
तिक्तोष्णो मधुरोऽनम्ल सस्निग्ध केशरञ्जन ॥२१७॥

अथ नीलश्वेतस्यन्दाद्वयनामगुणा ।

श्वेतस्यन्दा श्वेतपुष्पा कटभिर्गिरिकर्णिका ।
सितापराजिता श्वेता विषघ्नी मेहनाशिनी ।
नीलस्यन्दा व्यक्तगन्धा नीलपुष्पा गवादनी ॥२१८॥
श्वेतस्यन्दाद्वयं शीत ग्रहघ्न दृष्टिकण्ठनुत् ।
कुष्ठशूलविदोषामगीफव्रणविषापहम् ॥२१९॥

अथ इक्षुरनामगुणा ।

इक्षुर' क्षुरमेषाण्ड: कोकिलाक्ष क्षुर स्मृत ।
तैलपर्णस्तिक्षरिक्षुर्वाल्मिका चेक्षुगन्धिका. ॥२२०॥

इक्षुरः शीतलो ह्यो गुरुर्वातकफापहजित् ॥३२१॥

अथ कार्पासनामगुणाः ।

कार्पासः पटशूलच्छादवनोवादरः पिचुः ॥३२२॥

कर्पासको लघुः कोष्णो मधुरो वातनाशनः ।

तद्बीजं स्तन्यदं ह्यं स्निग्धं कफहरं गुरु ॥३२३॥

अथ आरामशीतलानामगुणाः ।

आरामशीतला देवी गन्धा कुक्कुरमर्दनः ॥३२४॥

आरामशीतला शीता कटुः पित्तकफापहा ॥३२५॥

अथ कुक्कुरदुनामगुणाः ।

कुक्कुरदुस्ताम्रचूड़ः सूक्ष्मपत्रो मृदुच्छदः ॥३२६॥

कुक्कुरदुः कटुस्तिक्तो ज्वररक्तकफापहः ॥३२७॥

अथ वामीनामगुणाः ।

वामी भद्रधरा वारि ब्राह्मी च छिलमोचिकः ॥३२८॥

वामो शोफहरा कुष्ठपित्तश्लेष्मानिलापहा ॥३२९॥

अथ शरपुङ्खानामगुणाः

शरपुङ्खा कालशाकं श्लीपदारि कालको मतः ॥३३०॥

शरपुङ्खा यकृत्प्लीहदुष्टव्रणविषापहा ।

तिक्ता कषाया वासास्रश्वासज्वरहरा लघुः ॥३३१॥

अथ बलामोटानामगुणाः ।

बलामोटा जया सूक्ष्मपत्रा ज्ञेयापराजिता ॥३३२॥

बलामोटा विषश्लेष्मकृच्छ्रक्षुद्विजयप्रदा ॥३३३॥

अथ सदर्भनानामगुणाः ।

सदर्भना सोमवल्ली चक्राङ्का मधुपर्णिका ॥३३४॥

सदर्भना स्वादुरूक्षा कफशोफास्रवातजित् ॥३३५॥

अथ मयूरशिखानामगुणाः

मयूराङ्गशिखा ज्ञेया साहस्री मधुकच्छदा ॥३३६॥

मयूराक्षागिरा लघ्वी पित्तास्रे पातिसारजित् ॥३२७॥

अथ लक्ष्मणानामगुणाः ।

लक्ष्मणा पुत्रदा रक्ता विन्दुपत्रा च नागिनी ।
गोचोरसदृशं पुष्पं रोमवल्लि समन्वितम् ।
रक्तविन्दुसमं पुष्पं लक्ष्मणाकारमुच्यते ॥३२८॥
लक्ष्मणा गर्भदा शीता सरा हृद्या विदोषनुत् ॥३२९॥

अथ मांसरोहिणीनामगुणाः ।

मांसरोहिण्यतिरुहा हृत्ता चर्मकसा वसा ॥३४०॥
स्यान्मांसरोहिणी हृद्या सरा दोषत्रयापहा ॥३४१॥

अथ अस्थिसंहारकनामगुणाः ।

अस्थिसंहारको वज्रवल्लरी क्रोष्टुघण्टिका ।
वज्राङ्गी ग्रन्थिमान् वज्रमोक्षा स्यादस्थिशृङ्खलाः ॥३४२॥
अस्थिसंहारकः शीतो हृद्यो वातहरोऽस्थियुक् ॥३४३॥

अथ अर्कक्षयनामगुणाः ।

अर्कः सूर्यक्षयः क्षीरी सदापुष्पो विकर्त्तणः ।
मन्दारो वसुकोलर्को राजार्को दीर्घपत्रकः ॥३४४॥
अर्कक्षयं गुल्मवातकुष्ठकण्डूविषव्रणान् ।
निहन्ति प्लीहगुल्मार्शःकृत् श्वेतोदरकृमीन् ॥३४५॥

अथ करवीरक्षयनामगुणाः ।

करवीरोऽम्लहृद्यः श्वेतपुष्पः स्याच्छतपुष्पकः ।
रक्तपुष्पोऽपरश्चण्डो लगुडः करवीरकः ॥३४६॥
करवीरक्षयं नेत्रगोफकुष्ठव्रणापहम् ।
लघूष्णं कृमिकण्डूघ्नं भक्षितं विषवन्मतम् ॥३४७॥

अथ धत्तूरनामगुणाः ।

धत्तूरः क्षितयोः धूर्त्तो देवता मदनः शठः ।
उन्मत्तो मातुलस्तूरो तरकः कनकाह्वयः ॥३४८॥

घनूरो मदवर्ष्याग्निवान्तिकुष्ठरक्तुत् ।
उष्णो गुल्मव्रणश्लेष्मकण्डूकृमिविषापहः ॥२४९॥

अथ कलिकारीनामगुणाः ।

कलिकारी वह्निमुखी लाङ्गली गर्भपातिनी ।
विग्रल्या हलिनी गौरी प्रमाता शुक्लपुष्पिका ॥२५०॥
विष्वग्दुल्काऽग्निजिह्वा च कथिता पुष्पसौरभा ।
वह्निशिखाऽग्निका ज्ञेया नखरन्ध्री च सा स्मृता ॥२५१॥
कलिकारी सरा कुष्ठश्वोफार्शोव्रणशूलजित् ।
तीक्ष्णोष्णा क्रिमिनुल्लघ्वी पित्तला गर्भपातिनी ॥२५२॥

अथ कुमारीनामगुणाः ।

कुमारी मण्डला माता गृहकन्याऽतिपिच्छला ।
रसायनी कण्टकिनी शबराख्या वनौकसा ॥२५३॥
कुमारी भेदिनी शीता यकृत्प्लीहकफज्वरान् ।
निहन्ति ग्रन्थिविस्फोटपित्तरक्तव्रणामयान् ॥२५४॥

अथ भृङ्गानामगुणाः ।

भृङ्गाह्वजा मातुलानी मोहिनी विजया जया ॥२५५॥
भृङ्गा कफहरा तिक्ता पाचिणी दीपनी लघुः ।
तीक्ष्णोष्णपित्तलानाहमदक्षयाऽग्निवर्द्धिनी ॥२५६॥

अथ काञ्चनीनामगुणाः ।

काञ्चनी शीतफलिनी काकायुः काकवल्लरी ॥२५७॥
काञ्चनी स्तन्यदा मूर्छाव्ययादोषव्रणापहा ॥२५८॥

अथ दूर्वाद्वयनामगुणाः ।

दूर्वा गव्या शीतकरी गोप्योमी गतपर्विका ।
चन्द्रा श्वेता श्वेतदण्डा मार्गवी दुर्मलाह्वया ॥२५९॥
दूर्वा हिमा विसर्पास्रपित्तकफदाहजित् ॥२६०॥

अथ गण्डदूर्वानामगुणाः।

गण्डदूर्वा मत्स्यगन्धा मत्स्याक्षी शकुलादनी ॥३६१॥
गण्डदूर्वा हिमा लोहदाविणी ग्राहिणी लघुः।
दाहव्रणबलासासक्कुष्ठपित्तज्वरापहाः ॥३६२॥

अथ काशनामगुणाः।

काशः सुकाण्डः काशेक्षुः ऋष्यौकः श्वेतवासरः।
इक्षुरिक्षेक्षुकाशश्च स चैवेक्षुरसः स्मृतः ॥३६३॥
कासक्षच्छ्वासमदाहास्रपित्तक्षयकरो हिमः ॥३६४॥

अथ कुशनामगुणाः।

दर्भो बर्हिः कुशस्तीक्ष्णः सूच्यग्रो यज्ञभूषणः ॥३६५॥
दर्भः क्षच्छ्वासवट्पित्तवस्तिरुक् कफरक्तजित् ॥३६६॥

अथ मुञ्जनामगुणाः।

मुञ्जः शुरा स्थूलदर्भो बाणाह्वो ब्रह्ममेखलः ॥३६७॥
मुञ्जोऽनुष्णो विसर्पास्रमूववस्त्यर्चिरोगजित् ॥३६८॥

अथ मलनामगुणाः।

मलोरन्ध्री पुण्यमृत्युर्दमनोऽनन्तकः पिटः ॥३६९॥
मलो मूवार्त्तिदाहास्रकफपित्तविसर्पजित् ॥३७०॥

अथ वंशनामगुणाः।

वंशो वेणुः कीचकः स्यात् कर्मारस्त्वचिसारकः ॥३७१॥
वंशः सरो हिमः पित्तकफदाहास्रशोफजित्।
तल्क्षीरो गुरुर्भेदी श्लेष्मलो वातपित्तजित्।
तयाख्य भेदकोऽत्युष्ण. कफघ्नो वातपित्तजित् ॥३७२॥

अथ जवानीनामगुणाः।

जवानी जवनी तीव्रा तुरुष्का मदकारिणी ॥३७३॥
जवानी जीवनी रूक्षा ग्राहिणी मादिनी गुरुः ॥३७४॥

अथ खसतिलनामगुणाः ।

तिलभेदः खसतिलः शुभ्रपुष्पो लसत्फलः ॥३७५॥
हृद्यो बल्यः खसतिलः श्लेष्मलो वातजिद् गुरुः ।
वल्कलस्तत्फलोद्भूतो रुचो याही विशेषतः ॥३७६॥

अथ अहिफेननामगुणाः ।

आफूकन्तद्भवोद्भूतमहिफेनं सफेनकम् ॥३७७॥
आफूकं शोषणं ग्राहि श्लेष्मघ्नं वातपित्तलम् ॥३७८॥

अथ छिलिछिण्टनामगुणाः ।

छिलिछिण्टो महामूलः पातालो गरुडाह्वयः ॥३७९॥
छिलिछिण्टः परं हृद्यः श्लेष्मलः पवनापहः ॥३८०॥

यो राज्ञां सुखतिलकः कटारमल्ल-
स्तेन श्रीमदनभूपेण निर्मितेऽत्र ।
वर्गेऽभून्मदनविनोदनाभिधे पूर्णो·
वर्गोऽयं ललितपदाङ्कितोऽभयादिः ॥३८१॥

इति अभयादिप्रथमवर्गः ।

अथ शुण्ठ्यादिवर्गः ।

श्रीमद्विराजितमध्यमनन्तं श्रीरुचिपरं परमघरमेकम् ।
श्रीमदनचिंतिनाथं सदा तं विष्णुपदं विपदं विनिहन्तु ॥१॥

अथ शुण्ठीनामगुणाः ।

शुण्ठी विश्वौषधं विश्वं कटुभद्रं कटूत्कटम् ।
महौषधं शृङ्गवेरं नागरं विश्वभेषजम् ॥२॥
शुण्ठी रुच्यामवातघ्नी पाचनी कटुका लघुः ।
विष्वोष्णा मधुरा पाके शूलवातविबन्धनुत् ॥३॥

हृद्या स्वर्य्या वमिश्वासकासशूलहृदामयान् ।
हन्ति शीपदगोफार्शमानाहोदरमारुतान् ॥४॥

अथ आर्द्रकनामगुणाः ।

कटूष्णं दीपनं हृद्यं रुच्यमार्द्रकनागरम् ।
श्वासकासवमीहिक्कावातश्लेष्मविबन्धनुत् ॥५॥
पाचनं रोचनं हृद्यं कटूष्णं वह्निदीपनम् ।
वातप्रकोपशमनं पाचनं शोथहृत् परम् ॥६॥
भोजनादौ सदा पथ्यं जिह्वाकण्ठविशोधनम् ।
अत्यन्तरसवीर्य्यत्वात् तत्यरन्तु कफापहम् ॥७॥
काञ्चिकार्द्रं सलवणं दीपनं पाचनं परम् ।
वातप्रकोपशमनं हृद्यं लवणार्द्रकम् ॥८॥

अन्यदपि ।

आर्द्रकं शृङ्गवेरन्तन्महौषधमुदाहृतम् ।
आर्द्रक नागरगुणं भेदनं दीपनं गुरु ॥९॥

अथ मरिचनामगुणाः ।

मरीच वह्निज तीक्ष्णं मलिनं श्यामभूषणम् ॥१०॥
मरीचं कटुकं तीक्ष्णं दीपन कफवातनुत् ।
उष्णं पित्तकरं रूक्षं श्वासशूलक्रिमीन् जयेत् ॥११
तदार्द्रं मधुर पाके नात्युष्णं कटुक गुरु ।
किञ्चित्तीक्ष्णगुणं श्लेष्मप्रसेकि स्यादपित्तलम् ॥१२॥

अथ पिप्पलीनामगुणा ।

पिप्पली चपला रुद्रा मागधी मगधा कणा ।
विश्वोपकुल्या वैदेही शौण्डी स्यात्तीक्ष्णतण्डुला ॥१३॥
पिप्पली दीपनी हृद्या स्वादुपाका रसायनी ।
अत्युष्णा कटुका स्निग्धा कफवातहरा लघुः ॥१४॥
पित्तला रेचनी हन्ति श्वासकासोदरज्वरान् ।

कुष्ठप्रमेहगुल्मार्शः श्लीहशूलाममारुतान् ।
आर्द्रा कफप्रदा स्निग्धा शीतला मधुरा गुरुः ॥१५॥

अथ त्रूषणचतुरूषणनामगुणाः ।

विश्वोषकुल्यामरिचैः त्रूषणं कटुकं कटु ।
व्योषं कटुत्रयं तत् स्यात् सग्रन्थि चतुरूषणम् ॥१६॥
त्रूषणं दीपनं हन्ति श्वासकासत्वगामयान् ।
गुल्ममेहकफस्थौल्यमेदःश्लीपदपीनसान् ॥१७॥

अथ पिप्पलीमूलनामगुणाः ।

कणामूलं कटुग्रन्थि. पिप्पलीमूलसुपर्णम् ।
षड्ग्रन्थि ग्रन्थिकं मूलं मागधं चटकाशिरः ॥१८॥
दीपनं पिप्पलीमूलं कटूष्णं पाचनं लघु ।
रूक्षं पित्तकरं भेदि कफवातोदरापहम् ॥१९॥

अथ चव्यतत्फलनामगुणाः ।

चव्यं चवणमुच्चिटश्चविका कोलवल्लिका ॥२०॥
पिप्पलीमूलवत् तस्याविशेषाद् गुदजापहम् ।
चव्यपुष्पं गरश्वासकासच्छर्दिविनाशनम् ॥२१॥
तत्फलं श्रेयसी हस्तिमागधी गजपिप्पली ॥२२॥
गजकृष्णा कटुर्वातश्लेष्मनुत् वह्निवर्धिनी ।
उष्णा निहन्त्यतीसार श्वासकण्ठामयक्रिमीन् ॥२३॥

अथ चित्रकनामगुणाः ।

चित्रको हुतभुग् व्यालो दारुणो दहनोऽरुणः ।
अग्निमाली हविःपाची वह्निनामा विशेषतः ॥२४॥
चित्रकः कटुकः पाके वह्निकृत्पाचनो लघुः ।
रूक्षोष्णो व्रणकुष्ठगोदर्शः क्रिमिकासजित् ।
श्लेष्मानिलहरो मार्दो तच्छाकं श्लेष्मवातनुत् ॥२५॥

अथ पञ्चकोलषड्गुणनामगुणाः ।

पिप्पली मागधीमूलचव्यनागरचित्रकैः ।
पञ्चकोलं यकृत्प्लीहगुल्मशूलार्शसी जयेत् ॥२६॥
मरिचेनयुतं तत्तु षड्गुणमुदाहृतम् ॥२७॥

अथ शतपुष्यादयनामगुणाः ।

शतपुष्या शतव्योषा शताह्वा कारवी मिसिः ।
अवाक्पुष्पी त्वचि छत्रा सेनिका मागधीऽपरा ॥२८॥
शतपुष्या लघुस्तीक्ष्णा पित्तश्लेष्मोपनो कटुः ।
उष्णा ज्वरानिलश्लेष्मव्रणशूलार्शरोगजित् ।
सेनिका तद्गुणा प्रोक्ता विशेषाद् योनिशूलघ्नम् ॥ २९॥

अथ मिश्येयानामगुणाः ।

मिश्येया मिश्रिकाख्यौनौ धान्यो शीतशिवा मता ॥३०॥
मिश्येया दीपनी हृद्या बस्तिविट्क्रिमिगुल्मनुत् ।
रूक्षोष्णा तत्फलं कासवमिश्लेष्मानिलान् जयेत् ॥३१॥

अथ वनमेथीनामगुणाः ।

मेथिका वस्तिका शेलुरहित्यो वनमेथिका ॥३२॥
अहित्योऽल्पगुणस्तद्वत् वाजिनां स तु पूजितः ॥३३॥

अथ अजमोदानामगुणाः ।

अजमोदाऽत्युग्रगन्धा मोदा हस्ति मयूरक ।
खराह्वा कारवी वक्षो वस्तमोदा च मर्कटः ॥ ३४ ॥
अजमोदा कटुस्तीक्ष्णा दीपनो कफवातनुत् ।
उष्णा विदाहिनी हृद्या ह्रद्या वक्तमला लघुः ।
नेत्रामयक्रमिच्छर्दिहिक्काबस्तिरुजो जयेत् ॥३५॥

अथ जीरकद्वितयनामगुणाः ।

जीरकं दीर्घकं शुक्लमजाजी कणजीरकम् ॥३६॥
जीरक जरणं क्षव्यं वर्षाकालो सुगन्धिकम् ॥३७॥

कालिका वाप्यिका कुक्षिः कारवो चोपकुञ्चिका ।
पृथ्वीका सुसवी पृथ्वी स्थूलजाज्यपकालिका ॥३८॥
जीरकत्रितयं रूक्षं कटूष्णं दीपनं लघु ।
संग्राहि पित्तलं मेध्यं गर्भाशयविशुद्धिकृत् ।
चतुर्थं पवनाध्मानगुल्मच्छर्दिबलासजित् ॥३९॥

अथ यवानीनामगुणाः ।

यवानी दीप्यकी दीप्यो दीपनोया यवानिका ।
यवसाह्वोग्रगन्धा स्यात् यवाह्वा भूकदम्बकः ॥४०॥
यवानी पाचनी रुच्या तीक्ष्णोष्णा कटुका लघुः ।
वातश्लेष्मोदरानाहगुल्मशूलकृमीन् जयेत् ॥४१॥

अथ यवानिका(खोरासानी)नामगुणाः ।

यवानिका यवानी स्याच्छौहारो जन्तुनाशनः ॥४२॥
चौहारस्तत् गुणः प्रोक्तो विशेषात् कृमिनाशनः ॥४३॥

अथ अजगन्धानामगुणाः ।

अजगन्धा पूतिकीटा वर्वरी पूतिवर्वरः ।
कारवी खरपुष्पा च तुङ्गी पूतिमयूरिका ॥४४॥
अजगन्धा कटुस्तीक्ष्णा रूक्षा हृद्याऽग्निवर्द्धनी ।
दृष्टिमान्द्यप्रदा लघ्वी शुक्रवातकफापहा ॥४५॥

अथ वचानामगुणाः ।

वचोग्रगन्धा गोलोमी षड्ग्रन्था जटिलो मता ।
जटिला शतपर्वाऽन्या लोमशा हैमवत्यपि ॥४६॥
वचोष्णा कटुका तिक्ता वामनी स्वरशुद्धिकृत् ।
अपस्मारकफोन्मादभूतगुल्मानिलान् जयेत् ॥४७॥

अथ कपुपानामगुणाः ।

कपुपा वपुपा विप्रा विगन्धा विषगन्धिका ॥४८॥

हपुषा दीपनी तिक्ता कटूष्णा तुवरा गुरुः ।
पित्तोदरसमीरार्शोग्रहणीगोफगुल्मजित् ॥४९॥

अथ विड्ङ्गनामगुणाः ।

विड्ङ्गं जन्तुहननं कृमिघ्नं क्षुद्रतण्डुला ।
भूतघ्नी तण्डुला घोषा करालाऽग्रगामिनी ॥५०॥
विडङ्गं कटु तिक्तोष्णं रूक्षं वह्निकरं लघु ।
गुल्माध्मानोदरश्लेष्मकृमिवातविबन्धनुत् ॥५१॥

अथ धान्याकनामगुणाः ।

धान्याकं धान्यकं धान्यं धानेयञ्च वितुन्नकम् ।
कुस्तुम्बुरु तदार्द्रं तु धानी धानेयकालुकाः ॥५२॥
धान्यकं तुवरं स्निग्धमल्पं मूत्रलं लघु ।
हृद्यं रूक्षं बलविट्कं स्वादु पाके त्रिदोषनुत् ॥५३॥
पाचनं श्वासकासास्रतृष्णामार्द्यः कृमीन् जयेत् ।
आर्द्रन्तु तद्गुणं स्वादुर्विशेषात्पित्तनाशिनी ॥५४॥

अथ छिङ्गुपत्रीद्वयनामगुणाः ।

छिङ्गुपत्री पृथुस्कन्धी पृथ्वीका दारुपत्रिका ।
वाप्यिका कारवी तज्ज्ञी विल्विका दीर्घिका तथा ॥५५॥
छिङ्गुपत्रीऽपरा वेणुपत्रो छिङ्गु गियाटिका ।
जन्तुका रामठी नाडी पिण्डा छिङ्गुफला मता ॥५६॥
छिङ्गुपत्रीद्वयं हृद्यं तीक्ष्णोष्णं पाचनं कटु ।
हृद्विरुक् विबन्धार्शःश्लेष्मगुल्मानिलापहम् ॥५७॥

अथ छिङ्गुनामगुणाः ।

छिङ्गुवाह्लीकमल्गुयं रामठं भूतनाशनम् ।
अगूढगन्धा जरणं जन्तुघ्नं धूपधूपनम् ॥५८॥
छिङ्गुणं पाचनं वृष्यं तीक्ष्णोष्णं कफवातनुत् ।
गुल्मगुल्मोदरानाहकृमिजित् पित्तवर्द्धनम् ॥५९॥

अथ वंगलोचनानामगुणाः ।

वंगजा वैणवी चोरी त्वक्चोरी वंगलोचना ।
तुगाचोरी तुगावंशी वंशचोरी शुभा सिता ॥६०॥
वंगजा हृद्या हृष्या शीतला मधुरा जयेत् ।
दृष्णाक्षयज्वरश्वासकासपित्तासृककामलान् ॥६१॥

अथ सैन्धवनामगुणाः ।

सैन्धवं सिन्धुजं शुद्धं माणिमन्थं पटूत्तमम् ॥६२॥
सैन्धवं मधुर हृद्यं दीपनं शीतलं लघु ।
चक्षुष्यं पाचनं स्निग्धं हृद्यं दोषत्रयापहम् ॥६३॥

अथ सौवर्चलनामगुणाः ।

सौवर्चलं सुगन्ध्याख्यं रुचकं हृद्यगन्धकम् ॥६४॥
सौवर्चलं वह्निकरं कटूष्णं विशदं लघु ।
उद्गारशुद्धिदं सूक्ष्मं विबन्धानाहशूलजित् ॥६५॥

अथ विडनामगुणाः ।

विडं क्षत्रिमकं पाक्य धूर्त्त द्राविडमासुरम् ॥६६॥
विडं लघूष्णं विष्टम्भि शूलहृद्गौरवारुचोः ।
हृन्नाभानाहवाकौ शूलमधोवाताऽनुलोमनम् ॥६७॥

अथ सामुद्रकनामगुणाः ।

सामुद्रं वारिसम्भूतमचोवमासुर तथा ॥६८॥
सामुद्र दीपन स्वादु नात्युष्ण भेदनं कटु ।
श्लेष्मल वातनुत् तिक्तमरूक्ष नातिपित्तलम् ॥६८॥

अथ औद्भिदनामगुणाः ।

औद्भिदं भूमिजं भौमं पार्थिव पृथिवीभवम् ॥७०॥
औद्भिदं रुक्षलं सूक्ष्मं लघु वाताऽनुलोमनम् ॥७१॥

अथ गण्डनामगुणाः ।

गण्डाख्यं रोमलपर्ण रोमं शाकम्भरीभवम् ॥७२॥

गण्डाख्य लघु वातघ्नमल्पोष्ण भेदि मूत्रलम् ॥७३॥

अथ क्षारनामगुणा ।

क्षार पांशुभव लौहमौपर पाशव वसु' ॥७४॥

क्षार गुरु कटु स्निग्ध श्लेष्मल वातनाशनम् ॥७५॥

अथ काचलवणनामगुणा ।

काच विकूट पाक्याख्य लवण काचसम्भवम् ॥७६॥

काच दीपनमल्पोष्ण रक्तपित्तविवर्द्धनम् ॥७७॥

अथ यवक्षारस्वर्जिकाक्षारनामगुणा ।

यवक्षार शूकपाक्यो यवशूको यवाग्रज ॥७८॥

स्वर्जिका स्वर्जिकापाक्य सुखपाक्य सुवर्चिका ॥७९॥

यवक्षारोऽग्निकृत् वातश्लेष्मप्लीहगलामयान् ।

आमार्शोग्रहणीगुल्मयकृत्प्लीहरुजो जयेत् ॥८०॥

स्वर्जिकाऽन्यगुणा तस्माद्विशेषात् गुल्मशूलनुत् ॥८१॥

अथ टङ्कणनामगुणा ।

टङ्कणो मालतीजातो द्रावी लौहविशोधिद ॥८२॥

टङ्कणोऽग्निकरो रूक्ष कफघ्नो वातपित्तजित् ॥८३॥

अथ सुधाक्षार(चूर्ण)नामगुणा ।

सुधाख्य सुधा सौधभूषण कटुशर्करा ॥८४॥

सुधाक्षारोऽग्निसङ्काश पाकी क्लेदी विदारण ॥८५॥

अथ सर्वक्षारनामगुणा ।

पलाशतिलनालखदट्टकाकदलीभवा ।

अपामार्गोऽर्कमण्डूकामोचकादिसमुद्भवा ॥८६॥

क्षारा वह्निसमा सर्वे पाचना भेदिदारणा ।

लघव क्लेदिनस्तीक्ष्णा शुक्रला दृष्टिनाशना ॥८७॥

रक्तपित्तकरा घ्नन्ति विबन्धानाहपीनसान् ।

यकृत्प्लीहग्रहण्यर्शोगुल्मागमग्रहणीकृमीन् ॥८८॥

यो राज्ञां मुकुटतिलकः कटारमल्ल-
स्तेन श्रीमदनृपेण निर्मितेऽत्र ।
अन्येऽभ्युन्मदविनोदनाभिधः पूर्णः
गुडूच्यादिः खलु भिषजो हिताय वर्गः ॥८८॥

इति गुडूच्यादि द्वितीयवर्गः ।

—०—

अथ कर्पूरादिवर्गः ।

पारेय्यो पाण्डो नयवल्लयोभि-
र्वान्तं विनोदात्परिचुम्बिताग्र्यम् ।
पोतं पिबन्तं प्रतिघट्टदन्त-
मार्यर्ष्यभयुक्तं हरिमाश्रयामि ॥ १ ॥

अथ कर्पूरनामगुणाः ।

कर्पूरः स्फटिकचन्द्रः सिताभ्रो हिमवालुकः ।
हिमोपलः शीतरजो भूतिकस्तु हिमाह्वयः ।
हिमाह्वो घनसारश्च चन्द्राह्वयापि गीयते ॥ २ ॥
कपूरः शीतलो हृद्यश्चक्षुष्यो लेखनो लघुः ।
कफदाहास्यवैरस्यमेदःशीतविषापहः ॥ ३ ॥

अथ कस्तूरिकाह्वयनामगुणाः ।

कस्तूरिका मृगमदो वेधमुख्या मृगाण्डजः ।
मृगनाभिरथाऽन्या स्याल्लताकस्तूरिका मता ॥ ४ ॥
कस्तूरी शुक्रला गुर्वी कटुका कफशीतजित् ।
उग्रा हन्ति विषच्छर्दिशोफदौर्गन्ध्यमारुतान् ॥ ५ ॥
लताकस्तूरिका तद्वन्नेत्रया शीता लघुस्तथा ॥ ६ ॥

अथ मार्जारीनामगुणाः ।

मार्जारी पूतिका पूतिकजा स्याद् गन्धचेलिका ॥ ७ ॥
मार्जारी वान्तिमाधत्ते चक्षुष्या कफवातजित् ॥८॥

अथ श्वेतचन्दननामगुणाः ।

चन्दनं तिलपर्णं स्यान्महार्हं श्वेतचन्दनम् ।
भद्रश्रियं मलयजं गोशीर्षं गन्धसारकम् ॥ ९ ॥
चन्दनं शीतलं रूक्षं तिक्तमाह्लादनं लघु ।
हृद्यं वर्ण्यं विषश्वेत्मदाहपित्तास्रदाहजित् ॥ १० ॥

अथ रक्तचन्दननामगुणाः ।

रक्तचन्दनमुद्दिष्टं लोहितं क्षुद्रचन्दनम् ।
ताम्रसारं रक्तसारं ज्योतिःसोमश्च रञ्जनम् ॥ ११ ॥
रक्तं शीतं गुरु स्वादु छर्दिदृष्णास्रपित्तनुत् ।
तिक्तं नेत्रहितं ह्रद्यं व्रणविषापहम् ॥ १२ ॥

अथ पीतचन्दननामगुणाः ।

कालीयकं पीतसारं पीतं नारायणप्रियम् ॥ १३ ॥
कालीयकं रक्तगुणं विशेषात् पवनापहम् ॥ १४ ॥

अथ कृष्णागुरुनामगुणाः ।

कृष्णागुरु स्यादगुरु राजार्हं विश्वरूपकम् ।
लोध्रकं शीतमलिनं क्रिमिजग्धमनार्यकम् ॥१५॥
कृष्णागुरुघ्नं कर्णाक्षिरोगनुत्पित्तलं लघु ॥ १६ ॥

अथ कुङ्कुमनामगुणाः ।

कुङ्कुमं चारु घाङ्गोकं वर्ण्यं मञ्जिष्ठिलं वरम् ।
काश्मीरं पीतमभ्राह्व सङ्गीच पिशुनारुणम् ॥ १७ ॥
कुङ्कुमं कटुकं स्निग्धं शिरोरुग्व्रणजन्तुजित् ।
उष्णं हास्यकरं वर्ण्यं व्यङ्गदोषव्रयापहम् ॥ १८ ॥

अथ सिल्हकनामगुणाः ।

सिल्हकः कपिजो धूम्रमुरुष्कः पिण्डितः कपिः ॥१९॥
सिल्हकः कुष्ठकण्डूघ्नः स्निग्धोष्णः शुक्रकान्तिकृत् ॥२०॥

यो राजा मुक्तातिलकः कटारमल्ल-
स्तेन श्रीमदनभूपेण निर्मितेऽयं ।
पत्ये ऽभ्रमदविनोदनाभि धूर्णः
गुण्ठगादिः खलु भिषजो हिताय वर्गः ॥८८॥

इति गुण्ठगादि द्वितीयवर्गः ।

—•—

अथ कर्पूरादिवर्गः ।

पारीप्यो पाण्डी नयनसलीभि-
र्दीनं विनोदायरिचुम्बितास्यम् ।
ओष्ठं पिबन्तं प्रतिषद्दन्त-
मार्यर्ययुक्तं हरिमाश्रयामि ॥ १ ॥

अथ कर्पूरनामगुणाः ।

कर्पूरः स्फटिकचन्द्रः सिताभ्रो हिमवालुकः ।
हिमोपलः शीतरजो भूतिकम्तु हिमाह्वयः ।
हिमाह्वो घनसारश्च चन्द्राह्वश्चापि गीयते ॥ २ ॥
कपूरः शीतलो हृद्यश्चक्षुष्यो लेखनो लघुः ।
कफदाहास्यवैरस्यमेद.शोथविषापहः ॥ ३ ॥

अथ कस्तूरिकाह्वयनामगुणाः ।

कस्तूरिका मृगमदो वेधमुख्या मृगाण्डजः ।
मृगनाभिरथाऽन्या स्यान्नताकस्तूरिका मता ॥ ४ ॥
कस्तूरी शुक्रला गुर्वी कटुका कफशीतजित् ।
उष्णा हन्ति विषच्छर्दिशोफदौर्गन्ध्यमारुतान् ॥ ५ ॥
लताकस्तूरिका तद्वद्वेधा शीता लघुस्तया ॥ ६ ॥

अथ मार्जारीनामगुणाः ।

मार्जारी पूतिका पूतिकला स्याद् गन्धचेलिका ॥ ७ ॥
मार्जारी वान्तिमाधत्ते चक्षुष्या कफवातजित् ॥८॥

हृल्लासविषवल्यास्यशिरोरुग् वमिकासनुत् ॥३५॥

अथ गुडत्वचनामगुणाः ।

त्वचं वराङ्गं शकलं त्वग्चोचं तनुक वरम् ।
लटपर्णं घनं भृङ्गं गुडत्वक् स्वर्णभूमिकम् ॥३६॥
त्वचं लघूष्णं कटुकविषदं स्वादु पित्तलम् ।
हृद्धस्तिरोगवातार्शःपीनसक्रिमिमेहनुत् ॥३७॥

अथ तेजपत्रनामगुणाः ।

पत्र दलाढ्यं तापसं तमालं रोम रोमशम् ॥३८॥
पत्रमुष्णं लघु श्लेष्मच्छर्दिकासार्शोऽनिलापहम् ॥३९॥

अथ नागकेशरनामगुणाः ।

नागकेशरक नागं चाम्पेय केशरह्वयम् ॥४०॥
नागकेशरक रूक्षमुष्णं लघ्वामपाचनम् ।
दौर्गन्ध्यकुष्ठवीसर्पकफपित्तविषापहम् ॥ ४१ ॥

अथ त्रिजातचतुर्जातनामगुणाः ।

एलादि त्रिमिरुद्दिष्ट त्रिजात त्रिसुगन्धिकम् ॥४२॥
चतुर्जात सनागं तद्वय वातकफापहम् ॥४३॥

अथ तालीसपत्रनामगुणाः ।

तालीसपत्र तालीस धात्रीपत्र शुकोदरम् ।
अपर यन्त्रिकापत्र पत्राढ्य तुलसीच्छदम् ॥४४॥
तालीस लघु तीक्ष्णोष्णं श्वासकासकफानिलान् ।
रुच्यं निहन्ति गुल्मामवह्निमान्द्यक्षयामयान् ॥४५॥

अथ मरुवनामगुणाः ।

मरुवो मदनघण्टो नमेरुः पीतमञ्जकः ॥४६॥
मरुव. कण्ठकर्णाक्षिगदघ्नोष्णो लघुः कटुः ॥४७॥

अथ श्रीवासनामगुणाः ।

श्रीवासो वेष्टको दासो श्रीनिवासः कलिद्रुमः ॥४८॥

अथ एलवालुकनामगुणाः ।

एलवालुकमेल्वालु वालुकं हरिवालुकम् ॥२१॥
एल्वालु शीतलं हन्ति कण्डूकुष्ठकफक्रिमीन् ।
छर्दिकफपित्तास्रहृन्मूत्रगदजित् लघुः ॥ २२ ॥

अथ जातीफलनामगुणाः ।

जातीफलं जातीफलं वालकं मालतीसुतम् ॥२३॥
जातीफलं लघु स्वर्य्यं हृद्यं दीपनपाचनम् ।
उष्णं कफानिलछर्दिक्रिमिपीनसकासजित् ॥ २४ ॥

अथ जातीपत्रीनामगुणाः।

जातीपत्री जातीपर्णी मालतीपत्रिका तथा ॥२५॥
जातीपत्री लघूष्णा स्यात् कफक्रिमिविषापहा ॥ २६ ॥

अथ लवङ्गनामगुणाः ।

लवङ्गं शेखरं दिव्यं लवं चन्दनपुष्पकम् ।
श्रीपुष्पं देवकुसुमं भृङ्गारं वारिसम्भवम् ॥ २७ ॥
लवङ्गं लघु चक्षुष्यं हृद्यं दीपनपाचनम् ।
शूलानाहकफश्वासकासछर्दिक्षयापहम् ॥ २८ ॥

अथ कङ्कोलनामगुणाः ।

कङ्कोलं कटुकं कोलं मारोचं माधवोचितम् ॥२९॥
कङ्कोलमुष्णं हृद्रोगकफवातामिमान्द्यजित् ॥ ३० ॥

अथ सूक्ष्मैलानामगुणाः ।

एला त्रुटिश्चन्द्रबाला बहुला निष्कुटिस्त्रुसा ।
कपोतवर्णा सूक्ष्मैला कोरङ्गो द्राविड़ी मता ॥३१॥
एला सूक्ष्मा कफश्वासकासार्शोमूत्रकृच्छ्रनुत् ॥ ३२ ॥

अथ स्थूलैलानामगुणाः ।

स्थूलैला चिपुटा कन्या भद्रैला त्रिदिवोद्भवा ॥३३॥
स्थूलैला रोचनी तीक्ष्णा लघूष्णा कफपित्तजित् ॥३४॥

हृल्लासविषशूल्यास्यशिरोरुग् वमिकासनुत् ॥२५॥

अथ गुडत्वचनामगुणाः ।

त्वच वराङ्गं शकलं त्वग्चोचं तनुक वरम् ।
लटपर्णं घनं भृङ्गं गुडत्वक् स्वर्णभूमिकम् ॥२६॥
त्वचं त्वचूर्णं कटुकविपदं स्वादु पित्तलम् ।
हृदस्तिरोगवातार्शःपोनसक्रिमिशुक्रनुत् ॥२७॥

अथ तेजपत्रनामगुणाः ।

पत्र दलाङ्गं तापसं तमाल रोम रोमशम् ॥२८॥
पत्रमुष्ण लघु श्लेष्मच्छर्दिशार्शोऽनिलापहम् ॥ २९॥

अथ नागकेशरनामगुणाः ।

नागकेशरक नाग चाम्पेय केशरङ्गजम् ॥३०॥
नागकेशरक रूक्षमुष्ण लघ्वामपाचनम् ।
दौर्गन्ध्यकुष्ठवोसर्पकफपित्तविषापहम् ॥ ३१ ॥

अथ त्रिजातचतुर्जातनामगुणाः ।

एलादि त्रिभिरुद्दिष्ट त्रिजात त्रिसुगन्धिकम् ॥३२॥
चतुर्जात सनाग तद्वय वातकफापहम् ॥३३॥

अथ तालीसपत्रनामगुणाः ।

तालीसपत्र तालीस धात्रीपत्र शुकोदरम् ।
अपर गन्धिकापत्र पत्राढ्य तुलसीच्छदम् ॥३४॥
तालीस लघु तीक्ष्णोष्ण श्वासकासकफानिलान् ।
रुच्यं निहन्ति गुल्मामवह्निमान्द्यक्षयामयान् ॥३५॥

अथ सरलनामगुणाः ।

सरलो मदनश्चण्डो नमेरु पीतदुग्धकः ॥३६॥
सरल कण्डूकर्णाक्षिगदघ्नोष्णो लघुः कटुः ॥३७॥

अथ शीवासनामगुणाः ।

शीवासो वेटको दासो शैलिवास. कालिङ्गम' ॥३८॥

योवासः कफमूर्द्धाक्षिरोगवातहरः सरः ॥४८॥

अथ वालकनामगुणाः

वालक वारि क्षोदैरम्बिङ्गमाचमनं कचम्।
उदोच्यं वल्लमन्याह्वं वर्हिष्ठं गन्धमूलकम् ॥५०॥
वालक शीतलं रूक्षं लघु दीपनपाचनम्।
रक्तपित्तज्वरश्लेष्मदाहहृत्व्रणापहम् ॥५१॥

अथ जटामांसीद्वयनामगुणाः।

मांसी जटा भूतकेशी क्रव्यादा नलदं शिखा ॥५२॥
क्षपणाऽन्या पूतनाकेशी गन्धमांसी पिशाचिका ॥५३॥
मांसी हिमा त्रिदोषास्रदाहवीसर्पकुष्ठजित् ॥५४॥

अथ उशीरनामगुणाः।

उशीरमभय सेव्यं वीरं वीरणमूलिका ॥५५॥
उशीर पाचन शीत स्तम्भन कफपित्तजित्।
क्षयास्रविषवीसर्पदाहरक्तव्रणापहम् ॥५६॥

अथ रेणुकानामगुणाः।

रेणुका कपिला कौन्ती पाण्डुपत्री हरेणुका ॥५७॥
रेणुका पित्तला मेध्या यक्ष्मिणां गर्भपातिनी ॥५८॥

अथ प्रियङ्गुनामगुणाः।

प्रियङ्गु फलिनी श्यामा कान्ताङ्गा नन्दिनी लता ॥५९॥
प्रियङ्गुः शीतलो वान्तिदाहपित्तज्वरास्रजित्।
मुखकान्तिप्रजननो रुचिदौर्गन्ध्यनाशनः ॥६०॥

अथ परिपेलनामगुणाः।

परिपेल स्मृत पथ्य गुरुरुक्ष परिपेलवम् ॥६१॥
परिपेलं हिम वात कुष्ठास्रकफपित्तजित् ॥६२॥

अथ शैलेयनामगुणाः।

शैलेयं व्यधिर स्मृत शिलापुष्प शिलीध्रकम् ॥६३॥

शैलेयं शीतलं हृद्यं कफपित्तहरं लघु ॥ ६४ ॥

अथ लामज्जकनामगुणाः ।

लामज्जकं जलाधारं दीर्घमूलं जलाश्रयम् ।
इष्टकापथकं शीघ्रमशृणालं सुनालकम् ॥ ६५ ॥
लामज्जकं हिमं कच्छदाहदोषत्रयास्रजित् ॥ ६६ ॥

अथ कुन्दुरुनामगुणाः ।

कुन्दुरुर्मेचकः कुन्दः गोपुरो भीषणो बली ॥ ६७ ॥
कन्दुरुः स्वेदपवनश्लेष्मज्वरापहः ॥ ६८ ॥

अथ गुग्गुलुनामगुणाः ।

गुग्गुलुः कालनिर्य्यासो महिषाक्षः पलङ्कषः ।
जटायुः कौशिको धूर्त्तो देवधूपः शिवः पुरः ॥ ६९ ॥
गुग्गुलुर्विशदस्निग्धो वीर्य्योष्णो मधुरः सरः ।
भग्नसन्धानकृद् हृद्यः सूक्ष्मः स्रोतोविशोधनः ॥ ७० ॥
दीपनः पिच्छिलो बल्यः कफवातव्रणापची ।
मेदोमेहास्रवातास्र कोठकुष्ठाममारुतान् ॥ ७१ ॥
पिडकागण्डिगोफार्शोगण्डमालाक्रिमीन् जयेत् ।
स नवो हृद्यो हृद्य पुराणस्त्वतिलेखनः ॥ ७२ ॥

अथ रालानामगुणाः ।

राला सर्जरसो यक्षधूपसर्जोऽग्निवल्लभः ।
ललनः सालनिर्य्यासो बल, कललजश्च सः ॥ ७३ ।
राला हिमा गुरुस्निग्धा कषाया ग्राहिणी जयेत् ।
दोषास्रव्रणोसर्पविषव्रणविषादिकाः ॥ ७४ ॥

अथ स्थौणेयकनामगुणाः ।

स्थौणेयकं बर्हिशूडं शुकवर्हं शुकच्छदम् ॥ ७५ ॥
स्थौणेयं शीतलं हृद्य मेध्यं दोषत्रयापहम् ॥ ७६ ॥

अथ चोरकनामगुणाः ।

चोरकः कितवश्वण्डा दुष्पत्रः शङ्कितो रिपुः ॥ ७७ ॥
चोरः स्वादुर्लघुः शीतः कुष्ठवातकफास्रजित् ॥ ७८ ॥

अथ सुरानामगुणाः ।

सुरा गन्धवती दैत्या गन्धाढ्या सुरभिः कुटिः ॥ ७९ ॥
सुरा शीता लघुः कुष्ठग्रहपित्तानिलास्रजित् ॥ ८० ॥

अथ कचूरनामगुणाः ।

कचूरो द्राविड़ो गन्धमूलको दुर्लभः शटी ॥ ८१ ॥
कचूरो दीपनो रुच्यः कुष्ठार्शोव्रणकासजित् ।
उष्णो लघुर्जयेत् श्वासगुल्मवातकफक्रिमीन् ॥ ८२ ॥

अथ शटीनामगुणाः ।

शटी पलाशी षड्ग्रन्था सुव्रता गन्धमूलिनी ॥ ८३ ॥
शटी तिक्ता ज्वरामाघ्नकासजिद् वाह्निणी लघुः ॥ ८४ ॥

अथ सृक्कानामगुणाः ।

सृक्काऽसृक् ब्राह्मणी देवी निर्माल्या कोटिका मधूः ॥८५॥
सृक्का स्वादु स्निग्धा हृद्या कुष्ठाऽश्मरीविदोषनुत् ॥ ८६ ॥

अथ ग्रन्थिपर्णनामगुणाः ।

ग्रन्थिपर्णी नीलपुष्पः शुकपुष्पं शुकच्छदम् ॥ ८७ ॥
ग्रन्थिपर्णी लघुस्तिक्तः वातघ्नः कफपित्तजित् ॥ ८८ ॥

अथ नलिकानामगुणाः ।

नलिका नर्त्तको शून्या निर्मध्या धमनो नटी ॥ ८९ ॥
नली पित्तास्रजित् शीता चक्षुष्या कुष्ठकृच्छ्रजित् ॥९०॥

अथ पद्मकनामगुणाः ।

पद्मक माल्यपत्रोत्तरकाश्च सुप्रभः ॥ ९१ ॥
पद्मकं दाहविस्फोटकुष्ठश्रमपित्तहृत् ।
गर्भसंस्थापनं शीतं व्रण्यं सर्पविषापहम् ॥९२॥

अथ प्रपौण्डरीकनामगुणाः ।

प्रपौण्डरीकं पौण्ड्राह्वं गतपुष्पं सुपुष्पकम् ॥९३॥
पौण्ड्राह्वं शुक्लं शीतं चक्षुष्यं श्लेष्मपित्तजित् ॥९४॥

अथ तगरद्वयनामगुणाः ।

तगरं वर्हिणं जिह्मं वक्राह्वं नहुषं नतम् ।
अपरं पिण्डतगरं दीर्घं कटु महोरगम् ॥९५॥
तगरं मधुरं स्निग्धं तिक्तोष्णं लघु भूतजित् ।
विषापस्मारमूर्छाक्षिरोगदोषत्रयापहम् ॥९६॥

अथ गोरोचनानामगुणाः ।

गोरोचना रुचिर्गौरी रोचना पिङ्गला मता ।
मङ्गल्या गौतमी मेध्या धन्या गोपित्तसम्भवा ॥९७॥
रोचना शीतला वश्या गर्भस्रावग्रहान्त्रजित् ॥९८॥

अथ नखद्वयनामगुणाः ।

नखाह्वो नखरः शुक्ति हनुर्नागहनुः खुरः ।
शफः शङ्खो व्याघ्रनखमन्यस् व्याघ्रतलं पदम् ॥९९॥
नखद्वयं ग्रहघ्नं सवातास्रज्वरकुष्ठजित् ।
स्निग्धोष्णं शुक्लवर्णं हृद्यं स्वादु विषापहम् ॥१००॥

अथ पत्तङ्गनामगुणाः ।

पत्तङ्गं पद्मरागं स्यादक्तकाष्ठं कुचन्दनम् ।
सुरङ्गदं सुरङ्गश्च पत्तूरं पट्टरञ्जकम् ॥१०१॥
पत्तङ्गं मधुरं शीतं पित्तश्लेष्मव्रणास्रजित् ॥१०२॥

अथ लाक्षालक्तकनामगुणाः ।

लाक्षा निर्भर्त्सना रक्ता द्रुमव्याधिः पलङ्कषा ।
क्रिमिजा जतु दीर्घाह्वा यावकोऽलक्तको मतः ॥१०३॥
लाक्षा वर्ष्या हिमा बल्या स्निग्धा श्लेष्मास्रपित्तजित् ।
व्रणोरःक्षतवीसर्पक्रिमिकुष्ठगदापहा ॥१०४॥

अलर्कको गुणैस्तद्वद् वटः विशेषाद् व्रणनाशनः ॥१०५॥

अथ पर्पटीनामगुणाः ।

पर्पटो रक्तनो क्षत्रा जतुका जननी जनी ॥१०६॥
पर्पटो वर्णदा शीता कफपित्तासृकुष्ठजित् ॥१०७॥

अथ पद्मिनीकैरविणीनामगुणाः ।

पद्मिनो विसिनो ज्ञेया नलिनी सूर्यवल्लभा ॥१०८॥
कुमुदतो कैरविणो कुमुदिन्युडुपप्रिया ॥१०९॥
पद्मिनी शीतला गुर्वी पित्तस्थे पविषासृजित् ।
रूक्षा विष्टम्भिनी स्वादुस्तद्वत् कुमुदिनी मता ॥११०॥

अथ पद्मचारिणीनामगुणाः ।

पद्मचारिण्यतिचरा पद्माक्षा चारटी मता ॥१११॥
पद्माऽनुष्णा कटुस्तिक्ता कषाया कफवातजित् ।
मूत्रकृच्छ्राऽश्मशूलघ्नो श्वासकासविषापहा ॥११२॥

अथ श्वेतकमलनामानि ।

कमल श्वेतमम्भोजं सारस सरसीरुहम् ।
महत्पत्रं शौण्डिकं शतपत्रं कुशेशयम् ॥११३॥
पङ्केरुह तामरस राजीवं पुष्करद्वयम् ।
अब्जमम्भोरुह पद्म पुण्डरीकं च पङ्कजम् ।
नलं सरोजं नलिनमरविन्दं महोत्पलम् ॥११४॥

अथ रक्तोत्पलनामानि ।

रक्तोत्पलं कोकनद इक्षकं रक्तमन्यकम् ॥११५॥

अथ नीलोत्पलनामानि ।

नीलोत्पलं कुवलय भद्रमिन्दीवरं सतम् ॥ ११६ ॥

अथ कुमुदनामानि ।

श्वेतं कुवलयं प्रोक्तं कुमुदं कैरवं कुमुद् ॥११७॥

अथ कमलादिगुणाः ।

कमलं शीतलं वर्ण्यं मधुरं कफपित्तजित् ।
दृष्णादाहास्रविस्फोटविषवीसर्पनाशनम् ॥११८॥
तस्मादल्पगुणं किञ्चिदन्यद्रक्तोत्पलादिकम् ॥११९॥

अथ कह्लारनामगुणाः ।

कह्लारं श्लेष्मपायोजं सौम्यं सौगन्धिकं महत् ॥१२०॥
कह्लारं ग्राहि विष्टम्भि रूक्षं गुरु सुशीतलम् ॥१२१॥

अथ किञ्जल्कनामगुणाः ।

किञ्जल्कः केशरं गौरमापीतं काञ्चनाह्वयम् ॥१२२॥
किञ्जल्कः शीतलो ग्राही रक्तार्शःकफपित्तजित् ॥१२३॥

अथ पद्मबीजनामगुणाः ।

पद्मबीजं तु गालोड्यं पद्माक्षं पद्मकर्कटी ॥१२४॥
पद्मबीजं हिमं स्वादु गर्भसंस्थापकं गुरु ।
कफवातकरं वल्यं ग्राहि पित्तासृदाहजित् ॥१२५॥

अथ मृणालशालूकनामगुणाः ।

मृणालं बिसमम्भोज नालञ्च नलिनीदलम् ॥१२६॥
पद्मादिमूलं शालूकं शालीनं करहाटकम् ॥१२७॥
मृणालं शीतलं हृद्यं पित्तदाहासृजिद् गुरु ।
संग्राहि मधुरं रूक्षं शालूकमपि तद्गुणम् ॥१२८॥

अथ जातीद्वयनामगुणाः ।

जाती प्रियवदा राज्ञी मालती सुमना मता ।
पीता जात्यपरा पीतपुष्पा काञ्चनपुष्पिका ॥१२९॥
जाती लघ्वग्निदोषार्त्तिव्रणरक्तजित् ॥१३०॥

अथ मल्लिकानामगुणाः ।

मल्लिका मोदिनी मुक्तबन्धना मोदयन्तिका ॥१३१॥
मल्लिकोष्णा लघुर्ह्यग्निवातपित्तासरोगजित् ॥१३२॥

अथ यूथिकाह्वयनामगुणाः ।

यूथिका हरिणी बाला पुष्पगन्धा गिरिखण्डिनी ।
स्वर्णयूथ्याऽपरा पीता गणिका स्वर्णपुष्पिका ॥१३३॥
यूथी हिमास्रमूर्छाग्निरोगजित् कफवातकृत् ॥१३४॥

अथ कुब्जकाह्वयनामगुणाः ।

कुब्जका भद्रतरुणी हृद्यपुष्पा महासहा ।
शतपत्री तरुण्युक्ता कर्णिका चारुकेशरा ॥१३५॥
रक्ताऽपरा रक्तपुष्पा लाक्षापुष्पाऽतिमञ्जुला ॥१३६॥
शतपत्री हिमा हृद्या ग्राहिणी गुरुला लघुः ।
दोषत्रयास्रजिद् वर्ण्यमपरोऽपि च तद्गुणः ॥१३७॥

अथ केतकीह्वयनामगुणाः ।

केतकी सूचिकापुष्पो जम्बूकः ककचच्छदः ॥१३८॥
सुवर्णकेतकी धान्या लघुपुष्पा सुगन्धिनी ॥१३९॥
केतकी कटुका स्वादुर्लघुस्निग्धा कफापहा ॥१४०॥

अथ वासन्तीनामगुणाः ।

वासन्ती सारणी कुन्दा प्रहसन्ती वसन्तजा ॥ १४१॥
वासन्ती शीतला लघ्वी तिक्ता दोषत्रयास्रजित् ॥१४२॥

अथ नैपालीह्वयनामगुणा ।

नैपाली प्रेमिका लूता लापिनी वनमल्लिका ॥१४३॥
वार्षिकी विपुटा वन्या श्रीवल्ली षट्पदप्रिया ॥१४४॥
नेपाली शीतला तिक्ता लघ्वी दोषत्रयापहा ।
कर्णाक्षिमुखरोगघ्नी तद्गुणा वार्षिकी मता ॥१४५॥

अथ माधवीनामगुणाः ।

माधवी मण्डपः कामी पुष्पेन्द्रोऽतीष्टगन्धकः ॥१४६॥
माधवी मधुरा शीता लघ्वी दोषत्रयापहा ॥१४७॥

अथ चम्पकनामगुणाः ।

चम्पकः काचरो रम्यस्ताम्रेयः सुरभिश्चलः ॥१४८॥

चम्पकः शीतलः कृच्छ्रकफपित्तास्रवातजित् ॥१४८॥

अथ पुन्नागनामगुणाः ।

पुन्नागः पाटलीपुष्पः केशरः षट्पदालयः ॥१५०॥

पुन्नागो मधुरः शीतो रक्तपित्तकफापहः ॥१५१॥

अथ वकुलनामगुणाः ।

वकुलः केशरो मद्यगन्धः सिंही विशारदः ॥१५२॥

वकुलः शीतलः श्लेष्मपित्तदन्तगदापहः ॥१५३॥

तत्फलं वातलं ग्राहि कफपित्तहरं हिमम् ॥१५४॥

अथ बुकनामगुणाः ।

बुकः हृकः स्थूलपुष्पो वसुकः शिवशेखरः ॥१५५॥

बुकः शीतो विषश्लेष्मपित्तकृच्छ्राश्मदाहहृत् ॥१५६॥

अथ कुन्दनामगुणाः ।

कुन्दः शुक्लः सदापुष्पो भृङ्गबन्धुर्मनोरमः ॥१५७॥

कुन्दः शीतो लघुः श्लेष्मशिरोरुग्विषपित्तजित् ॥१५८॥

अथ मुचुकुन्दनामगुणाः ।

मुचुकुन्दः पेत्रहृच्छर्दिवृक्क प्रतिविषणुकः ॥१५९॥

मुचुकुन्दः शिरःपीडापित्तास्रविषनाशनः ॥१६०॥

अथ विचच्छिल्लनामगुणाः ।

भूमण्डली विचच्छिल्लो द्विपदाष्टपदी तथा ॥१६१॥

शीतो लघुर्विचच्छिल्लः कफपित्तविषापहः ॥१६२॥

अथ तिलकनामगुणाः ।

तिलकः क्षुरकः श्रीमान् पिचिलो सुखमण्डनः ॥१६३॥

तिलकः कफनुत् कुष्ठहरोऽत्युष्णो रसायनः ॥१६४॥

अथ गणेरुकनामगुणाः ।

गणेरुकः कर्णिकारः कर्णिकारिका ॥१६५॥
गणेरुः शोधनः शोफघ्ने व्रणकुष्ठनुत् ॥१६६॥

अथ बन्धूकनामगुणाः ।

बन्धुजीवः शरत्पुष्पो बन्धुः बन्धूकः रक्तकः ॥१६७॥
बन्धुकः कफकृद् ग्राही रक्तपित्तहरो लघुः ॥१६८॥

अथ जपात्रिसन्ध्यापुष्पनामगुणाः ।

जपाऽसितं जपारक्तं त्रिसन्ध्या सारुणा सिता ॥१६९॥
जपा संग्राहिणी केश्या त्रिसन्ध्या कफपित्तजित् ॥१७०॥

अथ सिन्दूरीनामगुणाः ।

सिन्दरो रक्तबीजा स्याद्रक्तपुष्पा सुकोमला ॥१७१॥
सिन्दरो कफपित्तास्रतृष्णावान्तिहरा हिमा ॥१७२॥

अथ तुलसीनामगुणाः ।

तुलसी सुरसा गौरी भूतघ्नी बहुमञ्जरी ॥१७३॥
तुलसी कटुका तिक्ता हृद्योष्णा दाहपित्तकृत् ।
दीपनी कुष्ठकृच्छ्रास्रपार्श्वरुक् कफवातजित् ॥१७४॥

अथ मरुयकनामगुणाः ।

मरुमरुयकस्तीक्ष्णः सुरपुष्पः फणिज्झकः ॥१७५॥
मरुरग्निप्रदो हृद्यस्तीक्ष्णोष्णः पित्तलो लघुः ।
हृद्विकादिविषश्लेष्मवातकुष्ठकृमीन् जयेत् ॥१७६॥

अथ दमननामगुणाः ।

दमनो मदनो दान्तो दमो मुनिसुतो मुनिः ।
गन्धोत्कटो दमनको विनीतः कुलपत्रकः ॥१७७॥
दमनोऽक्षिरुक्कुष्ठास्रभेदकण्डूविदोषजित् ॥१७८॥

अथ वर्वरीशयनामगुणाः ।

वर्वरी अर्जकः कुण्ठो वैकुण्ठः स्यात् कुठेरकः ॥१७९॥

कपित्थार्जक इत्यन्यो वटपत्रः कठिञ्जरः ॥१८०॥
क्षणार्जकः कालमालः कराल: क्षणमक्षिका ॥१८१॥
वर्वरी वितयं रूक्षं शोतं कटु विदाहि च ।
पित्तलं कफवातास्रदद्रुक्रिमिविषापहम् ॥१८२॥
यो राज्ञां मुखतिलकः कटारमल्ल-
स्तेन श्रीमदनृपेण निर्मितेऽत्र ।
ग्रन्थेऽभूत् मदनविनोदनाभिधे पूर्णः
कर्पूरप्रभृतिसुगन्धिद्रव्यवर्गः ॥१८३॥
इति कर्पूरादि चतोयवर्गः ।

—०—

अथ सुवर्णादिवर्गः ।

यद्दाज्ञया विश्वकृतोऽपि देवा
ब्रह्मादयो यान्ति मुहुर्भवन्ति ।
अचिन्त्यरूपं पुरुषं पुराणं
गोपत्वमासं तमुपास्ययामि ॥ १ ॥

अथ सुवर्णनामगुणाः ।

सुवर्णं काञ्चनं हेम हाटकं तप्तकाञ्चनम् ।
चामीकरं शातकुम्भं तपनीयं च रुक्मकम् ।
जाम्बूनदं हिरण्यं च कनकं जातरूपकम् ॥ २ ॥
सुवर्णं शीतलं हृद्यं वय्यं गुरु रसायनम् ।
कान्तिकरं विषोन्मादत्रिदोषज्वरशोषजित् ।
कषायं मिष्टमधुरं सुवर्णं गुरु लेखनम् ॥ ३ ॥

अथ रूप्यकनामगुणाः ।

रूप्यकं रजतं रूप्यं तारं श्वेतं वसूत्तमम् ॥ ४ ॥

रूप्यं शीतं सरं पातपित्तहारि रसायनम् ।
लेखनञ्च कषायाम्लं स्वादुपाकरसं शुभम् ।
वयसः स्थापनं स्निग्धं धातूनां हितमुच्यते ॥५॥

अथ ताम्रनामगुणाः ।

ताम्रं म्लेच्छमुखं शुल्वं नेपालं रविनामकम् ।
उदुम्बरं सूर्यप्रियं रक्तजं रक्तधातुकम् ॥ ६ ॥
ताम्रं सरं लघु स्वादु शीतं पित्तकफापहम् ।
रोपणं पाण्डुकुष्ठार्शःक्षयथुश्वासकासजित् ॥ ७ ॥

अथ कांस्यनामगुणाः ।

कांस्यं दीप्तं लोहं घोषं वङ्गिलोहं प्रकाशकम् ॥ ८ ॥
कांस्यं गुरूष्णं चक्षुष्यं कफपित्तहरं सरम् ॥ ९ ॥

अथ पीतलोहनामगुणाः ।

पीतलोहं सिंहलकं कपिलं सौकुमारकम् ।
वर्त्तलोहं त्रिलोहञ्च राजरीतिर्महेश्वरी ॥१०॥
पीतलोहं हिमं रूक्षं कटूष्णं कफपित्तनुत् ॥११॥

अथ रङ्गनामगुणाः ।

रङ्गक तीरकं वङ्गं त्रपु स्यात् करटी घनम् ॥१२॥
रङ्गं लघु सरं रूक्षमुष्णं मेहकफक्षयान् ।
निहन्ति पाण्डुं सश्वासं हृद्यमीषत् तु पित्तलम् ॥१३॥

अथ यशदनामगुणाः ।

यशदं रङ्गसदृशं रीतिहेतुश्च तन्मतम् ॥१४॥
यशद तुवरं तिक्तं शीतलं कफपित्तहृत् ।
चक्षुष्य परमं मेहान् पाण्डुं श्वासञ्च नाशयेत् ॥१५॥

अथ सीसनामगुणाः ।

सीसं धातुमलं नागपुरक परिपिटकम् ।
यवनेष्टं च भुजगो योगेष्टं कल्यकं विदुः ॥१६॥

सोसं रङ्गगुणं ज्ञेय विशेषात्मेहनाशनम् ॥१७॥

अथ लोहतत्किट्टनामगुणाः ।

लोहं श्रस्त्रायसं कुष्ठं ध्यङ्गं पारावतं घनम् ।
कृष्णायस्तन्मलं किट्टं मण्डूरो लोहज रजः ॥१८॥
लौहं सरं गुरु स्नाटु कषायं कफपित्तनुत् ।
शीतं नेत्रहितं रूक्षं बलद वातलं सरम् ।
शोफकुष्ठप्रमेहार्शोगरपाण्डुक्रिमीन् जयेत् ॥१९॥
सल्किट्टं तद्गुणं ज्ञेय विशेषात् पाण्डुनाशनम् ॥२०॥

अथ पारदनामगुणाः ।

पारदश्चपलो हेमनिधिः सूतो रसोत्तमः ।
त्रिनेत्रो रोपणः स्वामी हरबीजं रसः प्रभुः ।
रसेन्द्रश्च इति ख्यातो रसलोहं महारसः ॥२१॥
पारदः क्रिमिकुष्ठघ्नश्चक्षुष्योष्णो रसायनः ॥२२॥

अथ अभ्रकनामगुणाः ।

अभ्रकं स्वच्छमाकाश पटलं वरपोतकम् ॥२३॥
अभ्रं गुरु हिमं बल्य कुष्ठमेहक्षिदोषनुत् ॥२४॥

अपरच्च ।

गगनं क्रमिकुष्ठमेहहा विशदं शुक्रकरच्च दीपनम् ।
कथितं मुनिभिश्च पूर्वजै र्बलकृत् शुक्रकरच्च सेवितम् ॥२५॥

अथ गन्धकनामगुणाः ।

गन्धः सौगन्धिको लेखो गन्धाश्मा गन्धपीतकः ।
लेखीनको बलियसा वेगन्धो गन्धको बलिः ॥२६॥
गन्धकः कटुकः पाके वीर्योष्णः पित्तलः सरः ।
हन्ति कुष्ठक्षयश्लेष्मकफवातान् रसायनः ॥२७॥

अथ सुवर्णमाक्षिकनामगुणाः ।

माक्षिकं धातुमाक्षीकं ताप्यं तापोजमुच्यते ॥२८॥

माक्षिकं तुवरं ह्यं स्वर्यं लघु रसायनम् ।
चक्षुष्यं कुष्ठगोफार्शोमेहवल्यर्त्तिपाण्डुताः ।
व्यपायि कटुकं हन्ति कुष्ठोदरविषव्रणान् ॥२८॥

अथ मनःशिलानामगुणाः ।

मनःशिला शिला गोला नैपालो कुनटी कुला ।
दिव्यौषधिर्नागमाता मनोगुप्ता मनोऽम्बिका ॥२०॥
मनःशिला कफ्फहरा सरोष्णा लेखनो कटुः ।
तिक्ता स्निग्धा विषश्वासकासभूतकफापहा ॥२१॥

अथ हरितालनामगुणाः ।

हरितालमलं तालं गोदन्तं नटभूषणम् ॥२२॥
हरितालं कटु स्निग्धं कषायोष्णं विषं जयेत् ।
कण्डूकुष्ठाम्यरोगामृक्कफपित्तव्रणान् ॥२३॥

अथ गैरिकनामगुणाः ।

गैरिकं रक्तपाषाणं गिरिसृज्ञ गवेधुकम् ॥२४॥
स्वर्णवर्णं तथा स्वर्णमगर्भं स्वर्णगैरिकम् ॥२५॥
गैरिकं दाहपित्तास्रकफहिक्काविषापहम् ।
चक्षुष्यमन्यत् सदृश्य विशेषाद्वान्तिनाशकम् ॥२६॥

अथ तुत्थद्वयनामगुणाः ।

तुत्थञ्जपरिका तुल्थमग्नितुत्थञ्च मुच्यते ॥२७॥
मयूरग्रीवकं चान्यत् गिरिकण्ठं च तुत्थकम् ॥२८॥
तुत्थकं लेखनं भेदि कण्डूकुष्ठविषापहम् ।
कफकृमिहरं तदद्यत् चक्षुष्यमुत्तमम् ॥२९॥

अथ कासीसद्वयनामगुणाः ।

कासीसं धातुकासीसं शैलेयं तालसोमजम् ॥३०॥
अपरं पुष्पकासीसं तुवरं वज्रसारकम् ॥३१॥
कासीसद्वयमग्नोष्णं तिक्तं क्लेद्यं हरेत् कृमीन् ।

हन्ति कण्डूविषश्वित्रमूत्रकृच्छ्रकफानिलान् ॥४२॥

अथ हिङ्गुलनामगुणाः ।

हिङ्गुलं दरदं म्लेच्छं सैकतं चूर्णपारदम् ॥४३॥
हिङ्गुलं पित्तकफनुत् चक्षुष्यं विषकुष्ठहृत् ॥४४॥

अथ सिन्दूरनामगुणाः ।

सिन्दूरं नागजं रक्तं शोणं शृङ्गारभूषणम् ।
यसल्लमण्डनं नागरक्तं रक्तरजस्तथा ॥४५॥
सिन्दूरमुष्णं वीसर्पकुष्ठकण्डूविषापहम् ।
व्रणसन्धानजननं व्रणशोधनरोपणम् ॥४६॥

अथ सौवीरस्रोतोऽञ्जननामगुणाः ।

सौवीरमञ्जनं रूक्षं कालनीलं सुवीरजम् ॥४७॥
स्रोतोऽञ्जनं तु स्रोतोजं नदीजं यामुनं वरम् ॥४८॥
सौवीरं याहि मधुरं चक्षुष्यं कफवातजित् ।
सिध्मक्षयास्रनुत् शीतं स्रोतोऽञ्जनमपोट्टयम् ॥४९॥

अथ रसाञ्जननामगुणाः ।

रसाञ्जनं रसोद्भूतं तार्क्ष्यशैलञ्च तार्क्ष्यजम् ।
रसाग्र्यं क्षतिमं तार्क्ष्यं दार्व्यं दार्वीरसोद्भवम् ॥५०॥
रसाञ्जनं कटु श्लेष्ममुखनेत्रविकारजित् ।
व्रणं रसायनं तिक्तं छेदनं व्रणदोषजित् ॥५१॥

अथ पुष्पाञ्जननामगुणाः ।

पुष्पाञ्जनं पुष्पकेतु. रीतिक कुसुमाञ्जनम् ॥५२॥
पुष्पाञ्जनं हिमं प्रोक्तं कासार्त्तिपटलापहम् ॥५३॥

अथ गिलाजतुनामगुणाः ।

गिलाजत्वश्मजं शैलनिर्यासो गिरिजाह्वयम् ।
गिलाह्वं गिरिजं शैल शैलेयं गिरिजत्वपि ॥५४॥
गिलाजतूष्णं कटुकं योगवाहि रसायनम् ।

छर्दिप्रमेहवातार्शः कुष्ठमेदाश्मशर्कराः ।
हन्ति श्वासक्षयोन्मादरक्तश्लीपदकफक्रिमीन् ॥५५॥

अथ वोलद्वयनामगुणाः ।

वोलं गन्धरसं वोरं निर्लोहं वर्वरं रसम् ।
सुगन्धि सौरभं पिण्डं रसगन्धश्च तद्विधा ॥५६॥
वोलं रक्तहरं शीतं मेध्यं दीपनपाचनम् ।
ज्वरापस्मारकुष्ठघ्नं गर्भाशयविशोधनम् ॥५७॥

अथ स्फटिकादिनामगुणाः ।

स्फटिकाख्याऽमृता मृत्स्ना काङ्क्षी सौराष्ट्रसम्भवा ॥५८॥
आढकी तुवरी वन्या मृत्तिका सुरमृत्तिका ॥५९॥
स्फटिकाख्या कषायोष्णा कफपित्तविषव्रणान् ।
निहन्ति श्वित्रवीसर्पान् तुवरी तद्गुणा मता ॥६०॥

अथ समुद्रफेननामगुणाः ।

समुद्रफेनो डिण्डीरः फेनो वारिकफो द्विजः ॥६१॥
समुद्रफेनश्चक्षुष्यो लेखनः शमनः सरः ॥६२॥

अथ प्रवालनामगुणाः ।

प्रवालं विद्रुमं सिन्धुं लताग्रं रक्तवर्णकम् ॥६३॥
पुष्टिकान्तिबलकरं वर्हनं वलशुक्रयोः ॥६४॥

अथ मौक्तिकनामगुणाः ।

मौक्तिकं तौतिला मुक्ताफलं सुक्ता च शुक्तिजम् ॥६५॥
मौक्तिकं मधुरं शीतं रोगघ्नं विषनाशनम् ।
हृद्यं नेत्रहितं वल्यं राजयक्ष्मगदापहम् ॥६६॥

अथ माणिक्यनामानि ।

माणिक्यं पद्मरागं स्यात् वसु रत्नं सुरत्नकम् ॥६७॥

अथ सूर्यकान्तनामानि ।

सूर्यकान्तः सूर्यमणिः सूर्याश्मो दहनोपलः ॥६८॥

अथ चन्द्रकान्तनामानि ।

चन्द्रकान्तचन्द्रमणि स्फटिक स्फटिकोपल ॥६८॥

अथ गोमेदनामानि ।

गोमेद सुन्दर पीत रत्न दृणचर तथा ॥७०॥

अथ हीरकनामानि ।

हीरक भिदुर वज्र सूचीवक्त्र वरारकम् ॥७१॥

अथ नील वैदूर्य्ययो नामानि ।

नीलरत्न नीलमणि वैदूर्य्य बालवायजम ॥७२॥

अथ मरकतमणिनामानि ।

मारुत्मत मरकतमश्मगर्भो हरिन्मणि ॥७३॥

अथ मुक्तास्फोटनामगुणा ।

मुक्तास्फोटोऽब्धिमण्डूकी शुक्तिमौक्तिकमन्दिरम ॥७४॥

शुक्तिकान्तिकरी स्निग्धा रुच्या श्वासशूलासृहृत् ॥७५॥

अथ प्रवालादिनामगुणा ।

प्रवालसुक्तिमाणिक्यसूर्य्यशीतकरोपला ।

गोमदवज्रवैदूर्य्यनीलमारुत्मतादय ॥७६॥

चक्षुष्या लेखनो शीता कषाया मधुरा सरा ।

माङ्गल्या धारणादाढ्य दुष्टग्रहविषापहा ॥७७॥

अथ शङ्खनामगुणा ।

शङ्खकम्बुर्जलचरो वारिजो दीर्घनि स्वन ॥७८॥

शङ्खो हि कटुक पाके कषायो मधुरो लघु ।

चक्षुष्यो लेखन पड्क्तिशूलश्वासकफास्रजित् ॥७९॥

अथ लघुशङ्खकपर्दक नामगुणा ।

शङ्खो लघु शङ्खनख शम्बूका वारिशम्बय ।

कपर्दो शुल्लका प्रेयाघराचरा वराटका' ॥८०॥

लघु पञ्चादयः शीता नेत्ररुक्स्फोटनाशनाः ॥८१॥

अथ खटोद्भवनामगुणाः ।

खटिका कठिनो चापि लेखनी श्वेतधातुकः ॥८२॥
तद्भेदो गौरपाषाणः क्षीरोनाम्ना उदाहृतः ॥८३॥
खटो दाहास्रनुत् शीता गौरग्रावापि तद्गुणः ॥८४॥

अथ पङ्कवालुकयोः नामगुणाः ।

पङ्कः कर्दमको ज्ञेयो वालुकाः सिकतास्तथा ॥८५॥
पङ्को दाहास्रपित्तार्त्तिशोथघ्नः शीतलः सरः ।
वालुका लेखनी शीता व्रणोरःक्षतनाशिनी ॥८६॥

अथ चुम्बकपाषाणनामगुणाः ।

चुम्बकः कान्तपाषाणो यस्कान्तो लोहकर्षकः ॥८७॥
चुम्बको लेखनः शीतो मेदोविषगरापहः ॥८८॥

अथ काचनामगुणाः ।

काचः क्षचिमरदं स्यात् विगुणः काचभाजनम् ॥८९॥
काचो विदारणो रूक्षरक्तघ्नो लेखनो लघुः ॥९०॥

यो राज्ञां मुखतिलकः खटारमल्ल-
स्तन श्रीमदनभूपेण निर्मितेऽत्र ।
ग्रन्थेऽभूत् मदनविनोदनाभि धूर्ण-
पिण्डोऽय लक्षितपदैः सुवर्णवर्गः ॥९१॥

इति सुवर्णादि चतुर्थवर्गः ।

— —

अथ वटादिवर्गः ।

करेण संगृह्य सुधी मक्षिकाः पयः विशस्तं पुरुषं पुराणम् ।
त्रिशिखलोभं परिग्रहलोभं समाप्तलोभं गिरमाश्रयामि ॥१॥

अथ वटनामगुणा ।

वटो रक्तफला क्षीरी बहुपादो वनस्पति ।
यज्ञावास पदारोही न्यग्रोध स्कन्धजो ध्रुव ॥२॥
वट शीतो गुरुर्ग्राही कफपित्तव्रणापह ॥३॥

अथ पिप्पलनामगुणा ।

पिप्पल श्यामलोऽश्वत्थ क्षीरद्रुचो गजाशन ।
हरिवासश्चलदलो मङ्गल्यो बोधिपादप ॥४॥
पिप्पलो दुर्जर शीत पित्तश्लेष्मव्रणास्रजित् ॥५॥

अथ पारिभोऽश्वत्थनामगुणा ।

पारिभोऽन्य फलोग्र स्यात् कपिचूत कपीतन ॥६॥
पारिभोऽश्वत्थको हृद्य स्निग्ध श्लेष्मरुमिप्रद ॥७॥

अथ उदुम्बरनामगुणा ।

उदुम्बर क्षीरद्रुचो जन्तुद्रुच सदाफल ।
हेमदुग्ध कृमिफलो यज्ञाङ्ग शीतवल्कल ॥८॥
उदुम्बरो हिमो वर्ण्यो कफपित्तास्रजिद् गुरु ॥९॥

अथ काकोदुम्बरिकानामगुणा ।

काकोदुम्बरिका फल्गुर्मलपूथित्वभेषजम् ॥१०॥
काकोदुम्बरिका तद्वत् विशेषात् श्वित्रनाशिनी ॥११॥

अथ प्लक्षनामगुणा ।

प्लक्ष प्लवशिरुद्रुच सुपार्श्वो गर्दभाण्डक ।
वटी कमण्डलुर्यूप पिप्परिशाकदर्शन ॥१२॥
प्लक्ष शीतो व्रणश्लेष्मपित्तशोथविसर्पजित् ॥१३॥

अथ पञ्चक्षीरद्रुचनामगुणा ।

न्यग्रोधोदुम्बरोऽश्वत्थपारीभप्लक्षपादपा ।
पञ्चैते क्षीरिण प्रोक्तास्तेषा त्वक् पञ्चवल्कला ॥१४॥
त्वक्पञ्चक हिम ग्राहि व्रणशोथविसर्पजित् ॥१५॥

केचित् तु पारोग्यस्थाने गिरीषं वेतसंऽपरे ॥१६॥
चोरट्टचा हिमा वर्ष्या योनिदोषव्रणापहाः ।
गोफपित्तकफास्रघ्नाः स्तन्या भग्नास्थियोगदाः ॥१७॥
तेषां पत्रं हिमं ग्राहि कफवातासृगुत् लघुः ॥१८॥
फल विष्टम्भि संग्राहि रक्तपित्तकफापहम् ॥१९॥

अथ नन्दीवृक्षनामगुणाः ।
नन्दीवृक्षोऽश्वत्थभेदः प्ररोही गजपादपः ॥२०॥
नन्दीवृक्षोऽश्वत्थगुणो लघूष्णो गरनुत् पुनः ॥२१॥

अथ कदम्बद्वयनामगुणाः ।
कदम्बो गन्धमृत्पुष्पः प्राव्रषेण्यो मनोन्मतिः ॥२२॥
अन्यो धूलिकदम्बः स्यात् नीपो राजकदम्बकः ॥२३॥
कदम्बः शीतलः श्लेष्मपित्तरक्तगदापहः ॥२४॥

अथ कक्कुभनामगुणाः ।
कक्कुभोऽर्जुननामा स्यात् नदीसर्जः शठद्रुमः ॥२५॥
कक्कुभः शीतलो भग्नव्रतव्रणविषासृजित् ॥२६॥

अथ गिरीषनामगुणाः ।
गिरीषः प्लवगो विप्र शुकाह्वश्चः कपीतनः ।
मृदुपुष्पः श्यामवर्णो भण्डीरः शल्लिनीफलः ॥२७॥
गिरीषः शीतलो वर्ष्यो विषवीसर्पशोथजित् ॥२८॥

अथ आर्त्तगलनामगुणाः ।
अगेटः स्यादार्त्तगलो बहुकण्टः मधर्पगः ॥२९॥
अगेटस्तुवरः शीतो व्रणशोधनरोपणः ॥३०॥

अथ वेतसद्वयनामानि ।
वेतसो वञ्जुलो नम्रो वानीरो दीर्घपत्रकः ॥३१॥
नादेयो मध्यपुष्पोऽन्यस्तोयकामो निकुञ्जकः ।

अथ जलवेतसनामानि ।

जलौका सम्भृतोऽभोजो निचुलो जलवेतसः ॥३२॥

अथ वज्रलनामानि ।

वज्रलो हिज्जलो गुच्छफला स्यात् कक्कपोलिका ॥३३॥

अथ वेतसादिगुणानि ।

वेतस शीतलो दाहश्रोफार्शोंयोनिरुग्व्रणान् ।
हन्ति वीसर्पकुष्ठास्रपित्तास्मरीकफानिलान् ॥३४॥
जलजो वेतसः शीतः संग्राही वातकोपनः ॥३५॥
वज्रलस्तद्गुणः प्रोक्तो विशेषाद्विषनाशनः ॥३६॥

अथ श्लेष्मान्तकनामगुणाः ।

श्लेष्मान्तकः कर्बुदारः पिच्छलो भूतपादपः ।
शेलुः शेलुश्च शैलूक शैलिको द्विजबुद्धितः ॥३७॥
श्लेष्मान्तको विषस्फोटव्रणवीसर्पकुष्ठजित् ।
क्षयोष्णस्तत्फलं ह्यं वातपित्तक्षयासृजित् ॥३८॥

अथ पिलुनामगुणाः ।

पीलुः शीतः सुरुस्रांशी तीक्ष्णस्तु करभप्रियः ।
सुरुस्राङ्गी गुडफलस्तत्फलं पीलु पीलुजम् ॥३९॥
पीलूष्णं दीपनं भेदि रक्तपित्तकरं लघु ।
गुल्मार्शःश्लीपदवातश्लेष्मकफहारि रसायनम् ॥४०॥

अथ शाक (शेगुण) नामगुणाः ।

शाकः खरच्छदो भूमिसहो दीर्घच्छदो मतः ॥४१॥
शाकः श्लेष्मानिलास्रघ्नो गर्भसन्धानदो हिमः ॥४२॥

अथ सालनामगुणाः ।

सालः सर्जरसः सर्जः श्वेतपुष्पाख्य पत्रकः ॥४३॥
सालो ग्राही व्रणश्लेष्मदग्धरुक् विषनुत् हिमः ॥४४॥

अथ तमालनामगुणाः ।

तमाल उक्तस्तापिञ्छः कालस्कन्धोऽमितद्रुमः ॥४५॥
तमालस्तद्गुणः शोथदाहविस्फोटहृत् पुनः ॥४६॥

अथ खदिरद्वयनामगुणाः ।

खदिरो रक्तसारः स्यात् गायत्री बालपत्रकः ।
खदिरः श्वेतसारोऽन्यः कामुकः कुब्जकण्टकः ॥४७॥
खदिरः शीतलो दन्त्यः कृमिमेहज्वरव्रणान् ।
श्वित्रशोथामपित्तास्रपाण्डुकुष्ठकफान् जयेत् ॥४८॥
निर्य्यासस्तस्य मधुरो बल्यः शुक्रविवर्द्धनः ॥४८॥
सारस्तु विशदो बल्यो मुखरोगकफास्रजित् ॥५०॥

अथ इरिमेदनामगुणाः ।

इरिमेदो विट्खदिरो गोधास्कन्धोऽरिमेदकः ॥५१॥
इरिमेदः कषायोष्णो मुखदन्तगदास्रनुत् ।
हन्ति कण्डूविषश्वेत्रकृमिकुष्ठव्रणान् जयेत् ॥५२॥

अथ वव्वूरनामगुणाः ।

वव्वूरः किङ्किरालः स्यात् पीतकः पीतपुष्पकः ॥५३॥
वव्वूरः कफनुद् ग्राही कुष्ठकृमिविषापहः ।
रक्तपित्तं कषायेण निहन्ति दिनसप्तकात् ॥५४॥

अथ पीलक (पियाल) नामगुणाः ।

पीलकोऽसनकः पीती प्रियः काम्योऽलकप्रियः ॥५५॥
पीलकः कुष्ठवीसर्पश्वित्रमेहज्वरक्रिमीन् ।
हन्ति श्लेष्मास्रपित्तानि त्वच्यः केश्यो रसायनः ॥५६॥

अथ तिनिशनामगुणाः ।

तिनिशः स्यन्दनो नेमी सर्वसारोऽक्षगर्भकः ॥५७॥
तिनिशः श्लेष्मपित्तास्रमेदःकुष्ठप्रमेहनुत् ॥५८॥

अथ भूर्जपत्रनामगुणाः ।

भूर्जो भुजो बहुपुटो मृदुत्वक् लेख्यपत्रकः ॥५८॥
भूर्जो भूतग्रहश्लेष्मकर्णरुक् रक्तपित्तजित् ॥६०॥

अथ पलाशनामगुणाः ।

पलाशः किंशुकः क्रिमिर्याज्ञिको ब्रह्मपादपः ।
क्षारश्रेष्ठो रक्तपुष्पः त्रिपर्णो समिदुत्तमः ॥६१॥
पलाशो दीपनो हृद्यः सरोष्णो व्रणगुल्मजित् ।
भग्नसन्धानकृत् दुष्टग्रहघ्नश्चर्मकृमीन् हरेत् ॥६२॥
तत्पुष्पं कफपित्तास्रकृच्छ्रजिद् ग्राहि शीतलम् ॥६३॥
फलं लघूष्णं मेहार्शःक्रिमिदुष्टकफापहम् ॥६४॥

अथ धवनामगुणाः ।

धवो नन्दितरुर्गौरः शकटाक्षो धुरन्धरः ॥६५॥
धवः शोतप्रमेहार्शःपाण्डुपित्तकफापहः ॥६६॥

अथ धन्वननामगुणाः ।

धन्वनो गोत्रविटपो धर्मणो गोत्रपुष्पकः ॥६७॥
धन्वनः कफपित्तास्रकासजित् तुवरो लघुः ॥६८॥

अथ सर्जनामगुणाः ।

सर्जोऽजकर्णः स्वेदघ्नो लताह्वश्चः क्षुदेहकः ॥६९॥
सर्जो व्रण्यः कफस्वेदमलपित्तहरो जयेत् ॥७०॥

अथ शाल्मलीनामगुणाः ।

शाल्मलीः स्यात् शोतफलश्छागो क्षीरविनायनः ॥७१॥
शाल्मलीो रक्तपित्तार्शोवातघ्नो अतिसारजित् ॥७२॥

अथ वरुणनामगुणाः ।

वरुणो वरणः श्वेतः शाकहृच्चः क्षुमारकः ॥७३॥
वरुणः पित्तलो भेदी श्लेष्मश्वासमारुतान् ।
निहन्ति गुल्मवातास्रकृमिमेदोविषांश्च दीपनः ॥७४॥

अथ जिङ्गिनीनामगुणाः ।

जिङ्गिनी भिङ्गिनी भिङ्गी सुनिर्घोषा प्रमोदिनी ॥७५॥
जिङ्गिनी व्रणरुग्दोषवातातिसारजित् कटुः ।
तमालश्यामलवत् वेद्यो दाहविस्फोटहृत् पुनः ॥७६॥

अथ यष्टीनामगुणाः ।

यष्टिको यष्टिका यष्टी गजभक्ष्या महेक्षणा ।
मधुवीरा कुन्दुरुको सुस्रावा वनकर्णिका ॥७७॥
यष्टिकी व्रणकुष्ठास्रश्लेष्मपित्तातिसारजित् ॥७८॥

अथ इक्षुदनामगुणाः ।

इक्षुदो यष्टिको ह्रस्वः कण्टकस्तापसद्रुमः ॥७९॥
इक्षुदः कुष्ठभूतादिग्रहव्रणविषक्षमीन् ।
हन्त्युष्णः शिववृक्षघ्नः तत्फलं कफवातजित् ॥८०॥

अथ कटम्भरनामगुणाः ।

कटम्भरश्चारुपृष्ठी कटभी व्रणगोण्डीकः ॥८१॥
कटम्भरः प्रमेहार्शोनाडीव्रणविषक्षमीन् ।
हन्त्यूष्णः कफकुष्ठघ्नः तत्फलं कफगुल्मनुत् ॥८२॥
निर्यासोऽप्य गुरुर्ग्राह्यो वलकृत् वातनाशनः ॥८३॥

अथ मुष्ककनामगुणाः ।

मुष्कको मोचको घण्टापाटलिः क्षुद्रपाटला ॥८४॥
मुष्ककः कफवातघ्नो ग्राही गुल्मविषक्षमीन् ।
हन्त्यूष्णो वस्तिरुग् कण्डूस्तत्पुष्पं कफपित्तजित् ॥८५॥
निर्यासोऽप्य परं ह्रृद्यः शोषपित्तानिलापहः ॥८६॥

अथ पारिभद्रनामगुणाः ।

पारिभद्रो निम्बवृक्षो रक्तपुष्पं प्रभद्रकः ।
कण्टकोपारिजातः स्यात् मन्दारः कटिकिंशुकः ॥८७॥
पारिभद्रः कृमिश्लेष्मदोषकफानिलापहः ॥८८॥

अथ शाल्मलीनामगुणाः ।

शाल्मली तूलिनी मोचा कुक्कुटो रक्तपुष्पिका ।
कण्टकाढ्या स्थूलफला पिच्छिला चिरजीविनी ॥८८॥
शाल्मली शीतला हृद्या हृद्या रक्तपित्तजित् ॥८९॥
निर्यासोऽस्य परं हृद्यः शीफपित्तानिलासृजित् ।
रसायनवरा स्निग्धा तत्पुष्पं ग्राहि पित्तजित् ॥९१॥

अथ तूणिनामगुणाः ।

तूणिः कुटेर आपीतस्तूनिको नन्दीपादपः ॥९२॥
तूणिः ग्राही हिमो हृद्यो व्रणकुष्ठास्रपित्तहा ॥९३॥

अथ सप्तपर्णनामगुणाः ।

सप्तपर्णो गुच्छपुष्पः छत्रो शाल्मलिपत्रकः ॥९४॥
सप्तपर्णो व्रणश्लेष्मवातकुष्ठहरः सरः ॥९५॥

अथ हारिद्रकनामगुणाः ।

हारिद्रकः पीतवर्णः श्रीमान गौरद्रुमो वरः ॥९६॥
हारिद्रकः कफहरो व्रणशोधनरोपणः ॥९७॥

अथ करञ्जपूतिकरञ्जनामगुणाः ।

करञ्जो नक्तमालः स्यात् नक्ताह्वो घृतपर्णकः ॥९८॥
पूतीकोऽन्यः पूतिपर्णः प्रकीर्य्यथिरबिल्वकः ॥९९॥
करञ्जः कटुकस्तीक्ष्णो वीर्य्योष्णो योनिदोषजित् ।
कुष्ठोदावर्तगुल्मार्शोव्रणकृमिकफापहः ॥१००॥
तत्फलं कफवातघ्नं मेहार्शः कृमिकुष्ठजित् ॥१०१॥
तत्पत्रं कफवातार्शःकृमिगोपहरं परम् ॥१०२॥

अथ अङ्गारवल्लरी (करञ्जभेदः) नामगुणाः ।

करञ्जो वातलिका च वयस्याङ्गारवल्लरी ॥१०३॥
करञ्जिकोष्णवातार्शःकृमिकुष्ठप्रमेहनुत् ॥१०४॥

अथ महाकरञ्जनामगुणाः ।

तिरिगिच्छिर्गलकण्डः करञ्जो दीरिणो द्विपः ॥१०५॥
तिरिगिच्चिर्वलासार्शःक्षमिकुष्ठप्रमेहहृत् ॥१०६॥

अथ शमीद्वयनामगुणाः ।

शमी तुङ्गा शक्तुफला पवित्रा केशहृत्फला ।
लक्ष्मीः शिवाऽन्या मङ्गल्या भूशमी यज्ञराट्टया ॥१०७॥
शमी शीता लघुः श्वासकुष्ठार्शःकफहृत् सरा ॥१०८॥
तत्फलं पित्तलं रूक्षं मेध्यं केशविनाशनम् ॥१०८॥

अथ टिण्टिनिकानामगुणाः ।

शिरीषिका टिण्टिनिका दुर्बलाम्बु शिरीषिका ॥११०॥
टिण्टिनी कफकुष्ठार्शःसन्निपातविषापहा ॥१११॥

अथ अरिष्टक (रीठाकरञ्जः) नामगुणाः ।

अरिष्टको गर्भपातो क्षुभ्नबीजश्च फेनिलः ।
क्षत्रबीजो रक्तबीजः पोतफेनोऽर्शसाधनः ॥११२॥
अरिष्टकस्त्विदोषघ्न उष्णो गर्भमहापहः ॥११३॥

अथ शिंशपाद्वयनामगुणाः ।

शिंशपा कपिला क्षत्रमारा मण्डलपत्रिका ॥११४॥
अन्या क्षुशिंशपा भग्न पित्तला स्यात् वमादनी ॥११५॥
शिंशपोक्षा हरेत्पित्तान् कुष्ठश्लेष्मविषक्रमीन् ।
वस्तिरुग्व्रणदाहाश्मगूढगर्भनिपातनी ॥११६॥

अथ अगस्त्य (वकपुष्प) नामगुणाः ।

अगस्त्यो वङ्गसेनाढ्यः मधुशिग्रुर्मुनिद्रुमः ॥११७॥
अगस्त्यः पित्तकफजित् निदाघशमनो हिमः ॥११८॥
सत्पुष्पं पीनसश्वेत्यपित्तगलान्ध्यनाशनः ॥११८॥

यो राजां सुपतिलकः फटारमल-
स्तेन श्रीमद्मरूपेण निर्मितश्च ।

अन्येऽभ्रम्मदनविनोदनाख्ये पूर्ण-
श्चिचोऽयं ललितपदैर्वटादिवर्गः ॥१२०॥

इति वटादि पञ्चमवर्गः ।

—०—

अथ द्राक्षादिफलवर्गः ।

भ्रमोच्छलद्धरिकाग्रपिष्टं मन्दस्मित वेणुनिनादरम्यम् ।
गोपालिकानां करतालिकाभिर्नृत्यन्महस्तत्परमं स्मरामि ॥१॥

अथ द्राक्षानामगुणाः (तदभेदाश्च) ।

द्राक्षा मधुफला खाद्वी हारह्रा फलोत्तमा ।
मृद्वीका मधुयोगिन्य रसाला गोस्तनी गुडा ॥ २ ॥
द्राक्षा पक्षा सरा शीता चक्षुष्या हृद्या गुरुः ।
हन्ति तृष्णाज्वरश्वासवान्तिवातासृक्कामलाः ।
क्षच्छ्रास्रपित्तसम्मोहदाहशोषमदात्ययान् ॥ ३ ॥
आमा स्वल्पगुणा गुर्वी सैवाम्ला रक्तपित्तकृत् ॥ ४ ॥
निर्बीज्यांऽन्या लघुद्राक्षा गोस्तनी सदृशी गुणैः ।
द्राक्षा पर्वतजा लघ्वी साम्ला श्लेष्मास्रपित्तहृत् ॥ ५ ॥

अथ पक्वापक्वगुप्काम्रनामगुणाः ।

आम्रश्चूतो रसालश्च सहकारोऽतिसौरभः ।
माकन्दः पिकबन्धुः स्यात् कामाङ्गो कामवल्लभः ॥ ६ ॥
आम्रो वाते प्रमेहास्रकफपित्तव्रणान् जयेत् ।
तत्फलं बालमत्यम्लं रूक्षं दोषत्रयास्रजित् ॥ ७ ॥
पक्वन्तु मधुरं हृद्यं स्निग्धं शुक्रं बलप्रदम् ।
गुरु वातहरं रुच्यं वर्ण्यं शीतमपित्तलम् ॥ ८ ॥
रसस्तस्य मरुः स्निग्धो वीर्यनो बलवर्णकृत् ॥ ९ ॥
सहकारस्य वातघ्नं पित्तश्लेष्मविनाशनम् ।

कर्कन्धु फलमदरं बदरञ्च धुकन्धुकम् ॥४३॥
पक्वमानं सुमधुरं सौवीरं बदरं महत् ॥४४॥
बदरं लघु मंग्राहि कफ्यमुष्णं समीरजित् ।
कफपित्तकरं तद्वत् कोलं गुरु सरं स्मृतम् ॥४५॥
सौवीरं बदरं शीतं भेदनं गुरु गुक्रलम् ।
हंद्दणं पित्तदाहास्रघातलक्षानिलापहम् ॥४६॥
गुल्कं भेद्यग्निकृत् सर्वं लघु दृग्गात्रमार्जितम् ॥४७॥
कर्कन्धूः मधुरा स्निग्धा गुर्व्वी पित्तानिलापहा ।
मदपित्तहरो मज्जा छर्द्दा वौंध्यंपल्लप्रदा ॥४८॥

अथ धीरीनामगुणाः ।

धीरी चधिय राजाम्र राजादनफला तथा ।
राजन्या स्कन्धभतोन्यागधिमुक्तो मृधिसिन्दकः ॥४८॥
धीरीफलकलं शीतं स्निग्धं गुरु बलप्रदम् ।
दृग्बामूर्ध्वामदभ्रान्तिक्षयदोषक्षयापहम् ॥५०॥

अथ धारनामगुणाः ।

धारो धनुष्पटः शालः प्रियालो मृलिफलमः ॥५१॥
धारः पित्तकफास्रघ्नस्फलं मधुरं गुरु ।
स्निग्धं सर मदपित्तदाहक्षयास्रनाशनम् ॥५२॥
तन्मज्जा मधुरो वृष्यः गुरुमः पित्तवातजित् ॥५३॥

अथ पद्मकनामगुणाः ।

पद्मपक्षो मदुस्कन्धः पद्मकी रीधकोपरः ॥५४॥
पद्मकः कषायोष्णमामं पित्तकरं लघु ॥५५॥
पद्मस्तु मधुरः पाके शीतः पित्तास्रहंसनम् ।
कफं मदं विषदाहास्रकण्डूतिक्षयनाशनम् ॥५६॥

अथ तिन्दुकफलनामगुणाः ।

तिन्दुकः स्फन्दनः स्फूर्जः कालस्कन्धश्च रामठः ।

काकपोलुः क्रुपीलुः स्यादपरो विषतिन्दुकः ॥५७॥
तिन्दुकी व्रणवातघ्नस्तत्सारः पित्तरोगजित् ॥५८॥
आममस्य फलं ग्राहि वातलं शीतलं लघु ॥५९॥
पक्वं पित्तप्रमेहास्रश्लेष्मघ्नं विशदं गुरु ॥६०॥
विषतिन्दुकमप्येवं विशेषाद् ग्राहि शीतलम् ॥६१॥

अथ किङ्किणीनामगुणाः ।

किङ्किणी श्याम्रपादः स्यात् देवदारुः चरः क्वचित् ॥६२॥
किङ्किणी तुवरा तिक्ता पित्तश्लेष्महरा हिमा ॥६३॥
तत्फलं वातलं त्वामं पक्वं स्वादु त्रिदोषजित् ॥६४॥

अथ आरुकनामगुणाः ।

आरुकं वीरसेन तज्जातिभेदाच्चतुर्विधम् ॥६५॥
आरुकं जारक वातमेहार्शःकफनाशनम् ॥६६॥

अथ मधूकद्वयनामगुणाः ।

मधूको मधुकस्तोयसारश्च गुडपुष्पकः ।
गोलाफलो मधुष्ठीलो मधुकाष्ठो मधुद्रुमः ॥६७॥
मधूकान्यो ह्रस्वफलो मधुरो दीर्घपत्रकः ॥६८॥
मधुकः कफवातघ्नः कषायो व्रणरोपणः ॥६९॥
तत्पुष्पं मधुरं बल्यं शीतलं गुरु हृंहणम् ॥७०॥
फलं शीतं गुरु स्वादु शुक्रलं वातपित्तजित् ।
पक्वं हन्ति क्षयासृग्दाहश्वासक्षतक्षयान् ॥७१॥

अथ पनसनामगुणाः ।

पनसः कण्टकिफलः श्वासहा गर्भकण्टकः ॥७२॥
पनस शीतल पक्वं स्निग्धं पित्तानिलापहम् ।
बल्य शुक्रप्रदं हन्ति रक्तपित्तक्षतक्षयान् ॥७३॥
आमं तदेव विष्टम्भि वातलं तुवरं गुरु ॥७४॥

कषायं मधुरं हृद्यं गुरुस्निग्धं विशेषतः ॥ १० ॥
पक्वाम्रं जनयेदायुर्मांसशुक्रबलप्रदम् ।
शुष्कामृन्तु कषायाम्लं भेदनं कफवातजित् ॥ ११ ॥

अथ जम्बूचयनामगुणाः ।

महाजम्बूर्राजजम्बूर्महास्कन्धा बृहत्फला ॥ १२ ॥
क्षुद्रजम्बूर्वीरपत्ना मेघाभा काकवल्लभा ॥ १३ ॥
नादेयी स्यात् क्षुद्रफला तत्फलं जम्बु जाम्बवम् ॥ १४ ॥
जम्बूः सङ्ग्राहिणी रूक्षा कफपित्तव्रणापहा ॥ १५ ॥
राजजम्बूफलं स्वादु विष्टम्भि गुरु रोचनम् ॥ १६ ॥
क्षुद्रजम्बूफलं तद्वत् विशेषाद्दाहनाशनम् ॥ १७ ॥

अथ नारिकेलनामगुणाः ।

नारिकेलो दृढ़फलो महाद्रुमो महाफलः ।
दृणराजस्तृणफलस्तृणाह्वो दृढ़बीजकः ॥ १८ ॥
नारिकेलफलं शीतं दुर्जरं वस्तिशोधनम् ।
विष्टम्भि हृंहणं हृद्यं वातपित्तास्रदाहजित् ॥ १९ ॥
तस्याम्भः शीतलं हृद्यं दीपनं शुक्रलं लघु ॥ २० ॥
तत्पादपशिरोमज्जा शुक्रलो वातपित्तजित् ॥ २१ ॥

अथ खर्जूरिकानामगुणाः (तद्भेदाश्च) ।

श्रेणी खर्जूरिकाह्वश्च शीफला द्वीपसम्भवा ।
पिण्डखर्जूरिका खर्जूर्दुःप्रधर्षा सुकण्टका ॥ २२ ॥
धन्या स्कन्धफला स्वाद्वी दुरारोहा मृदुच्छदा ।
भूमिखर्जूरिका क्षारकर्कटी स्वादुमस्त्रका ॥ २३ ॥
खर्जूरिकाफलं शीतं स्वादु स्निग्धं चतामृजित् ।
वस्यं हन्ति मरुत्पित्तं मदमूर्च्छाभमदात्ययान् ॥ २४ ॥
तस्मादल्पगुणं श्रेयमन्यत् खर्जूरिकाफलम् ॥ २५ ॥
तस्माच्छा मूर्दजः शीतो हृद्यः पित्तास्रदाहजित् ॥ २६ ॥

अथ सुलेमानीनामगुणाः ।

सुलेमानोऽपरा लोके मृदुला तुवरोफला ॥ २७ ॥
सुलेमानो श्रमभ्रान्तिदाहमूर्च्छास्रपित्तनुत् ॥ २८ ॥

अथ कदलीनामगुणाः ।

कदली ग्रन्थिनो मोचा रम्भा वीरायतच्छदा ।
रोचको वारणवृषाम्बुसारांशुमतीफला ॥ २९ ॥
कदली योनिदोषास्रपित्तहरा हिमा ॥ ३० ॥
तत्कन्दः शीतलो बल्यः केश्यः पित्तकफास्रजित् ॥३१॥
तत्फलं मधुरं शीतं विष्टम्भि कफकृद् गुरु ।
स्निग्धं पित्तासृदाहघ्नतत्त्वयसमीरजित् ॥ ३२ ॥

अथ दाडिमीत्रयनामगुणाः ।

दाडिमो रक्तकुसुमा दन्तबीजा शुकप्रिया ॥३३॥
दाड़िम दीपनं हृद्यं रोचनं नातिपित्तलम् ।
कषायानुरसं ग्राहि स्निग्धं मेदोवलावहम् ॥३४॥
तयोः स्वादु त्रिदोषघ्नमम्लं वातकफापहम् ॥३५॥
स्वाद्वम्लं दीपनं हृद्यं किञ्चित् पित्तकरं लघु ॥ ३६ ॥

अथ कतक (निर्मलीफल) नामगुणाः ।

कतकोऽम्बुप्रसादश्च कतस्तिक्तफलस्तथा ॥३७॥
कतकस्य फलं नेत्र्यं जलनिर्मलताकरम् ।
वातश्लेष्महरं शीतं मधुरं तुवरं गुरु ॥३८॥

अथ बदरीनामगुणाः तद्भेदाश्च ।

बदरो कर्कंटी मौघा कोरण्टो युग्मकण्टका ॥३९॥
धन्या स्निग्धच्छदा कोशफला सौवीरिकाऽपरा ॥४०॥
इस्तिकोलिःपरा स्वन्या लघ्वी कर्कन्धूः कोलिका ॥४१॥
बदरी शीतला तिक्ता रूक्षा पित्तकफापहा ॥४२॥
बदरस्त्वपरं लोके फेनिलं कुवलं कुहम् ।

कषायं मधुरं हृद्यं गुरुस्निग्धं विशेषतः ॥ १० ॥
पक्वान्नं जनयेदायुर्मांसशुक्रबलप्रदम् ।
शुष्कामृन्तु कषायाम्लं भेदनं कफवातजित् ॥ ११ ॥

अथ जम्बूचयनामगुणाः ।

महाजम्बूर्राजजम्बूर्महास्कन्धा बृहत्फला ॥ १२ ॥
क्षुद्रजम्बूर्वीरपत्रा मेघाभा काकवल्लभा ॥ १३ ॥
नादेयी स्यात् क्षुद्रफला तत्फलं जम्बु लाम्बवम् ॥ १४ ॥
लम्बूः सङ्ग्राहिणी रूक्षा कफपित्तव्रणास्रजित् ॥ १५ ॥
राजजम्बूफलं स्वादु विष्टम्भि गुरु रोचनम् ॥ १६ ॥
क्षुद्रजम्बूफलं तद्वत् विशेषाद्ग्राहिनाशनम् ॥ १७ ॥

अथ नारिकेलनामगुणाः ।

नारिकेलो दृढ़फलो महाहृद्यो महाफलः ।
दृणराजस्तृणफलस्तृणाह्वो दृढ़बीजकः ॥ १८ ॥
नारिकेलफलं शीतं दुर्जरं वस्तिशोधनम् ।
विष्टम्भि हृंहणं हृद्यं वातपित्तास्रदाहजित् ॥ १९ ॥
तस्याम्भः शीतलं हृद्य दीपनं शुक्रलं लघु ॥ २० ॥
तत्पादपशिरोमज्जा शुक्रलो वातपित्तजित् ॥ २१ ॥

अथ खर्जूरिकानामगुणाः (तद्भेदाश्च) ।

श्रेणी खर्जूरिकाह्वयः शीफला द्वीपसम्भवा ।
पिण्डखर्जूरिका खर्जूर्दुःप्रधर्षा सुकण्टका ॥ २२ ॥
धन्या स्कन्धफला स्वादी दुरारोहा मृदुच्छदा ।
भूमिखर्जूरिका काककर्कटी स्वादुमस्त्वका ॥ २३ ॥
खर्जूरिकाफलं शीतं स्वादु स्निग्धं घनामृजित् ।
वल्यं हन्ति मरुत्पित्त मदमूर्च्छामदात्ययान् ॥ २४ ॥
तस्मादल्पगुणं श्रेयमन्यत् खर्जूरिकाफलम् ॥ २५ ॥
तन्मज्जा मूर्द्धजः शीतो हृद्यः पित्तास्रदाहजित् ॥ २६ ॥

अथ सुलेमानीनामगुणाः ।

सुलेमानोऽपरो लोके मृदुला तुवरोफला ॥ २७ ॥
सुलेमानो श्रमभ्रान्तिदाहमूर्च्छास्रपित्तनुत् ॥ २८ ॥

अथ कदलीनामगुणाः ।

कदली यन्थिनो मोचा रम्भा वीरायतच्छदा ।
रोचको वारणवृषाऽम्बुसारांशुमतीफला ॥ २९ ॥
कदली योनिदोषास्रपित्तहरा हिमा ॥ ३० ॥
तत्कन्दः शीतलो बल्यः केश्यः पित्तकफासृजित् ॥३१॥
तत्फलं मधुरं शीतं विष्टम्भि कफकृद् गुरु ।
स्निग्धं पित्तानलदाहच्छर्दितृट्क्षयसमीरजित् ॥ ३२ ॥

अथ दाडिमीवयनामगुणाः ।

दाडिमो रक्तकुसुमा दन्तबीजा शुकप्रिया ॥३३॥
दाड़िम दीपनं हृद्यं रोचनं नातिपित्तलम् ।
कषायानुरसं ग्राहि स्निग्धं मेदोबलावहम् ॥३४॥
तयोः स्वादु त्रिदोषघ्नमम्लं वातकफापहम् ॥३५॥
स्वाद्वम्लं दोपनं रुच्यं किञ्चित् पित्तकरं लघु ॥ ३६ ॥

अथ कतक (निर्मलीफल) नामगुणाः ।

कतकोऽम्बुप्रसादय कतस्तिक्तफलस्तथा ॥३७॥
कतकस्य फलं नेत्रं जलनिर्मलताकरम् ।
वातघ्नं लघुरं शीतं मधुरं तुवरं गुरु ॥३८॥

अथ बदरीनामगुणाः तद्भेदाश्च ।

बदरो कर्कंटी मोघा कोरण्टो युग्मकण्टका ॥३९॥
धन्या स्निग्धच्छदा कोशफला सौवीरिकाऽपरा ॥४०॥
हस्तिकोलिःपरा वन्या लघ्वी कर्कन्धूः कोलिका ॥४१॥
बदरी शीतला तिक्ता रूक्षा पित्तकफापहा ॥४२॥
बदरन्त्वपरं लोके फेनिलं कुवलं कुहम् ।

अथ पालेवतहयनामगुणाः ।

पालेवतं सितं पुष्पै स्त्रिन्द्रकञ्च फलं घृतम् ॥१०॥४
अन्यत् मानवकं ज्ञेयं महापालेवतं तथा ॥१०॥५
पालेवतं हिमं स्वादु गुरूष्णं वङ्क्रियातजित् ।
लक्ष्मानमकं हृद्यं हृष्याम्लं मिष्टमस्तकम् ॥१०६॥

अथ तूतनामगुणाः ।

तूतं तूदं ब्रह्मकोपं ब्राह्मणं ब्रह्मदारु च ॥१०॥७
तूतं पक्वं गुरु हिमं स्वादु पित्तानिलापहम् ॥१०॥८

अथ गङ्केरुनामगुणाः ।

गङ्केरुकं वार्कटकं कारकं मृगलिण्डकम् ।
तोदनं क्रन्दनश्चान्यत् मृगविट्सदृशं तथा ॥१०॥९
गङ्केरु रेचनं पक्वं गुरु वाताग्रजित् मतम् ।
तोदमं याचि मधुरं पातपित्तहरं लघु ॥११०॥

अथ तुम्बरनामगुणाः ।

तुम्बरं टिचिकं साम्लमुष्णमामन्तु पित्तलम् ॥१११॥
कालायनफलैः पक्वैः केशरामैः समुद्भवैः ।
इचस्तुम्बरको ज्ञेयो भल्लातकसमो गुणैः ॥ ११२॥
तुम्बरं कफजित् पाके कटूष्णं व्रणमेहकृत् ॥११३॥

अथ बीजपूरनामगुणाः ।

बीजपूरो मातुलुङ्गः केशरी फलपूरकः ॥११४॥
बीजपूरफलं रुच्यं रसाम्लं दीपनं लघु ।
रक्तपित्तहरं कण्ठजिह्वाहृच्छोधनं परम् ॥११५॥
तस्यांसं हृद्यं शीतं गुरु पित्तसमीरजित् ॥११६॥
केशरं लघु सम्याहि शूलगुल्मोदरापहम् ।
बीजमुष्णं कृमिघ्नं सवातजिद्भेदनं गुरु ॥११७॥
तत्पुष्पं वातलं प्राहि रक्तपित्तहरं लघु ॥११८॥

शूलाजीर्णविबन्धेषु मन्दाग्नौ कफमारुते ।
मरुचौ श्वासकासेषु रसस्तस्य प्रशस्यते ॥११९॥

अथ मधुकर्कटीनामगुणाः ।

मधुकर्कटिका स्वादुलुङ्गी घण्टालिका घटा ॥१२०॥
मधुकर्कटिका शीता रक्तपित्तहरा गुरुः ॥१२१॥
तन्मूलन्तु विसूचीघ्नं कर्णशोथविनाशनम् ॥१२२॥

अथ नारङ्गद्वयनामगुणाः ।

नारङ्गो नागरङ्गः स्यान्नीरङ्गो योगसारकः ॥१२३॥
नारङ्गमम्लमत्युष्णं पित्तवातहरं सरम् ॥१२४॥
स्वादम्लमपरं हृद्यं दुर्जरं वातनाशनम् ॥१२५॥

अथ जम्बीरनामगुणाः ।

जम्बीरको दन्तशठो जम्भीरो जम्भलो मतः ॥१२६॥
जम्बीरमम्लं शूलघ्नं गुरूष्णं कफवातजित् ।
पार्श्ववैरस्यहृत्पीडाबङ्क्षिमान्यक्षमोन् जयेत् ॥१२७॥

अथ अम्लवेतसनामगुणाः ।

पाम्नोऽम्लवेतसयुक्तो वेतसः शरवेधकः ॥१२८॥
अम्लवेतसमत्युष्णं भेदनं लघु दीपनम् ।
हृद्रोगशूलगुल्मघ्नं पित्तलट्कफदूषणम् ॥१२९॥

अथ सारास्र(निम्बु भेद.)नामगुणाः ।

सारास्रकः सारफलो रसालः सारपादपः ॥१३०॥
सारास्रमम्लवातघ्न गुरु पित्तकफप्रदम् ॥१३१॥

अथ निम्बूनामगुणाः ।

निम्बूकं निम्बुकं राजनिम्बूकमपरं स्मृतम् ॥१३२॥
निम्बूकमम्लं वातघ्नं पाचनं दीपन लघु ॥१३३॥
राजनिम्बूफल स्वादु गुरु पित्तसमीरजित् ॥१३४॥

अथ कर्मरङ्गनामगुणाः ।

कर्मरङ्गं नागफलं भव्यं पिच्छिलवोजकम् ॥१३५॥
कर्मरङ्गं हिमं ग्राहि स्वादुलं कफपित्तजित् ॥१३६॥

अथ अम्लिकानामगुणाः ।

अम्लिका चुक्रिका चिञ्चा तिन्तिड़ी शुक्लिचन्द्रिका ।
अम्लिकाऽम्ला गुरुर्वातहरा पित्तकफास्रजित् ॥१३७॥
पक्का तदल्परा रुच्या वह्निवस्तिविशुद्धिकृत् ॥१३८॥
शुष्का क्षुधा श्रमभ्रान्तिदृष्णालस्यहरा लघुः ॥१३९॥

अथ तिन्तिडीनामगुणाः ।

तिन्तिडीकन्तु हृद्याम्लमम्लशाकोऽम्लपादपः ॥१४१॥
तिन्तिडीक समीरघ्नमामम्लं पर गुरु ॥१४२॥
तत्पक्वं लघु संग्राहि ग्रहणीकफवातजित् ॥१४३॥

अथ करमर्दीनामगुणाः ।

करमर्दो शुपेणा स्यादन्या क्षुद्रफला मता ॥१४४॥
करमर्दो गुरूष्णाम्लं रक्तपित्तकफप्रदम् ॥१४५॥
तत्पक्व मधुरं रुच्यं लघु पित्तसमीरजित् ॥१४६॥

अथ कपित्थनामगुणाः ।

कपित्थको दधिफलः कपित्थः सुरभिच्छदः ॥१४७॥
कपित्थमामं संग्राहि लघु दीपनपाचनम् ॥१४८॥
पक्वं गुरु ह्यपाकिकायमम्लं वातपित्तजित् ॥१४९॥
स्वादुम्ल तुवरं पक्वशोधनं ग्राहि दुर्जरम् ॥१५०॥

अथ कपित्थपत्रीनामगुणाः ।

कपित्थपत्रो कण्विला क्षुद्रजा जीवपत्रिका ॥१५१॥
कपित्थपत्रो शीतोष्णा कफमेहविषापहा ॥१५२॥

अथ आम्रातकनामगुणाः ।

आम्रातकश्चाम्रवटः पीतो मोदकफलः कविः ॥१५३॥

आम्रातमामवातघ्नं गुरुष्णं रुचिकृत् सरम् ॥१५३॥
पक्वं स्वादु स्निग्धं हृद्यं मरुत्पित्तक्षयास्रजित् ॥१५४॥

अथ राजाम्रनामगुणाः ।

राजाम्राह्वं कामनामा कामाह्वो राजचूचकः ॥१५५॥
राजाम्रं मधुरं शीतं ग्राहि पित्तकफापहम् ॥१५७॥

अथ पक्वाम्रनामगुणाः ।

हृद्याह्वं दाडिमौ चिञ्चा कपित्थै यतुरम्लकम् ।
पक्वैतत्सदृशाम्रदाडिमोदरैः क्वचित् ॥१५८॥
बीजपूरयुतैरेतैः पक्वाम्रमुदितं बुधैः ॥१५९॥

अथ क्षोभाम्रनामगुणाः ।

क्षोभाम्रको घनस्कन्धो जन्तुहृद्यश्च क्षोभकः ॥१६०॥
क्षोभाम्रः कुष्ठगोथास्रपित्तव्रणकफापहः ॥१६१॥
तत्फलं ग्राहि वातघ्नमल्पोष्णं गुरु पित्तजम् ॥१६२॥
पक्वं तत् दीपनं रुच्यं लघूष्णं कफवातजित् ॥१६३॥
मज्जा पित्तघ्नमोरघ्नः स्वादुर्वल्योऽग्निदीपनः ॥१६४॥

अथ पूगीफलनामगुणाः ।

क्रमुकं क्रमुकं पूगं पूगीफलमुदाहृतम् ॥१६५॥
पूग गुरु हिमं रूक्षं कषायं कफपित्तजित् ।
मोहनं दीपनं रुच्यमास्यवैरस्यनाशनम् ॥१६६॥
आर्द्रं तद् गुर्वभिष्यन्दि वह्निदृष्टिहरं परम् ।
स्निग्धं त्रिदोषहृत्सर्वं पक्वं शुष्कन्तु वातलम् ॥१६७॥
पूगं स्याद् वृन्तमध्येटं तच्च नानाविधं हिमम् ।
पाकदेशादिभेदेन स्निग्धं सर्वदोषनुत् ॥१६८॥
क्षमिरुत् पूगपुष्यन्तु कषायं मधुरं गुरु ।
स्निग्धं त्रिदोषहृद् वर्ष्यं तद्वदादियेत् ॥१६९॥

अथ ताम्बूलनामगुणाः ।

ताम्बूलवल्लो ताम्बूलो नागिनी नागवल्लरी ॥१७०॥
ताम्बूलं विशदं रुच्यं तीक्ष्णोष्णं तुवरं सरम् ॥१७१॥
तिक्तं चारं हन्ति कासं रक्तपित्तकरं लघु ।
बल्यं श्लेष्मास्यदौर्गन्ध्यमलवातश्रमापहम् ॥१७२॥

अथ ताम्बूल प्रशंसा ।

ताम्बूलं स्वर्णवर्णं क्रमुकफलयुतं सूक्ष्मसूक्ष्मीकृतं यत् ।
कर्पूरैणाण्डजाभ्यां क्षतखदिरवटीसौरभेणापि पूर्णम् ॥
चूर्णं सुक्तानुज्ञातं गिरिकिरणवत् प्रोज्ज्वलं तेन साकम् ।
दत्त्वा विप्राय पूर्वं तदनु नरपतिर्भुञ्चयेदामदत्तम् ॥१७३॥

अथ संयोगतःचूर्णखदिरगुणाः ।

चूर्णं वाक्फानिलहर खदिरं कफपित्तजित् ।
संयोगतो दोषहरं सौमनस्यं करोति च ।
मुखवैरस्यसौगन्ध्यकान्तिशोभाकरं परम् ॥१७४॥

अथ लवलीनामगुणाः ।

सुगन्धमूला लवली पाण्डुः कोमलवल्कल ॥१७५॥
लवलयाः फलमुद्दिष्टं श्यामं ज्योत्स्नाफलं तथा ॥१७६॥
लवलीफलमम्लीयातपित्तहर गुरु ।
विशदं रोचनं रूच्यं स्यादम्लं तुवर रसे ॥१७७॥

तत्र परिभाषा ।

फलं तुल्यगुणं सर्वं मज्जानमपि निर्दिशेत् ॥१७८॥
फलं हिमाग्निदुर्वातश्यामकीटादिदूषितम् ।
अकालजातं नाश्नीयात् पाकातीतं कुभूमिजम् ॥१७९॥
श्याम दोषकरं प्रायः फल त्रिष्व विनाग्निसम् ॥१८०॥
यस्य यस्य फलस्येह यीर्य्यं भवति यादृशम् ।
तस्य तस्येव वीर्य्यं च मज्जानमपि निर्दिशेत् ॥१८१॥

व्याधितं कृमिदुष्टञ्च पाकातीतमकालजम् ।
यत्नंनीयात् प्रयत्नेन तथा पर्य्युषितं च यत् ॥१८२॥

इति द्राक्षादिफलवर्गः षष्ठः समाप्तः ।

—•—

अथ कुष्माण्डादिशाकवर्गः ।

राधापदाब्जे निपतन् विनोदी
नानायनुत्यै जगदेकवन्द्यः ।
केनापि कामेन स गोपरूपी
पायादपायात् पुरुषः पुराणः ॥ १ ॥

अथ शाकनिरूपणम् ।

शाकं चतुर्धा तत्पुष्पच्छदकन्दफलैः स्मृतम् ॥ २ ॥
सर्वशाकेषु जीवन्तो श्रेष्ठा निन्द्यस्तु सर्षपः ॥ ३ ॥

अथ कुष्माण्डनामगुणाः ।

कुष्माण्डको पुष्पफलो पचनालिश्चतुर्विधः ।
कर्कारुरफलाकन्दो स्यादाहुराजकर्कटी ॥ ४ ॥
कुष्माण्डं हृद्यं शीत गुरु पित्तास्रवातजित् ॥ ५ ॥
बालं पित्तापहं शीत मध्यमं कफकारकम् ॥ ६ ॥
पक्वं नातिस्निग्धं स्वादु सक्षारं दीपनं लघु ।
वस्तिशुद्धिकरं चेतोरोगदोषक्षयापहम् ॥ ७ ॥
कुष्माण्डं नातिमधुरं वातास्रकफापहम् ।
तच्छाक्षा पित्तनुद् हृद्यो मधुरो वस्तिशोधनः ॥ ८ ॥

अथ कर्कटी(काँकुड़)नामगुणाः ।

कर्कटी सोमभो व्यालपत्रैर्बालं हृत्फला ॥ ९ ॥
कर्कटी शीतला रूक्षा ग्राहिणी मधुरा गुरुः ।
दृष्या पित्तहरा सामा पक्वोष्णा पित्तवर्द्धिका ॥ १० ॥
कर्कटं शीतलं ग्राहि रक्तपित्तहरं गुरु ।

पक्कं पित्ताग्निजननं सच्चारं श्लेष्मवातजित् ॥ ११ ॥

अथ कालिङ्ग(तरमुज)नामगुणाः ।

कालिङ्गं क्षणवोजं स्यात् कालिङ्गं फलवर्त्तुलम् ॥ १२ ॥
कालिङ्गं ग्राहि दृक्पित्तशुक्रदृत् शीतलं गुरु ।
पक्वन्तु सोष्णं सच्चारं पित्तलं कफवातजित् ॥ १३ ॥

अथ मिष्टतुम्बो(लाउ)नामगुणाः ।

तुम्बीमिष्टा महातुम्बी राजालाबुरलाबुनी ॥ १४ ॥
मिष्टतुम्बीफलं हृद्यं कफपित्तहरं गुरु ॥ १५ ॥

अथ कटुतुम्बीनामगुणाः ।

कटुतुम्बी पिण्डफला राजपुत्री च तुम्बिनी ॥ १६ ॥
कटुतुम्बी हिमा हृद्या पित्तकासविषापहा ॥ १७ ॥

अथ त्रपुष(ग्रसा)नामगुणाः ।

त्रपुषं कण्टकिलता सुधावासोऽपरं कटुः ।
छर्दिंपर्णी मूत्रफला पित्तकं हस्तिपर्णिनी ॥१८॥
त्रपुषं मूत्रलं शीतं रूक्ष पित्तासृक्छ्वयथुत् ।
तत्पक्वमुष्णमम्लं स्यात् पित्तलं कफवातजित् ॥१९॥

अथ चिर्भट(गोमुक्)नामगुणाः ।

चिर्भटं धेनुदुग्ध स्यात् ज्ञेयं गोरक्षकर्कटी ॥२०॥
चिर्भटं मधुरं रूक्षं गुरु पित्तकफापहम् ।
शीत विष्टम्भि संग्राहि पक्वमुष्णञ्च पित्तकृत् ॥२१॥

अथ वालुक(फूटी)नामगुणाः ।

वालुकं काण्डक वालु तच्छीतं मधुरं गुरु ।
रक्तपित्तहर भेदि लघूष्णं पक्वमग्निकृत् ॥२२॥

अथ शीर्णवृन्तनामगुणाः ।

शीर्णवृन्तं चिल्वफलं विचिचं पीतवर्णकम् ॥२३॥
शीर्णवृन्त लघु स्वादु भेद्युष्णं वह्निपित्तकृत् ॥२४॥

अथ कोशातकी(झिञ्जा)नामगुणाः ।

कोशातकी क्षतच्छिद्रा जालिनी क्षतवेधना ।
मृदङ्गफलिनी च्छेड़ा घण्टाली कर्कशच्छदा ॥२५॥
कोशातकी लघुस्निग्धा रूक्षामाग्नयबोधनी ।
शोफपाण्डूदरप्लीहकुष्ठार्शःकफपित्तजित् ।
तत्फलं भेदनं शीतं लघु मेहच्छिदोपजित् ॥२६॥

अथ राजकोशातकीनामगुणाः ।

राजकोशातकी मिष्टा महाजालिः सपीतका ॥२७॥
राजकोशातकी शीता ज्वरघ्नी कफवातला ॥२८॥

अथ महाकोशातकी(घुन्दुल)नामगुणाः ।

महाकोशातकी त्वन्या हस्तिघोषा महाफला ॥२९॥
महाकोशातकी स्निग्धा मिष्टा पित्तानिलापहा ॥३०॥

अथ हन्ताकी(वेगुण)नामगुणाः ।

हन्ताकी वार्त्ताकी वार्त्तां भण्टाकी भण्टिका मता ॥३१॥
हन्ताकं स्वादु तीक्ष्णोष्णं कटुपाकञ्च पित्तलम् ।
कफवातहरं हृद्यं दीपनं शुक्रलं लघु ।
ज्वरारोचककासघ्नं पक्वं तत् पित्तलं गुरु ॥३२॥

अथ श्वेतवार्त्ताकुनामगुणाः ।

अपरः श्वेतवार्त्ताकुः कुक्कुटाण्डफलोपमः ।
तस्माद्वीनगुणः किञ्चिदग्निमाञ्च हितः स्मृतः ॥३३॥

अथ बिम्बी(तेलाकुचा)नामगुणाः ।

बिम्बी रक्तफला गोला तुण्डी दन्तच्छदोपमा ॥३४॥
बिम्बी वान्तिप्रदा हन्ति रक्तपित्तास्रकामलाः ।
तत्फलं शीतलं स्वादु गुरु पित्तास्रदाहजित् ।
स्तम्भनं छेदनं रूक्ष्यं विषस्याधमानकारकम् ॥३५॥

अथ कारवेल्ल(करला)नामगुणाः ।

कारवेल्लं कटिल्लं स्यादुग्रकाण्डं सुकाण्डकम् ।
कारवल्लौ वारिवल्लो दृढदलापरा मृता ॥३६॥
कारवेल्ल हिमं भेदि लघु तिक्तमवातलम् ।
पित्तास्रकामलापाण्डु कफमेहकृमीन् जयेत् ॥३७॥

अथ कर्कोटकीनामगुणाः ।

कर्कोटकी पीतपुष्पा महाजाली निरुच्यते ॥३८॥
तद्वत् कर्कोटकं पुष्पं दुल्लासारुचिनाशनम् ॥३९॥

अथ वन्याकर्कोटको(तित्कांकरोल)नामगुणाः ।

वन्याकर्कोटको देवी नागारिर्विषकण्टका ॥४०॥
वन्याकर्कोटको तीक्ष्णा विषर्विसर्पकासजित् ॥४१॥

अथ डोडिकानामगुणाः ।

डोडिका विषमुष्टिः स्याद् विषग्रन्थिः सुमुष्टिका ॥४२॥
डोड़िका कफपित्तार्शः कृमिगुल्मविषापहा ॥४३॥

अथ डिण्डिश(ढ्योंडश)नामगुणाः ।

डिण्डिशो रोमशफलो डिण्डिशो सुनिर्मितः ॥४४॥
डिण्डिशो वातलो रूक्षो मूत्रलोऽश्मरिभेदकः ॥४५॥

अथ कोलशिम्बी(कटूरासिम्)नामगुणाः ।

कोलशिम्बी कृष्णफला खट्वा शूकरपादिका ॥४६॥
कोलशिम्बी समीरघ्नी गुर्वामकफपित्तकृत् ॥४७॥

अथ शिम्बीनामगुणाः ।

शिम्बी कुशिम्बी कुस्ताहशिम्बी पुस्तकशिम्बिका ॥४८॥
शिम्बी शीता गुरुर्बल्या श्लेष्मला वातपित्तजित् ॥४९॥

अथ वास्तुक(वेतोशाक)नामगुणाः ।

वास्तुकः शाकपत्रः स्यात् कम्बीरश्च प्रसादकः ॥५०॥
वास्तुकः पाचनो रूक्षो लघुः शुक्रबलप्रदः ।

स्वरः श्लेष्मपित्तार्शः कृमिदोषत्रयापहः ॥५१॥

अथ जीवन्तीनामगुणाः ।

जीवन्तकः शाकवरो रक्तनालः प्रनालकः ॥५२॥

जीवन्तो वातशत् क्षारः स्वादुपाक स्त्रिदोषनुत् ॥५३॥

अथ चिल्लीनामगुणाः ।

चिल्ली सरा लघुः शीता रुच्या मेध्याग्निदीपनी ।

बल्या रुच्या हरेत् श्लेष्मरक्तदोषत्रयकृमीन् ॥५४॥

अथ कालचक्षुःशाकनामगुणाः ।

कालशाकं कालिका स्यात् चुक्षुका चुक्षुकोऽपरः ॥५५॥

कालशाकं सरं रुच्यं वातलं कफशोफजित् ॥५६॥

रुच्यं पवित्रमायुष्यं नातिपित्तप्रकोपणम् ॥५७॥

चुक्षुः शीता सरा रुच्या स्वादो दोषत्रयापहा ॥५८॥

अथ तण्डुलीयद्वय(नटे)नामगुणाः ।

तण्डुलीयो मेघनादः भण्डीरस्तण्डुलीयकः ॥५९॥

विषघ्नः कचटोऽन्यः स्यात् मारीषो मार्षिकस्तथा ॥६०॥

तण्डुलीयो लघुः शीतो रूक्षः पित्तकफास्रजित् ।

दृष्टमूत्रमलो रुच्यो दीपनो रक्तपित्तहा ॥६१॥

मारिषो रेचनः शीतो गुरुर्मेदस्त्रिदोषजित् ॥६२॥

अथ फोगनामगुणा ।

फोगो मरुद्भवः शुद्धो सूक्ष्मपुष्पः गणादनः ॥६३॥

फोग संग्राहकः शीतो रक्तपित्तकफापहः ॥६४॥

अथ पटोलनामगुणाः ।

पटोलः पाण्डुफो राजी झुलकः कर्कशच्छदः ।

राजिफलः पाण्डुफलो राजिमानमृताफलम् ॥६५॥

तिक्तोत्तमा बोजगर्भोऽमरा राजपटोलिका ।

ज्योत्स्नी पटोलिका जाली नादेयी भूमिजम्बुका ॥६६॥

पटोलं पाचनं हृद्यं हृद्यं लघ्वग्निदीपनम् ।
स्निग्धोष्णं हन्ति कासास्रज्वरदोषचयक्षमान् ॥६७॥
पत्रं पित्तहरं शीतं तस्य वल्ली कफापहा ।
मूलं विरेचनं प्रोक्तं फलं दोषत्रयापहम् ॥६८॥

अथ चञ्चुड्दयनामगुणाः ।

चञ्चुडी वेश्मकूलोऽन्यः श्वेतराजी हृद्दलफला ॥६९॥
किञ्चिन्न्यूनगुणस्तस्माद् विशेषात् शोफपे हितः ॥७०॥

अथ पालक्या(पालङ्)नामगुणाः ।

पालक्या वास्तुकाकारा क्षुरिका चीरितच्छदा ॥७१॥
पालक्या वातला शीता भेदिनी श्लेष्मला गुरुः ।
विष्टम्भिनी मदग्लानरक्तपित्तकफापहा ॥७२॥

अथ पोतकीनामगुणाः ।

पोतक्युपोदिका प्रोक्ता मत्स्यकाली सुरङ्गिका ॥७३॥
पोतकी शीतला स्निग्धा श्लेष्मला वातपित्तजित् ।
चक्राण्डा पिच्छिला निद्रागुरुदा रक्तपित्तनुत् ।
बलदा रुचिकृत् पथ्या हृद्या दृष्टिकारिणी ॥७४॥

अथ लोणी-कुटीरनामगुणाः ।

लोणिकोक्ता हृद्यच्छोटी कुटिरम्नु कुटिम्बरः ।
दुन्दुरः स्यात् गुडोरीकः पिण्डी पिण्डीतकस्मृता ॥७५॥
लोणी रूक्षा गुरुः शीता सरा विष्टम्भिनी पटुः ।
दीपना मधुरा पाके तद्वत् कुटीरकद्गुरुः ॥७६॥
लोणिका वातला श्लेष्मरक्तमेदोविषापहा ॥७७॥

अथ गुलिवृ तिनपर्णीनामगुणाः ।

गुलिवृक्षः स्मृतिकरः स्याद् यत्तदम्लिलपर्णिका ॥७८॥
गुलिवृणी हिमा पाकी मोहदोषत्रयापहा ॥७९॥
तिनपर्णी हिमा हृद्या वातश्लेष्मविषापहा ॥८०॥

अथ सूक्ष्मपत्रनामगुणाः।

सूक्ष्मपत्रस्तीक्ष्णशाको धनुःपुष्पः सुबोधकः ॥८१॥
घौरकः कफवातघ्नः सुतीक्ष्णो नातिपित्तलः ॥८२॥

अथ टुटुकनामगुणाः।

टुटुको विटपी रूक्षः खरपत्रस्त्वरण्डजः ॥८३॥
टुटुको वातली रूक्षो विष्टम्भी कफनाशनः ॥८४॥

अथ वस्तिजनामगुणाः।

घनागमभवा वल्ली प्रसिद्धो नाम वस्तिजः ॥८५॥
घनागमे विदोषघ्नस्तत्पुष्पं मधुरं सरम् ॥८६॥
फलं तस्य सरं हृद्यमाम मिष्टन्तु वातलम् ॥८७॥

अथ शीतवार नाडीनामगुणाः।

शीतवारः कुरण्डी स्याच्चाडो तु नलिकाऽपरा ॥८८॥
शीतवारः सरो हृद्यः शोथघ्नो वातपित्तलः ॥८९॥
नाडी सरा लघुः शीता पित्तनुत् कफवातला ॥९०॥

अथ सार्षप-कौसुम्भनामगुणा।

सार्षपं सर्षपोद्भूत कौसुम्भ कुसुमोद्भवम् ॥९१॥
सार्षप बद्धविण्मूत्रं गुरूष्णं च त्रिदोषकृत् ॥९२॥
कौसुम्भं स्वादु रूक्षोष्णं कफजित् पित्तल लघु ॥९३॥

अथ चणकनामगुणा।

चणकं शाकमुद्दिष्ट दुर्जर कफवातकृत् ॥९४॥

अथ कलायनामगुणा।

कलायशाकं भेदि स्यात् लघु पित्तकफापहम् ॥९५॥

अथ चाङ्गेरी(आमरुल)नामगुणाः।

चाङ्गेरी त्वाग्निका घुष्टा क्षुद्राग्निका चतुष्पदा ॥९६॥
चाङ्गेरी दीपनी रूक्षा लघूष्णा कफवातजित्।
सपित्तला ग्रहण्यर्शःक्षुष्टातीसारनाशिनी ॥९७॥

अथ कासमर्द-गट्वननामगुणाः ।

कासमर्दः कार्कश्यः स्याद् गट्वनो गर्जरस्तथा ॥९८॥
कासमर्दौ लघुः कण्ठ्यः कासदोषविषापहः ॥९९॥
गट्वनः कटुकस्तीक्ष्णस्तिक्तोष्णो दीपनो लघुः ॥१००॥
संग्राही रक्तपित्तार्शोग्रहणीकफवातजित् ॥ १०१॥

अथ मूलकनामगुणाः ।

मूलकं हस्तिदन्तश्च बालमूलं कफान्तकम् ॥ १०२॥
मूलकं वातलं रुच्य स्वर्योष्णं पाचनं लघु ।
हन्ति विदोषजं श्वासगदाग्निगलपीनसम् ॥१०३॥
स्नेहसिद्धं तदेव स्यात् दोषत्रयविनाशनम् ॥१०४॥
शुष्कं तत् हि विशोषघ्नं लघु दोषत्रयापहम् ॥१०५॥
तत्पुष्पं श्लेष्मपित्तघ्नं फलं वातकफापहम् ॥१०६॥

अथ करीरनामगुणाः ।

करीरको गूढपत्रः क्रकचो ग्रन्थिलो मतः ॥१०७॥
करीरः कटुको भेदी तीक्ष्णोष्णः कफवातजित् ।
व्रणशोथविषार्शोघ्नः तत्पुष्पं कफपित्तजित् ॥१०८॥
फलं ग्राहि कषायोष्णं मधुरं श्लेष्मपित्तकृत् ॥१०९॥

अथ शोभाञ्जनहयनामगुणाः

शिग्रुः शोभाञ्जनः क्षवगन्धः स्याद् बहुलच्छदः ॥११०॥
रक्तोऽन्यो मधुशिग्रुस्तु श्वेतोऽन्यो हरितच्छदः ॥१११॥
तद्बीजं श्वेतमरिचं तीक्ष्णोष्णं चक्षुषे हितम् ॥११२॥
शिग्रुस्तीक्ष्णो लघुर्भेद्यो वह्निदः कफवातजित् ।
कटूष्णो विद्रधिप्लीहव्रणघ्नो रक्तपित्तकृत् ॥११३॥
मधुशिग्रुर्गुणैस्तद्वद्विशेषाद् दीपनः सरः ॥११४॥
तत्पुष्पं लघु संग्राहि वातलं कफशोथजित् ॥११५॥

फलं ग्राहि कषायोष्णं मधुरं श्लेष्मपित्तहृत् ॥११६॥

अथ लशुनद्वयनामगुणाः ।

लशुनः स्यादुग्रगन्धो यवनेष्टो रसोनकः ॥११७॥
रक्तनोऽन्यो महाकन्दो जर्जरो दीर्घपत्रकः ॥११८॥
लशुनो हृद्यो हृद्यः स्निग्धोष्णः पाचनः सरः ।
भग्नसन्धानकृत् केश्यो गुरुः पित्तासृगुद्दिदः ॥११९॥
रसायनं कफश्वासकासगुल्मज्वरारुचीः ।
हन्ति शोथप्रमेहार्शःकुष्ठशूलानिलक्रमान् ॥१२०॥
तत्पत्रं मधुरं क्षारं नाली मधुरपित्तलः ॥१२१॥
रक्तनः पित्तलो ग्राही तीक्ष्णोऽर्शोरोगनाशनः ॥१२२॥
गन्धाक्तिरसैस्तुल्यः सूक्ष्मनालः पलाण्डुवत् ॥१२३॥

अथ पलाण्डुनामगुणाः ।

पलाण्डुर्धवलाख्यश्च दुर्गन्धो मुखदूषकः ॥१२४॥
पलाण्डुस्तद्गुणैस्तुल्यः कफकृत् नातिपित्तलः ।
हरते केवलं वातं स्वादु पाके रसान् जयेत् ॥१२५॥

अथ गूरणत्रयनामगुणाः ।

गूरणः कन्दलः कन्दो गुदामयहरोऽपरः ॥१२६॥
वज्रकन्दः सुरेन्द्रः स्यात् वन्योऽन्यद्विचकन्दकः ॥१२७॥
गूरणो दीपनो रूक्षः कषायः कण्डूमत् कटुः ।
विष्टम्भी विशदो रुच्यः कफार्शःशमनो लघुः ॥१२८॥
नालं गूरणक रुच्यं कफवातहरं लघु ।
अर्शसां तु विशेषेण हितं कामाग्निदीपनम् ॥१२८॥
तद्वत् वन्यो वज्रकन्दः कफघ्नः पित्तरक्तकृत् ॥१३०॥

अथ अस्थिशृङ्खलिकानामगुणाः ।

अस्थिशृङ्खलिका वल्ली ग्रन्थिमालास्थिसंहतिः ॥१३१॥
अस्थिशृङ्खलिका हृद्या शैत्यला मधुरा हिमा ।

अस्थिसन्धानकृद् बल्या पित्तरक्तानिलापहा ॥१३२॥

अथ वाराह्यो(शूकरकन्द)नामगुणाः ।

वाराह्यो माधवी वृष्टिस्तालकन्दः शौकरो किटिः ॥१३३॥
वाराह्यो पित्तला बल्या स्वाद्वी तिक्ता रसायनी ।
वायुःशुक्राग्निकृत् मेहकफकुष्ठानिलापहा ॥१३४॥

अथ मुसलीनामगुणाः ।

मुसली तालपत्री स्यात् खलिनी तालमूलिका ॥१३५॥
मुसली हृद्या बल्या वीर्य्योष्णा शोंऽनिलापहा ॥१३६॥

अथ कच्छुकनामगुणाः ।

कच्छुका पीलुनी पीलुः फेलुका दलशालिनी ॥१०७॥
कच्छुकं वातलं ग्राहि दीपनं कफपित्तनुत् ॥१३८॥

अथ भूच्छत्रनामगुणाः ।

भूच्छत्रं पृथिवीकन्दः गिलीन्ध्रं वलक मतम् ॥१३८॥
भूच्छत्रं शीतलं बल्यं गुरु भेदि त्रिदोषजित् ॥१४०॥

अथ स्थूलकन्द(कचु)-मानकन्दनामगुणाः ।

स्थूलकन्दो ग्राम्यकन्दो मानकन्दो महच्छदः ॥१४१॥
स्थूलकन्दो गुरुः श्लेष्मवातलः पित्तशोथजित् ।
मानकः शीतलः स्वादुः पित्तरक्तहरो गुरुः ॥१४२॥

अथ कमेरुदय-शृङ्गाटनामगुणाः ।

कमेरुकं स्वल्पकन्दं सृङ्गाटजकमेरुकम् ॥१४३॥
शृङ्गाटो जलकन्दः स्यात् त्रिकोणस्त्रिकटः स्मृतः ॥१४४॥
कमेरुकं हिमं स्वादु गुरु पित्तास्रदाहजित् ।
वातघ्नं पित्तामिमर्द्दं शृङ्गाटकं तथा ॥१४५॥

अथ पिण्डु मधु गुड-खाण्ड-दन्त-रक्तालुनामगुणाः ।

पिण्डालुकं हयगन्धः काण्डालुः स्यात् तु रोमशम् ।
गुडालुर्विषयुक्तालुं खाण्डालुः स्वल्पखाण्डकम् ॥१४६॥

हस्तालुकं महत्काष्ठं रक्तकन्दं महत्फलम् ॥१४७॥
आलुकं शीतलं सर्वं विष्टम्भि मधुरं गुरु।
सृष्टमूत्रमलं रूक्षं दुर्जरं रक्तपित्तजित्।
कफानिलकरं बल्यं हृद्यं स्तन्यविवर्द्धनम् ॥१४८॥
पिण्डालुकमभिष्यन्दि तिक्तोष्णं दीपनं गुरु ॥१४९॥
मध्वालुकं पित्तकरं कटु पाके कफापहम् ॥१५०॥

अथ केयूरनामगुणाः।

केयूरं स्वल्पविटपं कन्दलः स्वादुकन्दलः ॥१५१॥
केयूरं शीतलं ग्राहि पित्तलं कफवातजित् ॥१५२॥

अत्र परिभाषा।

बलिजीर्णमकालोत्थं रूक्षं स्निग्धमभूमिजम्।
शुष्कं शाकञ्च सकलं नाश्नीयात् मूलकैर्विना ॥१५३॥
यो राज्ञां मुखतिलकः कटारमल्ल-
स्तेन श्रीमदनृपेण निर्मितेऽत्र।
यन्येऽभूत् मदनविनोदनाभिधाने
कुष्माण्डप्रभृतिरयञ्च शाकवर्गः ॥१५४॥
इति कुष्माण्डादिशाकवर्गः सप्तमवर्गः।

—०—

अथ पानीयादिवर्गः।

करेण संगृह्य रुचौ कपोले मालाङ्गुलीभिर्मृदुताड्यमानम्।
सुक्तम्बराजानुबलेन पानं नमामि कृष्णं नवनीतचौरम् ॥ १ ॥

अथ पानीयनामगुणाः।

पानीयं जीवनं नीरं कीलालममृतं जलम्।
आपोऽम्भस्तोयमुदकं पाथोऽम्बु सलिलं पयः ॥ २ ॥

पानीयं शीतलं हृद्यं हन्ति पित्तविषभ्रमम् ।
दाहाजीर्णश्रमच्छर्दिमदमूर्च्छामदात्ययान् ॥ ३ ॥
शीतलं स्तिमिते कोष्ठे गलरोगे नवज्वरे ।
ग्रहणीपीनसाध्मानहिक्कागुल्मेषु विद्रधौ ॥ ४ ॥
कासमेहारुचिश्वासपाण्डुवातामयेषु च ।
पार्श्वशूले स्नेह पीते सद्यः शुद्धौ न शस्यते ॥ ५ ॥
दिव्यं तुषारज धारं करि हैममिति स्मृतम् ।
चतुर्विधं वरं धारं लघुत्वात् तत् पुनर्दिधा ॥ ६ ॥
गाङ्गं सामुद्रजञ्चेति गाङ्गं श्रेष्ठतमं स्मृतम् ।
माघिने मासि सामुद्रं गुणैर्गाङ्गवदाचरेत् ॥ ७ ॥
स्थापिते हैमजे पात्रे राजते मृण्मयेऽपि वा ।
तज्जलं शीतलं ग्राह्यं दोषत्रयविषापहम् ॥ ८ ॥
तद्गाङ्गं सर्पदोषघ्नं पेयं सामुद्रमन्यथा ।
सक्षारं लवणं मिश्रं शुक्रदृष्टिबलापहम् ॥ ९ ॥
सौम्यं रसायनं दिव्यं मोहनिद्राविदोषजित् ।
पाचनञ्च तृषामूर्च्छातन्द्रादाहश्रमापहम् ॥ १० ॥
माधुर्यजननं ह्लादि श्रमघ्नमतिबुद्धिकृत् ।
तदेव भूमिपतितं भौममित्यभिधीयते ॥ ११ ॥
दिव्याभावे तु तत् तोयं प्रविचार्य्यं गुणागुणाः ॥ १२ ॥
कौप श्लेष्महरं क्षारं पित्तलं दीपनं लघु ॥ १३ ॥
ताडागं वातलं स्वादु तुवरं कटुपाकि च ॥ १४ ॥
याप्य पित्तकरं क्षारं कटु वातकफापहम् ॥ १५ ॥
नैर्झरं लेखनं हृद्यं कफघ्न दीपनं लघु ॥ १६ ॥
हृद्यञ्च लघु पित्तघ्नमग्निदाहास्रदीपनम् ॥ १७ ॥
चौण्ड्रायमग्निप्रद रूक्ष स्वादु श्लेष्महर लघु ॥ १८ ॥
सादेय दीपनं रूक्षं वातलं लघु लेखनम् ॥ १९ ॥

सारसं मधुरं वर्ण्यं दृष्यागं तुवरं लघु ॥२०॥
केदारं स्वाद्वभिष्यन्दि विपाके गुरु दोषलम् ॥२१॥
पाल्वल तद्वदुद्दिष्टं विशेषात् सर्वदोषकृत् ।
तोयारं वातलं शीतं रूक्षं पित्तकफापहम् ॥२२॥
घारं भूमावपतितं दिव्यं तत् सर्वदोषनुत् ॥२३॥
नैर्झरं गुरु वै शीतं विषदं कफवातनुत् ॥२४॥
हैमं गुरुतरं शीत पित्तनुद् वातवर्द्धनम् ॥२५॥
चन्द्रकान्तजलं रूक्ष लघु पित्तविषास्रनुत् ॥२६॥
दिवा रविकरैर्जुष्टं निशि शीतकरांशुभिः ।
शैवं हंसोदकाभ स्निग्धं दोषत्रयापहम् ॥२७॥
अनभिष्यन्दि निर्दोषमन्तरिक्षजलोपमम् ।
बल्यं रसायनं मेध्यं शीतं लघु सुधोपमम् ॥२८॥
वर्षासु दिव्यं पानीयमौद्भिदं वा प्रशस्यते ।
शरत्प्रसन्नमुदकमगस्त्योदयनिर्विषम् ॥२९॥
हेमन्ते सारसं तोय ताडाग वा गुणावहम् ।
वसन्तग्रीष्मयो. कौप्य वाप्यं नैर्झरमेव च ॥३०॥
प्रावृषि प्रवरञ्चोच्चं मलविट्पङ्किकारि च ॥३१॥
नद्यः शीघ्रवहाः लघ्व. सर्वा याश्यामलोदकाः ।
मन्दगाः कफपित्तघ्न्यो याश्च शैवालसेविता. ।
हिमवत्प्रभवा पथ्या नद्योऽम्लाहतवायसः ॥३२॥
गङ्गागतद्वसरयुयमुनाद्या गुणोत्तमा ।
ईषत्पित्तकराः स्वच्छाः पुण्या वातकफापहाः ॥३३॥
मलयाचलजा नद्यो लघ्वः शीघ्रवहा हिता. ॥३४॥
कृतमाला ताम्रपर्णीप्रमुखा विमलोदकाः ॥३५॥
स्थिरापङ्कतृणाद्याः ये कुर्वन्ति शीघ्रदापचीः ।
शीघ्रपाद्गिरःकण्ठगलरोगार्बुदक्रमीन् ॥३६॥

सद्यः शैलभवा नद्यो वेणीगोदावरीमुखाः ।
कुर्वन्ति प्रायशः कुष्ठमोपद्दातकफापद्दाः ॥३७॥
विन्ध्याचले भवाः शिप्रारेवाद्याः पाण्डुकुष्ठदाः ॥३८॥
पारियात्रोद्भवाः प्रोक्ता द्विधां चर्मखतीमुखाः ॥३९॥
पथ्यास्तद्वागजास्तत्र त्रिदोषघ्नो बलापद्दाः ॥४०॥
दरीजाः कुष्ठकं वह्निश्लेष्मशोफदरोगदाः ॥४१॥
प्राच्यावन्त्यपराः पश्चात् गुदजानि प्रकुर्वते ॥४२॥
मरुजा मधुरा बल्या लघवोऽग्निप्रदाः परम् ॥४३॥
पश्चिमाम्भोधिपतिताः गोमतोनर्मदादयः ।
पथ्या वातास्रपित्तघ्नो बल्याः कण्डूकफापद्दाः ॥४४॥
दक्षिणाधिगता बल्याः पित्तघ्नाः कफवातदाः ॥४५॥
पूर्वाम्भोधिवद्दा नद्यो मन्दगा गुरवो घनाः ॥४६॥
भौमानामम्भसां प्रातः सर्वेषां ग्रहणं वरम् ।
नैर्मल्यं तत्र शैत्यं तत्तेषां स च परो गुणः ॥४७॥
भुक्तादौ सलिलं पीतं कार्श्यं मन्दाग्निदोषकृत् ।
मध्येऽग्निदीपनं श्रेष्ठमन्ते स्थौल्यकफप्रदम् ॥४८॥
जीवन्ति जीवनात् जीवा जगत् सर्वन्तु तन्मयम् ।
अतोऽत्यन्ततया सुज्ञैर्न क्वचिद्वारि वार्य्यते ॥४९॥
पानीयं प्राणिनां प्राणा विश्वमेव हि तन्मयम् ।
अतोऽत्यन्तनिषेधेऽपि न क्वचिद् वारि वार्य्यते ॥५०॥
अजीर्णे वार्यितं चामे पक्वे जीर्णे च तज्जलैः ॥५१॥
तप्तस्तु विदग्धेऽन्ने यः पिबेत् शीतलं जलम् ।
विदाहः प्रशमं याति शोषमन्नस्य जीर्य्यते ॥५२॥
आकूपं दोषशमनं प्रायोऽभिष्यन्दि निन्दितम् ॥५३॥
जाङ्गलं हन्ति सकलं दोषमग्निप्रदीपनम् ॥५४॥
साधारणं हिमं स्वादु तृष्णाघ्नं हर्षदं लघु ॥५५॥

वर्षासु योऽवगाहेत पिबेदथ नवं पयः ।
पर्णादिदुष्टं लभते स वाह्याभ्यन्तरामयान् ॥५६॥
कलुषं छन्नसम्भोजपर्णनीलीव्रणादिभिः ।
दुष्टगन्धादसंस्पृष्टं सूर्याचन्द्रमसांशुभिः ॥५७॥
व्यापन्नमिति जानीयात् सर्वदोषप्रकोपकृत् ।
तोयं तद्वर्जयेत् सर्वं यच्चामनुष्यसम्भवम् ॥५८॥
व्यापन्नमिति पानीयं कथितं सूर्यतापितम् ।
तप्तायः सूर्यसिकताग्रावादिष्वथ धारितम् ॥५९॥
कर्पूरपूरपुन्नागपाटलादिसुवासितम् ।
स्वच्छं कनकमुक्तादैः शीतं दोषाय न क्वचित् ॥६०॥
तत् क्वाथ्यमान निष्फेनं निर्वंगं निर्मलं जलम् ।
तत् सर्वदोषशमनं दीपनं पाचनं लघु ॥६१॥
उष्णं तदग्निजननं लघ्वेतदग्निशोधनम् ।
पार्श्वरुक्पीनसाध्मानहिक्कानिलकफापहम् ॥६२॥
तत् पादहीनं वातघ्नमर्द्धहीनञ्च पित्तजित् ।
त्रिपादहीनं श्लेष्मघ्नं संग्राह्यग्निप्रदं लघु ॥६३॥
निहन्ति श्लेष्मसङ्घातं मारुतञ्चापि कर्षति ।
अजीर्णं जरयत्याशु पीतमुष्णोदक निशि ।
पादावशेषं सलिलं ग्रीष्मे शरदि शस्यते ॥६४॥
हेमन्ते शिशिरे वर्षास्वर्द्धहीनमथापिच ।
शृतशीतं सदा पथ्यं लघु नीरं विदोषनुत् ।
तच्च पर्य्युषितं निग्नमम्लीभूतं विदोषकृत् ॥६५॥
दिवा शृत पयो रात्रौ गुरुतामधिगच्छति ।
रात्रौ शृत दिवा पीतं तथा दोषकरं परम् ॥६६॥

अथ साधारण दुग्धनाम गुणाः ।

दुग्धं प्रसन्नं क्षीरं सौम्य सञ्जीवनं पयः ॥६७॥

दुग्धं बलकरं शीतं मधुरं वातपित्तजित् ।
स्निग्धं रसायनं मेध्यं जीवनं धातुवर्धनम् ।
चेतोरक्तगदश्वासक्षयार्शोभ्रमनुद् गुरु ॥६८॥
बालवृद्धक्षतादीनां क्षीणानां प्रयस्यते ।
प्रायः प्राणभृतां सात्म्यं विशेषादोजसे हितम् ॥६९॥

अथ गोदुग्धनामगुणाः ।

गोक्षीरं मधुरं शीतं गुरु स्निग्धं रसायनम् ।
संहृद्यं स्तन्यशुक्रघ्नं जीवनं वातपित्तनुत् ॥७०॥
क्षतक्षयवतां वरं क्षीरं क्षेतानां शीतलं गुरु ।
बालवत्सविवत्सानां गवाङ्क्षीरं त्रिदोषशुत् ॥७१॥
पिण्याकाद्यशनाज्जातं क्षीरं गुरु कफापहम् ॥७२॥

अथ अजादुग्धनामगुणाः ।

आजं सर्व्यगुणं ग्राहि विशेषाद्दीपनं लघु ।
हन्ति क्षयार्शोऽतीसारप्रदरास्रभ्रमज्वरान् ॥७३॥
अजानामल्पकायत्वात् कटुतिक्तादिभक्षणात् ।
स्तोकाम्बुपानाद् व्यायामात् पयः सर्वगदापहम् ॥७४॥

अथ आविकदुग्धनामगुणाः ।

आविकं मधुरं केश्यं स्निग्धं वातकफापहम् ।
गुरु कासेऽनिलोद्भूते केवले चानिले वरम् ॥७५॥

अथ महिषीदुग्धनामगुणाः ।

माहिषं मधुरं गव्यात् स्निग्धं गुरु बलप्रदम् ।
निद्रागुक्रकरं शीतं मलाभिष्यन्दि वह्निनुत् ॥७६॥

अथ नारीदुग्धनामगुणाः ।

नार्या लघु पयः शीतं दीपनं वातपित्तजित् ।
चक्षुःशूलाभिघातघ्नं नस्याक्षिशीतनयोर्वरम् ॥७७॥

अथ हस्तिनीदुग्धनामगुणाः ।

हस्तिन्याः स्वादु बलकृत् चक्षुष्यं शीतलं गुरु ॥७८॥

GURUKULA KANGRI VIDYALAYA 28445

अथ औष्ट्रदुग्धनामगुणाः ।

औष्ट्रं स्वादुरसं रूक्षं लवणं लघु दीपनम् ।
कृमिकुष्ठकफानाहश्वोथोदरहरं सरम् ॥७८॥

अथ आश्वदुग्धनामगुणाः ।

आश्वमुष्णं पयो रूक्ष बल्यं वातकफापहम् ।
लवणाम्लं लघु स्वादु सर्वमेकशफं तथा ॥८०॥

अथ दुग्धसामान्यनामगुणाः ।

धारोष्णं दीपनं बल्यं लघु शीतं विदोषनुत् ॥८१॥
मुहूर्तंचितयादूर्ध्वं पयो भवति विक्रियम् ।
तदेव द्विगुणे काले विषवद्वन्ति मानवम् ॥८२॥
तस्मात् शीतगुण तस्मात् मयस्तात्कालिकं पिबेत् ।
सुधासमं तदेव स्यात् धाराशीत त्रिदोषकृत् ॥८३॥
धारोष्ण शस्यते गव्यं धाराशीतन्तु माहिषम् ।
शृतोष्णमाविकं पथ्यं शृतशीतमजापयः ॥८४॥
शृतशीतं जयेत् पित्तं शृतोष्णं कफमारुतौ ।
अतिपक्वं गुरु स्निग्धं हृद्य बलविवर्द्धनम् ॥८५॥
आममामप्रद घोरमभिष्यन्दिकरं गुरु ॥८६॥
आममेव स्त्रियाः घोरं पथ्य पक्वन्तु दोषकृत् ॥८७॥
प्रामातिकं पयः प्रायो विष्टम्भि गुरु दुर्नाम ॥८८॥
रात्रौ चन्द्रगुणाधिक्याद् व्यायामपरिवर्जनात् ॥८९॥
प्रदोषशमनुद् बल्यं चक्षुष्य वातपित्तहृत् ॥९०॥
दिवाकरकराघाताद् व्यायामानिलसेवनात् ॥९१॥
विवर्णमम्लदुर्गन्धि लवणं ग्रन्थित पयः ॥९२॥
वर्जयेदम्ललवणयोगात् कुष्ठादिदोषकृत् ॥९३॥
सन्तानिकं पर रूक्ष शृतदुग्धोपरि स्मृतम् ।
सन्तानिका गुरुः शीता हृद्या पित्तास्रवातनुत् ॥९४॥

सप्तरात्परं घोरमम्लमुष्णन्तु मोरटम् ।
नष्टदुग्धं भवेन्मस्तु मोरटं जेज्जटोऽब्रवीत् ॥९५॥
घोरं तत्कालसूतायाः पीयूषघनमुच्यते ॥९६॥
पक्वं दध्ना समं क्षीरं विज्ञेया दधिकुर्चिका॥९७॥
तक्रेण तक्रकूर्चिका तयोः पिण्डः किलाटकः ।
पाकं विना स एव स्यात् क्षीरयुक्तसितान्वितः ॥९८॥
मोरटस्तु सपीयूषः कूर्चिका दधितक्रयोः ।
किलाटक्षीरगाक्काभ्यामिते निद्रामपुष्टिदाः ॥९९॥
गुरवः श्लेष्मला ह्रृद्या हृद्या वाताग्निनाशिनी ।
वातला दुर्जरा रूक्षा याहिणी तक्रकूर्चिका ॥१००॥

अथ दधिनामगुणाः ।

दधि स्क्यान पयः सम्यक् स्क्यानमीषत् तु मन्दकम् ।
तन्मिष्टमम्लमत्यम्ल मधुराम्लमिति स्मृतम् ॥१०१॥
दध्युष्णं दीपन स्निग्ध कषायानुरसं गुरु ।
पाकेऽम्लं ग्राहि पित्तास्रगोष्णमेदःकफप्रदम् ॥१०२॥
मूत्रकृच्छ्रे प्रतिश्याये शीतके विषमज्वरे ।
अतोमारेऽरुचौ कार्श्ये ग्रस्यते बलवर्द्धनम् ॥१०३॥
मन्दं त्रिदोषजनन मधुर वातपित्तजित् ।
अम्लं पित्तास्रकफकृदत्यम्लं रक्तपित्तदम् ॥१०४॥
मधुराम्लं गुणैर्मिश्रैर्दधि पूर्ववदादिशेत् ॥१०५॥
गव्यं दध्युत्तम बल्यं पाके स्वादु रुचिप्रदम ।
पवित्रं दीपनं स्निग्धं पुष्टिकृत्पवनापहम् ॥१०६॥
आजं दध्युत्तम ग्राहि लघु दीपाक्षयापहम् ।
शस्यते श्यामकाशार्ङ्गैः क्षयकार्श्येषु दीपनम् ॥१०७॥
माविकं दधि पुत्रामकफवातप्रकोपणम् ।
अभिष्यन्दिरसं पाके स्वादु प्रायेण दीपनम् ॥१०८॥

माहिषं दधि सुस्निग्धं श्लेष्मलं वातपित्तनुत् ।
ह्रस्वं विपाके मधुर गुरु रक्तप्रदूषणम् ॥१०९॥
नार्यां दधि त्रिदोषघ्न चक्षुष्य तर्पणं गुरु ।
बस्यं विपाके मधुर स्निग्धं वह्निकरं परम् ॥११०॥
हस्तिन्या दधि वीर्य्याण्ढ्यं कटु पाकेऽग्निनाशनम् ।
कषायानुरसं वर्चोवर्द्धनं कफवातजित् ॥१११॥
श्रोष्ट्रं विपाके कटुक भेदि क्षारात्मक दधि ।
निहन्त्युदरकुष्ठार्शःशूलब्रह्मानिलकृमीन् ॥११२॥
अश्वायेकशफं रूक्षं दध्यभिष्यन्दि दीपनम् ।
दीपन स्वादु चक्षुष्य वातश्लेष्मघ्नमूचनुत् ॥११३॥
सर्वेषु दधिषु श्रेष्ठं गव्यमेव गुणावहम् ।
गालितं दधि सुस्निग्ध वातघ्न श्लेष्मलं गुरु ॥११४॥
बलपुष्टिकर रूच्यं मधुर नातिपित्तहृत् ।
घृतक्षीरभव रूच्यं दधि स्निग्धं गुणोत्तमम् ॥११५॥
पित्तानिलापहं सर्वधात्वग्निबलवर्द्धनम् ।
अम्लारं दधि सग्राहि कषाय वातलं लघु ।
विट्श्लेष्मि दीपनं रूच्य ग्रहणीरोगनाशनम् ॥११६॥
सगर्धं दधि श्रेष्ठं व्रणपित्तासृदाहनुत् ।
सगुड वातनुद् ह्रस्व हृद्यं तर्पणं गुरु ॥११७॥
वसन्ते शरदि ग्रीष्मे दधि प्रायेण निन्दितम् ।
हेमन्ते शिशिरे शस्तं वर्षासु च गुणावहम् ॥११८॥
ग्राम्यते दधि नो रात्रौ शस्तं चाम्बुघृतान्वितम् ॥११९॥
दध्युत्तरो दधिस्नेहो दध्युद्भव. कटुक. सर. ॥१२०॥
दध्न. सरो गुरुर्हृद्यो वातवह्निप्रणाशन. ।
यस्तं विशोधनयाद्य: पित्तघ्ने सविवर्द्धन. ॥१२१॥
मस्तु क्षामकर बल्यं लघु भक्ताभिलाषकृत् ।

स्रोतोविशोधन क्षारादि कफवातानिलापहम् ।
अष्ठ्य दीपन शीघ्र भिनत्ति मलसञ्चयम् ॥१२२॥

अथ तक्रवर्गनामगुणा ।

दण्डाहत कालपेय गोरसाच्च विलोडितम् ।
सरस निर्जल घोल मथित रसवर्जितम् ॥१२३॥
समोदक श्वेतमय मुदश्वित्त्वर्द्धवारिकम् ।
पादोदक भवेत्तक्रमर्द्धाम्भोऽन्ये ऽवभाषिरे ॥१२४॥
तक्र ग्राहि कषायाम्ल मधुर दीपन लघु ।
वीर्योष्ण बलद रूक्ष प्रोक्षन वातनाशनम् ।
हन्ति गोयगरच्छर्दिप्रसेकविषमज्वरान् ॥१२५॥
पाण्डुमेदोग्रहणर्शोमूत्रग्रहभगन्दरान् ।
मेह गुल्ममसोसार शूलप्लीहकफक्लमान् ।
श्वित्रकोष्ठगतव्याधिकृठटणोदरापची ॥१२६॥
तक्र निदाघे शरदि दौर्बल्ये भ्रममूर्च्छयो ।
पित्तासृमदगोफघु कदाचिन्न प्रयुज्यते ॥१२७॥
शीतकाले ग्रहण्यर्श कफवातामयेषु च ।
स्रोतोनिरोधे मन्दाग्नौ तक्रमेवाभृतोपमम् ॥१२८॥
तक्रन्तु मधुर सर्व श्लेष्मल वातपित्तजित् ॥१२९॥
अम्ल वातहर तक्र रक्तपित्तप्रकोपणम् ॥१३०॥
वातेऽम्ल सैन्धवोपेत स्वादु पित्ते सशर्करम् ॥१३१॥
पिबेत् तक्र कफे रूक्ष व्योषक्षारसमन्वितम् ।
समुद्धृतघृत तक्र पथ्य लघु, विशेषत ॥१३२॥
स्तोकोद्धृतघृत तन्नादृष्य गुरु कफावहम् ।
अनुद्धृतघृत शीत गुरु पुष्टिकफप्रदम् ॥१३३॥
यान्यन्यानि दधीन्यष्टौ तद्गुण तक्रमादिशेत् ।
सरस निर्जल घोल मथितं रसवर्जितम् ॥१३४॥

दधिवद्घोलमथिते किञ्चित् तु लघु नीरतः ।
मण्डतक्रं लघुतक्रं कूर्चिका दधिसम्भवा ॥१३५॥

अथ नवनीतवर्गनामगुणाः ।

हैयङ्गवीन सरजं नवनीतन्तु मन्थनम् ।
नवनीतं लघु ग्राहि सद्यस्कं स्वादु शीतलम् ॥१३६॥
मध्यमीषत्कषायाम्लं हृद्यं पित्तानिलापहम् ।
अविदाह्यग्निकृन्नेत्र बल्यार्शोव्रणकासजित् ॥१३७॥
नवनीतं चिरोद्भूतं गुरु मेद.कफप्रदम् ।
शोथघ्नं बलकृद् हृद्यं विशेषादस्रत श्रिगोः ॥१३८॥
घीरीत्यं तदतिस्निग्ध चक्षुष्यं रक्तपित्तजित् ।
हृद्यं बलकर ग्राहि मधुरं शीतलं परम् ॥१३९॥

अथ घृतनामगुणाः ।

घृतमाज्यं हविः सर्पिराधारमृतताह्वयम् ॥१४०॥
घृतं रसायन स्वादु चक्षुष्यं गुरु दीपनम् ।
शीतवीर्यं विपाकेऽम्लोपापपित्तानिलापहम् ॥१४१॥
अल्पाभिष्यन्दि कान्त्योजस्क जीवनबृंहितृ ।
उन्मादवर्त्मज्वरोन्मादशूलानाहव्रणान् जयेत् ॥१४२॥
स्निग्धं कफप्रदं रूक्षं क्षयवीसर्परक्तजित् ।
स्वर्यं क्षतहरं प्राय' शस्यते बालवृद्धयो ॥१४३॥
घृत क्षीरभवं ग्राहि शीतलं नेत्ररोगजित् ।
निहन्ति पित्तदाहास्रमदमूर्च्छाभ्रमानिलान् ॥१४४॥
पुराणं कटुक पाके सर्पिर्दीपक्षयापहम् ।
शोचनेत्रगिर गुल्मकुष्ठापस्मारशोथजित् ॥१४५॥
योनिरोगज्वरग्लासकुष्ठार्शोगुल्मपीनसान् ।
निहन्ति दीपन वस्तिनय्यमूति. प्रशस्यते ॥१४६॥
घृतमण्डोऽपि घृतवद् गुणैस्तीक्ष्णो लघुः सरः ॥१४७॥

दशवर्षात्पर सर्पिः क्षौभमित्यभिधीयते ।
रक्षोघ्नं लघु तस्मात् तु गुणैः श्रेष्ठं महाघृतम् ॥१४८॥
घृतस्य गुणदोषौ तु क्षीरतुल्यौ समादिशेत् ।
सर्वेषु गुणकृत् गव्यमाविक निन्दितं पुनः ॥१४९

अथ तिलतैलनामगुणाः ।

तिलतैलं गुरु स्थैर्य बलवर्णकर सरम् ।
हृद्यं विकाशि विशद मधुरं रसपाकयो ॥१५०॥
सोष्ण कषायानुरस तिक्त श्लेष्मानिलापहम् ।
विपाके मधुरं तीक्ष्णं हृद्यं रक्तपित्तजित् ॥१५१॥
श्लेष्मल कटु विण्मूत्रवलक्रमिभाग्यग्नीधनम् ।
दीपन मतिद केश्य व्यवायि व्रणमेहनुत् ॥१५२॥
श्रोत्रयोनिशिर शूलनेत्ररोगविनाशनम् ॥१५३॥
मथिताच्युतविच्छिन्नभग्नक्ष्यालविषादिषु ।
घृतेऽग्निदग्धे तत्क्षय पानाभ्यङ्गादिभि सदा ॥१५४॥
घृतमब्दात्पर पक्व क्षीनवीर्य प्रजायते ॥१५५॥
तत्र पञ्चमपक्व वा चिरस्थायि गुणाधिकम् ॥१५६॥

अथ एरण्डतैलनामगुणा. ।

एरण्डतैल मधुरमुष्ण दीपनशोधनम् ।
हृद्य त्वच्य वयं स्थापि मेधाकान्तिबलप्रदम् ।
कषायानुरस सूक्ष्म यानिशुक्रविशोधनम् ॥१५७॥
हन्ति वातोदरानाहगुल्माष्ठीलाकटिग्रहान् ।
वातश्लेष्मितशूलादिव्रणशोथामविद्रधीन् ॥१५८॥

अथ कट्वतैलनामगुणाः ।

पद्मोत्पलामूलजीमूतादन्तीकर्षचित्रिमुष्णम् ।
निम्बातसीकरञ्जार्कहस्तिकर्णेन्द्रदोमयम् ॥१५९॥
गव्यिनीनिम्बक सेलं तैलं ज्योतिष्मतीोद्भवम् ।

कुसुम्भसर्षपोद्भूतं तैलं सौवर्चलक्षया ॥१६०॥
विपाके कटुकं तीक्ष्णमुष्णं तिक्तं सरं लघु।
हन्ति कुष्ठामयं श्वेष्ममेहमूर्च्छामरुमीन् ॥१६१॥

अथ निम्बतैलनामगुणाः।

निम्बतैलं जयेत् कुष्ठं व्रणश्वेष्मज्वरक्रमीन् ॥१६२॥

अथ अतसीतैलनामगुणाः।

अतसी तैलमाग्नेयं स्निग्धोष्णं कफपित्तजित्।
कटुपाकमचक्षुष्यं बल्यं वातहरं गुरु ॥१६३॥

अथ सार्षपतैलनामगुणाः।

सार्षपं कृमिनुत् तैलं कुष्ठकण्डूहरं लघु।
पित्तासृग्दूषणं हन्ति मेहकर्णशिरोगदान् ॥१६४॥

अथ कुसुम्भतैलनामगुणाः।

कौसुम्भं कटुकं तैलमचक्षुष्यं बलप्रदम्।
केवलानिलनुत्तीक्ष्णं विदाह्युष्णं विदोषकृत् ॥१६५॥

अथ ज्योतिष्मतीतैलनामगुणाः।

ज्योतिष्मतीभवं तैलं पित्तलं स्मृतिबुद्धिदम् ॥१६६॥

अथ नारिकेलतैलनामगुणाः।

अक्षोटिकास्थिमुक्ताच्चनारिकेलभवं हरित्।
तैलं पित्तानिलं केश्यं गुरु श्वेष्मकरं हिमम् ॥१६७॥

अथ शिंशपातैलनामगुणाः।

शिंशपागुरुगण्डीरशालामरदारुजम्।
तैलं कषायं कटुकं तिक्तं दुष्टव्रणापहम्।
वातरक्तविषश्वेष्मकण्डूकुष्ठानिलान् जयेत् ॥१६८॥

अथ भल्लातकतैलनामगुणाः।

भल्लातकं तीक्ष्णकरं वीर्य्योष्णं स्वादु तिक्तकम्।
कुष्ठोर्द्धाधस्त्रिदोषार्शमेदोमेहकृमीन् हरेत् ॥१६९॥

अथ पालाशमाधूकपाटलतैलनामगुणाः ।
तैलं पालाशमाधूकपाटलाफलसम्भवम् ।
कषायं मधुरं दाहपित्तश्लेष्मगदान् हरेत् ॥१७०॥

अथ चपुपादितैलनामगुणाः ।
कुष्माण्डचपुपैवारुतुम्बीकालिङ्गतिक्तकैः ।
कृतं प्रियालजीवन्तीश्लेष्मान्तकभवं तथा ॥१७१॥
तैलं गुरु स्वादुपाक शीतं मूत्रप्रवर्तकम् ।
अदीपनमभिष्यन्दि कफदं वातपित्तजित् ॥१७२॥

अथ एकैषिज्रतैलनामगुणाः ।
ऐकैषिज हिम तैलं पित्तघ्नं श्लेष्मवातकृत् ॥१७३॥

अथ यवतिक्तोद्भवतैलनामगुणाः ।
यवतिक्तोद्भवं तैलमीषत् तिक्त रसायनम् ।
दीपन लेखन मेध्य पथ्यं दीपत्रयापहम् ॥१७४॥

अथ आम्रतैलनामगुणाः ।
आम्रतैलमनातिक्त मधुरं नातिपित्तकृत् ।
कफवातहरं रूक्षं सुगन्धि विशद परम् ॥१७५॥

अथ स्नेहवर्गनामगुणाः
स्थावरा यातगमनाः स्नेहाः प्रोक्तास्तु तैलवत् ।
गौरसर्षपतैलत्व बलवर्णकर पुनः ॥१७६॥
मेदोमज्जायसा श्रेया याम्यानूपौदकौद्भवाः ।
गुरवो मधुरास्योष्णाः समीरणविनाशनाः ॥१७७॥
जाङ्गलौकसपक्षादीनां मज्ज्यानां कषायकाः ।
लघवः शीतला श्रेया रक्तपित्तनिवर्हणाः ॥१७८॥
मत्स्यदा शिष्किरादीनां वसास्याः कफलसनाः ॥१७९॥
घृतं सर्वसामिदोमज्जानो वातनाशनाः ।
वयोसरं परिज्ञेया विपाके स्वादवः परम् ॥१८०॥

अथ मद्यनामगुणाः ।

मद्यं हाला सुरा गुण्डा मदिरा वरुणात्मजा ।
सुरा गन्धोत्तमा कल्पा देवस्पृष्टा च वारुणी ॥१८१॥
मद्यं पित्तकरं प्रायं सरं रोचनदीपनम् ।
पिदाहि लघ्वविष्मूत्रं तीक्ष्णं वातकफापहम् ॥१८२॥
विधिनान्नयुतं पीतं तन्मादकृतसन्निभम् ।
अन्यथा कुरुते रोगानतिपीतं विषोपमम् ॥१८३॥
द्राक्षोत्थमविदाहित्वादृक्तपित्तेषु शस्यते ।
बलपुष्टिकरं मद्यं रक्तार्शोहारि दीपनम् ॥१८४॥
माध्वी कल्पगुणा किञ्चित् खर्जूरमनिलप्रदम् ।
तदेव विगदं रुच्यं श्लेष्मघ्नं कर्षणं लघु ॥१८५॥
गालिपिष्टिकपिष्टादिकृतं मद्यं सुरा मतम् ॥१८६॥
सुरा गुर्वी बलस्तन्यपुष्टिमेदः कफप्रदा ।
ग्राहिणी शोथगुल्मार्शोग्रहणीमूत्रकृच्छ्रनुत् ॥१८७॥
पुनर्नवागालिपिष्टैर्विहिता वारुणी मता ॥१८८॥
सुरावत् वारुणी लघ्वी पीनसाध्मानशूलनुत् ॥१८८॥
घनत्वा स्यात् सुरामण्डस्तस्मात् कादम्बरी घना ॥१९०॥
जङ्गलस्तदधः प्रोक्तो जङ्गलाम्बेदको घनः ।
पक्वान्नो जङ्गलः सारः सुरावीजन्तु किण्वकम् ॥१९१॥
प्रमन्थानाहगुल्मार्शःक्लेदारोचकवातजित् ।
दीपन्याध्मानहृत् कुक्षिशोदशूलप्रणाशिनी ॥१९२॥
कादम्बरी गुरुर्हृद्या दीपनी वातशुक्रसृक् ॥१९३॥
जङ्गलः कफनृद् ग्राही शोफार्शोंग्रहणीहरः ॥१९४॥
मेदको मधुरो बल्यस्तम्भनः शीतलो गुरुः ।
पक्वान्नो हृतसारत्वात् विष्टम्भी वातवर्धनः ॥१९५॥
किण्वकं वातशमनमहृद्यं दुर्जरं गुरु ॥१९६॥

आचिकी सा सुरा या स्यादच्छत्वक्शालितण्डुलैः ॥१९७॥
आचिकी पाण्डुशोफार्शः पित्तास्रकफकुष्ठनुत् ।
किञ्चिद्वातकरा रूक्षा दीपनी रेचनी लघुः ॥१९८॥
यवपिष्टकृत मद्यं प्रोक्तं यवसुरा च सा ॥१९९॥
कापोलको हली प्रेया मैरेयो धान्यजासवः ॥२००॥
आसवश्च सुरायाश्च द्वयोरप्येकभाजनम् ।
साधनं तद्विजानीयात् मैरेयसुभयात्मकम् ॥२०१॥
क्वचित्तु धातकीपुष्पं गुडधान्याम्बुसाधितम् ॥२०२॥
गुर्वी यवसुरा रूक्षा स्याद्विष्टम्भ त्रिदोषकृत् ।
कापोली हृंहणी हृद्या दृष्टिमान्यप्रदा गुरुः ॥२०३॥
मैरेय हृंहणं हृद्य गुरु सन्तर्पणं सरम् ॥२०४॥
मद्य सर्वरसं जात मधूलकमुदीर्यते ॥२०५॥
मधूलकं गुरु स्वादु स्निग्धं शुक्रकफप्रदम् ॥२०६॥
शुक्रलो दीपनः स्वादुः पाचनो रोचनो लघुः ।
स्त्रीविलासकरो वातशोषयन्दिविकारनुत् ॥२०७॥
मध्वासवो लघू रूक्षः कुष्ठमेहविषापहः ॥२०८॥
गौडोऽग्निवर्धनो वर्ण्यबलकृत् तर्पणः कटुः ।
तिलको हृंहणः स्वादुः सृष्टविण्मूत्रमारुतः ॥२०९॥
द्वयोः पक्वरसैः पक्वः क्षीरुः पक्वरसः स्मृतः ।
पक्वे रस एव विहितो बुधैः शीतरसो मतः ॥२१०॥
क्षीरुः पक्वरसः श्रेष्ठः स्वराग्निबलवर्णकृत् ।
वातपित्तकरो ह्रद्य श्लेष्मलो रोचनो ऽथवा ।
विबन्धमेदःशोफार्शःशोफोदरकफामयान् ॥२११॥
तस्मादल्पगुणः शीतरसः श्लेष्मलः स्मृत ॥२१२॥
आम्रवत् क्षौद्रमधुनः अम्बुरस गुडोद्भव ॥२१३॥
आम्रयो मधुनिष्यन्दः कषायोऽग्निबलप्रदः ॥२१४॥

अरिष्टासव सीधूनां गुणान् कर्माणि चादिशेत् ।
बुद्ध्या यथा स्वसंस्कारमवेद्य कुशलो भिषक् ॥२१५॥
सान्द्रं विदाहि दुर्गन्धि विरसं कृमिसङ्कुलम् ।
अद्यं तरुणं रूक्षमुष्णं दुर्भोजने स्थितम् ॥२१६॥
अल्पौषधं पर्य्युषितमत्यर्थं पिच्छिलञ्च यत् ।
कफप्रकोपि तन्मद्यं दुर्जरञ्च विशेषतः ॥२१७॥
पित्तप्रकोपि बहुलं तीक्ष्णमुष्णं विदाहि च ।
अद्यं पेशलं पूतिक्वथितं विरसं गुरु ॥२१८॥
तथा पर्य्युषितं यापि विन्द्यादनिलकोपनम् ।
सर्वदोषैरुपेतन्तु सर्वदोषप्रकोपनम् ॥२१९॥
चिरस्थितं जातरसं दीपनं कफवातजित् ।
रुच्यं प्रसन्नं सुरभि मेध्यं सेव्यं महाद्रवम् ॥२२०॥
तस्मान्नैकप्रकारस्य मद्यस्य रसवीर्य्यतात् ।
सशीघ्रादीष्णवातत्वा विकाशित्वात् त्वगङ्गनुत् ॥२२१॥
समेत्य हृदयं प्राप्य धमनीरूर्द्धमागताः ।
विधुन्वेन्द्रिय चेतांसि मदयत्याशु वीर्य्यतः ॥२२२॥
चिरेण श्लेष्मके पुंसि पातनो जायते मदः ।
अचिराद्वातिके हृष्टः पैत्तिके शीघ्रमेव च ॥२२३॥
नवं मद्यमभिष्यन्दि त्रिदोषजनकं सरम् ।
अद्यं स्नेहणं दाहि दुर्गन्धं विग्रदं गुरु ॥२२४॥
जीर्णं तदेव रोचिष्णु लघ्वग्निलापहम् ।
हृद्यं सुगन्धि सुगुणं लघु स्रोतोविशोधनम् ॥२२५॥
सात्विके गीतहास्यादि राजसे साहसादिकम् ।
तामसे निष्क्रियकर्माणि निद्रादि कुरुते तदा ॥२२६॥
शुक्तं कफघ्नं तीक्ष्णोष्णं लघु रोचनपाचनम् ।
पाण्डुकृमिहरं कृच्छ्रं भेदनं रक्तपित्तकृत् ॥२२७॥

गौडादिरसयुक्तानि मद्येपूक्तानि यानि च ।
यथापूर्वं गुरुतराण्यभिष्यन्दकराणि च ॥२२८॥

अथ काञ्जिकनामगुणाः ।

प्याक्काञ्जिकन्तु सौवीरमारनालं तु दीपनम् ।
काञ्जिकं शिग्रुरस्यर्गं पाचनं रोचनं लघु ॥२२८॥
तुषोदक यवैरामैः सतुषैः शकलोद्भतैः ॥२३०॥
सौवीरन्तु कृतन्त्वामैः पक्वैर्वा निस्तुषैर्यवैः ॥२३१॥
सर्वैरमैरसाम्ल स्यात् सौवीरकमिति क्वचित् ॥२३२॥
तुषाम्बु दीपनं हृद्यं पाण्डुकृमिगदापहम् ॥२३३॥
सौवीरक ग्रहण्यर्शोनाशनं भेदि दीपनम् ।
धान्याम्लं धान्ययोनित्वात् प्रोक्तम लघु दीपनम् ।
स्यग्दाहकरं पानात्पाचनं श्लेष्मनाशनम् ॥२३४॥
शुक्तं पाण्डुक्षयेरम्यदोषगन्ध्यकफक्लन्तनम् ॥२३५॥

अथ मूत्रनामगुणाः ।

मूत्र गोनागमहिषोष्ट्रयाजाविखरोद्भवम् ।
तत्राप्य भयेष्वर्यं पाचन दीपन लघु ॥२३६॥
लवणानुरस तिक्त रूक्ष सोत्तोषिशोधनम् ।
पित्तल कटुक हृद्यं भेदि वातानुलोमनः ॥२३७॥
लिङ्गिनि वातगुल्माशं गोकोदरकफक्लमान् ।
कुष्ठपाण्डुगदानाहविषगुल्मक्षयोदया ॥२३८॥
गोमूत्र तेषु सर्वेषु मूत्रयोनि प्रशस्तं ॥२३९॥
कस्मिमूत्रं विषार्शोघ्न कुष्ठगुल्मकृमीन् अर्यत् ।
माहिष गोकगुल्माशं पाण्डुमेहेषु शोधयेत् ॥२४०॥

अथ क्षीरामृतनामगुणाः ।

क्षीरं मेहि पित्तघ्नं बलदृष्टिमोजस्करं

अथ आजमूत्रनामगुणाः ।

आजं गुल्मविषश्वासकामलापाण्डुदोषजित् ॥२४२॥

अथ आविकमूत्रनामगुणाः ।

आविकं शोफकुष्ठार्शोमेहवर्चोग्रहापहम् ॥२४३॥

अथ गर्दभमूत्रनामगुणाः ।

गार्दभं ग्रहणीमेहकुष्ठोन्मादक्षमोन् जयेत् ॥२४४॥

अथ उष्ट्रमूत्रनामगुणाः ।

औष्ट्रमुन्मादशोफार्शःकृमिशूलोदरापहम् ॥२४५॥

अथ नरमूत्रनामगुणाः ।

नरमूत्रं गरं हन्ति सेवितं तदसायनम् ॥२४६॥

गोऽजाविमहिषीणाञ्च स्त्रीणां मूत्रं प्रशस्यते ।

खरोष्ट्रेभनराश्वानां पुंसां मूत्रं हितं मतम् ॥२४७

इति श्रीमदनपालविरचिते मदनविनोदनाम्नि निघण्टौ
पानीयादिनामविशेषवर्गोऽष्टमः ।

—०—

इक्षुकादि वर्गः ।

गृङ्खलितानेन कपेति वक्त्रे प्रसारिते वीक्ष्य ततोऽजगन्ति ।
सविस्मयं सादरमीक्ष्यमाण यशोदया नन्दसुतं नमामि ॥१॥

अथ इक्षुभेदनामगुणाः ।

इक्षुर्मधुरसो वेणुर्निःसृतो गुडपत्रकः ।
दण्डराजो मधुटणो गण्डीरी कृतपुष्पकः ॥ २ ॥
कम्बमूलो लोहितेक्षुः पौण्ड्रकः पौण्ड्रकोऽपरः ।
रसालः सुकुमारोऽपि कान्तेक्षुर्भीरुको मतः ॥ ३ ॥
इक्षुः स्वादुगुरुः शीतो दृष्यः स्निग्धो बलप्रदः ।
जीवनो वातपित्तघ्नः कफमूत्रकफक्षमोन् ॥४॥

स मूले मधुरोऽत्यर्थं मध्ये मधुर एव च।
अग्रग्रन्थिषु विज्ञेयो लवणो मूत्रलस्तथा ॥ ५ ॥
लोहितेक्षुगुरुः शीतो दाहपित्तासृक्क्षतुत् ॥ ६ ॥
पौण्ड्रकः शीतलः स्निग्धो बृंहणः कफशुक् सरः ॥ ७ ॥
कृष्णेक्षुस्तत्गुणो वंश्यः क्षारः किञ्चित् तु तत्समः ॥ ८ ॥
वंशवच्छतपौरोऽपि किञ्चिदुष्णः समीरजित् ॥ ९ ॥
कान्तारतापसौ तद्वत् काष्ठेक्षुर्वातलो हिमः।
कोशको हि गुरुः शीतो रक्तपित्तक्षयापहः ॥१०॥
सूचीपत्रो नीलपौरो नेपालो दीर्घपत्रकः।
वातलः कफपित्तघ्नः सकषायोऽतिदाहकृत् ॥ ११ ॥

अथ इक्षुरसनामगुणाः।

दन्तनिष्पीडितस्तेषां रसः पित्तास्रनाशनः।
शर्करासमवीर्यः स्यादविदाही कफप्रदः।
गुरुर्विदाही विष्टम्भी यान्त्रिकस्तु प्रकीर्त्तितः ॥१२॥

अथ मत्स्याण्डीनामगुणाः।

सिता मत्स्याण्डिका पक्वो मत्स्याण्डी बलकन्दया ॥१३॥
अन्या विषपलीकन्दा शिग्रुका क्षत्तिकामला ॥१४॥
खण्डमन्यत् खण्डसिता माधवी मधुशर्करा ॥१५॥
यवासशर्कराऽन्या सा यवासक्षायसम्भवा ॥१६॥
अन्या पुष्पसिता प्रोक्ता पुष्पमस्मृतशर्करा ॥१७॥
फाणित क्षुद्रगुडको गुडस्त्विक्षुरसोद्भवः ॥१८॥
मत्स्याण्डी ग्राहिणी वम्या गुरुः पित्तानिलापहा ॥१८॥

अथ सितोपलानामगुणाः

सितोपला सरा लघ्वी वातपित्तहरा हिमा ॥२०॥

अथ खण्डनामगुणाः।

खण्डस्तु मधुरं हृद्यं रुच्यं पुष्टिबलप्रदम् ॥ २१ ॥

अथ मधुशर्करानामगुणाः ।

माक्षवो शर्करा रूक्षा कफपित्तहरा गुरु ॥२२॥

अथ यवासशर्करानामगुणाः ।

यवासशर्करा शीता वातला कफपित्तजित् ॥२३॥

अथ पुष्पसितासर्करानामगुणाः ।

सिता पुष्पसिता हृद्या रक्तपित्तहरा लघु ॥२४॥

अथ फाणितनामगुणाः ।

फाणित गुर्वभिष्यन्दि हृद्दाह मूत्रशोधनम् ॥२५॥

अथ मधूकनामगुणाः ।

मधूक फाणित वस्तिदूषण वातपित्तलम् ॥२६॥

अथ गुडनामगुणाः ।

गुड ग्वारो गुरु स्वादुर्वातपित्ताग्निदुस्सर ।

बल्य क्रमिश्लेष्मकरो मूत्ररक्तविशोधन ॥२७॥

जीर्णो हृद्यो लघु पथ्यो नाभिपत्थ्यग्निपुष्टिकृत् ॥२८॥

हृद्योर्विकारान विमलान् यथा कुर्युर्गुणास्तथा ॥२८॥

हृद्दाहमूर्च्छापित्तास्रकविषमहृद्धरा हिमा ।

गुरवा मधुरा बल्या स्निग्धा वातहरा सरा ॥३०॥

अथ मधुनामगुणाः ।

मधु पुष्पासव पुष्परसे माक्षिकमीरितम् ॥३१॥

माक्षिक पौत्तिक क्षौद्र भ्रामर मधुविस्तरात् ॥३२॥

माक्षिक तैलसङ्काश पौत्तिक घृतसन्निभम ।

क्षौद्र कपिलवर्ण स्यात् भ्रामर स्फटिकोपमम् ॥३३॥

मधु शीत लघु स्वादु रूक्ष ग्राहि विलेखनम् ।

चक्षुष्य दीपन स्वर्य व्रणशोधनरोपणम ॥३४॥

वर्ण्य मेधाकर हृद्य विशद रोचन जयेत् ।

कुष्ठाग्न्यक्षिकासपित्तास्रक्कफमेहक्रिमक्षयान् ॥३५॥

मेदस्तृष्णावमिश्वासच्छिक्कातीसारविड्ग्रहान् ।
दाहच्छर्दिक्षयं स्तन्तु योगवाह्यल्पवातलम् ॥२६॥
माक्षिकं मधुषु श्रेष्ठं नेत्रामयहरं लघु ॥२७॥
पौत्तिकं मधु रूक्षोष्णं पित्तदाहास्रवातजित् ॥२८॥
क्षौद्र माक्षिकमप्येव विशेषान्मेहनाशनम् ॥२९॥
भ्रामरं रक्तपित्तघ्नं मूत्रजाड्यकरं गुरु ॥४०॥
नवीनं मधुभिष्यन्दि स्निग्धं श्लेष्महरं सरम् ॥४१॥
पुराणं ग्राहि तद्रूक्षं मेदोघ्नमतिलेखनम् ॥४२॥
विषादिपुष्टपुष्पेभ्यः सविषा माक्षिकादयः ।
मधु चिन्वन्ति तस्मात्तत् स्वभावात्सविषं स्मृतम् ॥४३॥
तस्मादग्न्यातपात्तप्तं तद्रुक्षं हन्ति मानवम् ।
उष्णे काले च देशे च द्रव्ये क्षौद्रं च योजितम् ॥४४॥
निरूहे छर्दने तज्ज्ञैस्तदुक्तं न निवार्यते ॥४५॥
तस्मात्पाकमलभ्यैव तयोस्तद्धि निवर्त्तते ।
आमामये जले नापि तद् द्वये न विरुध्यते ॥४६॥
मदन मधुजं सिक्थं मधुच्छिष्टं मधूलितम् ॥४७॥
मदन मृदु सुस्निग्ध भूतघं व्रणरोपणम् ।
भग्नसन्धानरुद्धातकुष्ठवीसर्परक्तजित् ॥४८॥

यो राज्ञां मुखतिलकः कटारमल्ल-
स्तेन श्रीमदनमृपेण निर्मितेऽत्र ।
अन्येऽभून्मदनविनोदनाभि धूर्षो
वर्गोऽयं मधुरमैरिसुखादिः ॥४९॥

इति मद्यवर्गः ।

—•—

धान्यादि वर्गः ।

अजन्मामृत्यु ब्रह्मजन्ममृत्यु तमालभास विशदप्रकाशम् ।
मुक्तिप्रदो बन्धसुलूखलेन वैलोक्यतात शिशुमाश्रयामि ॥१

अथ शाल्यादिनामगुणा ।

शालयो रक्तशाल्याद्या ब्रीहय षष्टिकादय ।
मुद्गादि वैदल शैल कङ्ग्वादि तृणधान्यकम् ॥२॥
क्षुद्रधान्य कुधान्यन्तु शूकधान्य यवादिकम् ।
रक्तशालिर्लोहित स्याद् गरुड शकुनाह्वत ॥३॥
सुगन्धिको महाशालि कलमस्तु कलामक ।
रक्तशालिर्दीर्घशूक पुण्ड्रो मध्यिमस्तक ॥४॥
पूर्णचन्द्रो महाशालि पुण्ड्रीक प्रमोदक ।
पुष्पाण्डक शीतभीरु काञ्चन शकुनाह्वत ॥५॥
पाण्डुगौर शारिवाख्यो रौप्यपुष्प सुगन्धक ।
हायनो दीर्घलातश्च महादूषकदूषकौ ॥ ६ ॥
शालयो मधुरा स्निग्धा बल्या बहाल्पवर्चस ।
पित्तघ्नाल्पानिलकफा सूचला लघवो हिमा ॥७॥
रक्तशालिर्वरस्तेषा बल्यो वर्ण्य स्त्रिदोषजित् ।
चतुर्थो सूचल सर्व्य शुक्रलस्तृट्ज्वरापह ।
विषघ्नश्छर्दिकिञ्चित्तन्माद्यल्पगुणा पर ॥८॥
महाशालिर्हायो बल्यो रक्तशालिगुणै समम ॥९॥
कार्मुक पोत आमोदो लघु, हायो मुकुन्दक ।
महाषष्टिककेदार पुण्याङ्कुरयकादय ॥१०॥
षष्टिका मधुरा शीता लघवो बहवर्चस ।
वातपित्तप्रशमना शालीना सदृशा गुणै ॥११॥
षष्टिक प्रवरस्तेषां लघु, स्निग्ध स्त्रिदोषजित् ।

पाके स्वादुर्मृदुर्वाह्यो वैर्य्यकारी बलप्रदः ॥१२॥
रक्तशालिगुणैस्तुल्यास्तस्मादल्पगुणाः परे ॥१३॥
कृष्णव्रीहिस्तुरितकः कुक्कुटाण्डकपाटलः ।
शलायुश्च राजीवाख्यो नन्दी जतुमुखादयः ॥१४॥
व्रीहयो मधुराः शीताः पष्टिकानां गुणैः समाः ॥१५॥
कृष्णव्रीहिर्बरस्तेषां तस्मादल्पगुणाः परे ॥१६॥
शालयो दग्धमृज्जाता लघवः रूक्षाः कफापहाः ।
स्थूलजाः स्वादवः पित्तकफघ्ना वातवर्द्धिदाः ॥१७॥
केदारा वातपित्तघ्ना गुरवः कफशुक्रलाः ॥१८॥
रौप्यातिरौप्या लघवो मूवलास्ते गुणोत्तराः ॥१९॥
छिन्नरूढ़ा हिमा रूक्षाः पित्तघ्ना लघुपाकिनः ॥२०॥
पुनर्विरोपितं सम्यग्घर्मे रूक्षं लघु स्मृतम् ॥२१॥
दीपनं पाचनं मेध्यं वातघ्नं सहरं परम् ।
व्रीहित्वं पष्टिकस्यापि भिन्नत्वं शीघ्रपाकतः ॥२२॥

अथ गोधूमनामगुणाः ।

गोधूमः सुमनः क्षुद्रो मधूलो रूपशीतलः ॥२३॥
नन्दीमुखोऽल्पगोधूमो लोकेशो वामिकोच्यते ॥२४॥
गोधूमो मधुरः शीतो वातपित्तहरो गुरुः ।
कफशुक्रप्रदो बल्यः स्निग्धः सन्धानकृत् सरः ।
जीवनो हृंहणो वर्ष्यः स्यन्दी रक्तो स्थिरत्वकृत् ॥२५॥
मधूलो शीतला स्निग्धा पित्तघ्नी मधुरा लघुः ।
शुक्लला हृंहणी वृष्या तदल्पन्दोमुखौ मतौ ॥२६॥
एतस्मात् स्थूलगोधूमात् क्षुद्रो हीनतरो गुणैः ॥२७॥

अथ यवनामगुणाः ।

यवः शुचिस्तीक्ष्णशूको निःशूकोऽसियवोऽपरः ॥२८॥
यवः कषायो मधुरः शीतः पित्तकफापहः ॥२९॥

व्रणेषु तिलवत्पथ्यो रूक्षो मेधाग्निवर्द्धनः।
लेखनो बद्धनिष्यन्दः स्वर्य्यो मेहत्वपापहः ॥३०॥
बद्धवातमलः श्यैर्य्यवर्णकारी च पिच्छिलः।
अस्मादतियवः किञ्चिद् गुणैर्न्यूनतरः स्मृतः ॥३१॥

अथ शिम्बीनामगुणाः तद्भेदाश्च।

शिम्बी मुद्गयवो माषः सतीनः सकलायकः।
मसूरचणकमङ्गल्यो मकुष्ठनिपुटादयः ॥३२॥
वेदला मधुरा रूक्षाः कषायाः कटुपाकिनः।
वातला कफपित्तघ्ना बद्धमूत्रमलाः हिमाः ॥३३॥
ऋते मुद्गमसूराभ्यामन्ये स्वाधानकारकाः।
शिम्बी विष्टम्भिनी मेहदृष्टिघ्ना वातपित्तलाः ॥३४॥
विशदा गुरवो हृद्या रूक्षाः कटुविपाकिनः ॥३५॥
सितासितादिभेदेन बहुधास्ते प्रकीर्त्तिताः ॥३६॥

अथ मुद्गनामगुणाः तद्भेदाश्च।

मुद्गो बलाढ्यो मङ्गल्यो हरितः पारदोऽपरः।
पीतः प्रचेतो बलाको माधवः परिकीर्त्तितः ॥३७॥
वनमुद्गस्तुवरको राजमुद्गस्तु खण्डकः ॥३८॥
मुद्गो रूक्षो लघुर्ग्राही कफपित्तहरो हिमः।
स्वादुरल्पानिलो नेत्रो वर्ण्योऽप्येतद्गुणः स्मृतः ॥३८॥
हरितः प्रवरस्तेषां तच्छाकं तिक्तमुत्तमम् ॥४०॥

अथ माषनामगुणाः।

माषो जीर्णकरो धारी धन्यो राजमाषकः ॥४१॥
माषो गुरुः स्वादुपाकः स्निग्धो हृद्योऽनिलापहः।
संसनस्तर्पणो बल्यः शुक्रलो हृष्य उरः ॥४२॥
भिन्नमूत्रमलः सान्यः मेदःपित्तकफप्रदः।
गुदकीलादिसंस्रावपङ्क्तिशूलानि नाशयेत् ॥४३॥

अथ राजमाषनामगुणा ।

राजमाष स्वादुरूक्ष कषायस्तर्पणो लघु ।
ग्राही वातकफस्तन्यबहुवर्चोरुचिप्रद ॥४४॥

अथ मकुष्ठनामगुणा ।

मकुष्ठो वनमुद्ग स्यात् मकुष्ठकमुकुष्ठको ॥४५॥
मकुष्ठो वातलो ग्राही कफपित्तहरो लघु ।
वान्तिजिन्मधुर पाके कृमिकुज्वरनाशन ॥४६॥

अथ निष्पावनामगुणा ।

निष्पावोऽनिलपित्तास्रमूत्रस्तन्यकर सर ।
विदाह्युष्णो गुरु श्लेष्मशोफकृत् शुक्रनाशन ॥४७॥

अथ सतीननामगुणा ।

वर्त्तुलस्तु सतीन स्यात् हरेणु स्वल्पवर्त्तुल ॥४८॥
वर्त्तुल शीतलो ग्राही कफपित्तहरो लघु ।
विपाके मधुरो रूक्षो हरेणुस्तद्गुण स्मृत ॥४८॥

अथ कलायनामगुणा ।

कलाय खण्डिक प्रोक्तस्त्विपुट क्षुद्रखण्डिक ॥५०॥
कलाय कफपित्तघ्नो ग्राही शीतोऽतिवातल ।
त्रिपुटोऽपि गुणैरेव तच्छाक कफपित्तजित् ॥५१॥

अथ चणकनामगुणा ।

चणको हरिमन्थ स्यात् वाजिमन्थश्च जीवन ॥५२॥
चणक शीतलो रूक्षो रक्तपित्तकफापह ।
लघु कषायो विष्टम्भी वातल कुष्ठनाशन ॥५३॥

अथ मसूरिनामगुणा ।

मसूरिकारिर्मसूरिर्मङ्ग्या पाण्डुरापल ॥५४॥
मसूरिर्मधुर पाके सग्राही शीतलो लघु ।
कफपित्तास्रजिद् बल्य तच्छाक लघु तिक्तकम् ॥५५॥

अथ कुलत्थनामगुणाः ।

कुलत्थयवकृष्णः कुलालो वनजोऽपरः ॥५६॥
अपरा दृक्प्रसादा च चक्षुष्या च कुलत्थिका ॥५७॥
कुलाली लोचनहिता कुम्भकारी मलापहा ॥५८॥
कुलत्थः कटुकः पाके कषायो रक्तपित्तकृत् ।
लघुर्विदाही वीर्योष्णः श्वासकासकफानिलान् ।
हन्ति हिक्काश्मरीशुक्रदाहानाहान् सपीनसान् ॥५९॥
स्वेदसंग्राहको गुल्मभेदःकृमिहरः परः ॥६०॥
वन्ध्यो विशेषतः श्रोतो नेत्रामयविषापहः ॥६१॥

अथ तिलनामगुणाः ।

तिलपुष्पस्तैलफलस्तिलपिञ्जोऽपरः मितः ।
जातिलो वनजातः स्यादाढकी तुवरी मता ॥६२॥
तिलः कषायो मधुरस्तिक्तकः कटुको रसे ।
विपाके कटुकः स्वादुः स्निग्धोष्णः कफपित्तलः ॥६३॥
बल्यः केश्यो हिमस्पर्शस्त्वच्यः स्तन्यो व्रणे हितः ॥६४॥
वन्योऽल्पमूत्रक्षुद्वातनाशनोऽग्निमतिप्रदः ॥६५॥
कृष्णः श्रेष्ठतमस्तेषु शुक्लो मध्यमः मितः ।
अन्ये हीनतराः प्रोक्तास्तज्ज्ञैः रक्तादयस्तिलाः ॥६६॥

अथ तुम्बरीनामगुणाः ।

तुम्बरी ग्राहिणी गोता लघुः कफविषास्रजित् ॥६७॥

अथ अतसी(तिसि)नामगुणाः ।

अतसी मरुणा नीलपुष्पा चेत् सा उमा क्षुमा ॥६८॥
अतसी शुक्लदृष्टिघ्नी स्निग्धा वातास्रजिद् गुरुः ॥६९॥

अथ कुसुम्भनामगुणाः ।

कुसुम्भं पावकः पीतमलक्तं वस्त्ररञ्जनम् ॥७०॥
तद्बीजं वरटी गुर्वी स्यादृष्या वातनाशना ॥७१॥

कुसुम्भं वातलं क्षच्छ्ररक्तपित्तकफापहम् ।
वराव्यातसीवद्दिष्टा विशेषाद्विषनाशिनी ॥७२॥

अथ सर्षपनामगुणाः ।

सर्षपः कटुकः स्नेहो भूतघ्नो रक्षितामलः ।
तन्तुभोज्यः स उद्दिष्टः सिद्धार्थः श्वेतसर्षपः ॥७३॥
राजिका चास्तरी राजो सुतीक्ष्णः कृष्णसर्षपः ॥७४॥
सर्षपः कफवातघ्न स्तीक्ष्णोष्णो रक्तपित्तकृत् ।
किञ्चिदुष्णोऽग्निदः कुष्ठ कोठकृमीन् हरेत् ॥७५॥
राजिकास्तद्गुणा ज्ञेयास्तीक्ष्णास्तोक्ष्णा विशेषतः ॥७६॥

अथ गणनामगुणाः ।

गणः प्रोक्तो मातुलानी जन्तुतन्तुर्मङ्गल्यणः ॥७७॥
गणो हिमो गुरुर्ग्राही तत्पुष्पं प्रदरासृजित् ॥७८॥

अथ क्षुद्रधान्यनामगुणाः ।

कङ्गुश्यामाकनीवारवरकोद्दालनर्त्तकाः ।
वरट्टिका तोदपर्णी कोद्रवश्च मधुलिका ॥७९॥
नन्दीमुखो वेणु यवा प्रियङ्गुः कोरदूषकः ।
गवेधुका नलो नाली मुञ्जन्दं वारिकादिकम् ॥८०॥
क्षुद्रधान्यं लघु स्वादु कटुपाकि विलेखनम् ।
रूक्षोष्णं बद्धनिस्यन्दं वातपित्तप्रकोपणम् ॥८१॥
पीतशूकलिका कङ्गुः प्रियङ्गुः कर्कटो मता ॥८२॥
सितकङ्गुस्तु मुसटी रक्तकङ्गुस्तु गोधिका ॥८३॥
चीनकः काककङ्गुः स्यात् श्यामाकः शष्पकङ्गुकः ॥८४॥
गाम्यादयः कङ्गुभेदाः कोद्रवः कुरसः स्मृतः ॥८५॥
कोद्रवः कोरदूषः स्यादुद्दालो वनकोद्रवः ॥८६॥
प्रियङ्गुः पित्तजिद् हृद्यो भग्नसन्धानकृद् गुरुः ॥८७॥
श्यामाकः शोषणः शीतो रूक्षः पित्तकफापहः ॥८८॥

कोद्रवः वातलो ग्राही विषपित्तकफान् जयेत् ॥८८॥

अथ नीवारनामगुणाः ।

नीवार ऊंडकानाडी मुनिब्रीव्हिर्मुनिप्रियः ॥८०॥

नीवारः शीतलो ग्राही पित्तघ्नः कफवातकृत् ॥८१॥

अथ यवनालनामगुणाः ।

यवनालो देवधान्यं जूर्णाह्वो जूनलो नलः ॥८२॥

यवनालः स्वादु शीतो वातलः कफपित्तजित् ॥८३॥

अथ गवेधुकानामगुणाः ।

गवेधुका कर्पणी स्यात् गोजिह्वा कर्पिणी मता ॥८४॥

गवेधुका कटुः स्वाद्वी काश्यंकृत् कफनाशिनी ॥८५॥

अत्रपरिभाषा ।

अपर्याप्तं व्याधिहतमनार्त्तवमभूमिजम् ।

नवं जन्त्वादिभिर्जुष्टं न धान्यं गुणवन्मतम् ॥८६॥

धान्यं नवमभिष्यन्दि गुरु स्वादु कफप्रदम् ॥८७॥

वर्षोषितं सर्वधान्यं गौरवं परिमुञ्चति ॥८८॥

न मुञ्चति तदा वीर्यं क्रमात् मुञ्चत्यतः परम् ।

विदाहि गुरु विष्टम्भि विरूढं दृष्टिदूषणम् ॥८९॥

एतेषु यवगोधूमतिलमाषा नवा हिताः ।

रूक्षाः पुराणा विरसा न तथा गुणकारिणः ॥१००॥

इति धान्यवर्गो दशमः ।

—०—

अन्नादिवर्गः ।

राधा हरिं चरणयोः पतितं कराभ्यां

कोपाज्जघान तमुदीक्ष्य पुनर्हसन्तम् ।

तत्पादयोः क्षमयलक्षितामियाता-

सुत्थापयन् जयति केतवगोपवेष. ॥१॥

अथ आहारनामगुणाः ।

आहारो भोजनं जग्धिर्नित्यंगो जीवनं तथा ॥२॥
आहारो बलकृत् सद्यःप्रीणनो देहधारकः ।
भोजस्तेजःस्वरोत्साहधृतिस्मृतिमतिप्रदः ॥३॥

अथ भक्तनामगुणाः ।

भक्तमन्धस्तु भिस्साऽहङ्करं दीदिविरोदनः ॥४॥
भक्तं वह्निकरं पथ्यं तर्पणं मूत्रलं लघु ॥५॥
सधौतं प्रस्तुतं चोष्णं विशदं गुणवन्मतम् ॥६॥
अधौतमस्रुतं शीतं गुरु रूक्ष्यं कफप्रदम् ॥७॥
भृष्टतण्डुलजं रूक्ष्यं सुगन्धि कफजिल्लघु ॥८॥
भक्तं मांसं फलं क्षीरं वैदलान्नादिसाधितम् ।
स्नेहशाकैर्गुरुतरं हृद्यं बल्यं कफप्रदम् ॥९॥
रसोदनो गुरुर्हृद्यो बल्यो वातज्वरापहः ॥१०॥
घोलभक्तं ग्रहण्यर्शःश्रमघ्नं पाचनं हिमम् ॥११॥
अत्युष्णामां बलहरं शीतमुष्णञ्च दुर्जरम् ।
अतिक्लिन्नं ग्लानिकरं दुर्जरं तण्डुलान्वितम् ॥१२॥
सौमनस्यं बलं पुष्टिमुत्साहं हर्षणं सुखम् ॥१३॥
स्वादु सञ्जनयेदन्नं मांसस्वादु विपर्ययम् ॥१४॥

अथ यवागूरादिलक्षणम् ।

यवागूः षड्गुणे तोये संसिद्धा विरलद्रवा ॥१५॥
चतुर्गुणे तु संसिद्धा विलेपी घनमिक्थिका ॥१६॥
पेया सिक्थान्विता तोये चतुर्दशगुणीकृता ॥१७॥
मण्डश्चतुर्दशगुणे सिद्धस्तोये त्वसिक्थकः ॥१८॥

अथ यवागूगुणाः ।

यवागूर्वातिनो दृष्ट्याज्वरघ्नी वस्तिशोधनी ॥१९॥

अथ विलेपीगुणाः ।

विलेपी दीपनी बल्या हृद्या संग्राहिणी लघुः ।
व्रणाक्षिरोगिणां पथ्या तर्पणी वातज्वरापहा ॥२०॥

अथ पेयागुणाः ।

पेया कुक्षिगदक्लोतिज्वरस्तम्भातिसारजित् ।
रुच्याग्निक्लघुदीपमलस्रंसानुलोमनी ॥२१॥

अथ मण्डगुणाः ।

मण्डो ग्राही लघुः शीतो दीपनो धातुसाम्यकृत् ।
सोतोमार्दवकृत् पित्तज्वरश्रमापहः ॥२२॥

अथ यावमण्ड लाजमण्डनामगुणाः ।

यावमण्डो यवैर्भृष्टैर्लाजमण्डस्तु धालिभिः ॥२३॥
यावमण्डो लघुर्ग्राही शूलानाहविदोषजित् ।
नवज्वरेऽपि पथ्योऽयं पटोलमगधान्वितः ॥२४॥
लाजमण्डो लघुर्ग्राही सद्यः पाचनदीपनः ॥१५॥

अथ अष्टगुणमण्डनामगुणाः ।

तण्डुलैरर्धमुद्गांशैः किञ्चिद्भृष्टैस्तु पाचितैः ।
स्निग्धोष्णधनिकापञ्चविकटुसंस्कृतः ॥२६॥
श्रेयः सोऽष्टगुणो मण्डो ज्वरदोषत्रयापहः ।
रुक्षः क्षुद्बोधकः प्राणदीपनः शीतलो लघुः ॥२७॥

अथ मुद्गयूषनामगुणाः ।

यूषः कृतो वैदलानामष्टादशगुणेऽम्भसि ॥२८॥
मुद्गानामुत्तमो यूषो दीपनः शीतलो लघुः ।
व्रणोर्ध्वजन्तुरुग्दाहकफपित्तज्वरास्रजित् ॥२९॥

अथ दाडिमामलकयूषनामगुणाः ।

दाडिमामलकैर्यूषः पित्तवातहरो लघुः ॥३०॥

अथ मुद्गामलकयूषनामगुणाः ।

मुद्गामलकयूषस्तु भेदनः कफपित्तजित् ।
वह्न्दाहश्रमनः शीतो मूर्च्छास्यममदापहः ॥३१॥

अथ कुलत्थयूषनामगुणाः

कुलत्थयूषो गुल्मार्शःकफवाताश्मशर्करा: ।
तृणीप्रतृणीमेदांसि निहन्ति त्वग्विकृत् सरः ॥३२॥

अथ सूप्यमूलकयूषनामगुणाः ।

सूप्यमूलकतो यूषो गलग्रहकफज्वरान् ।
हन्ति श्वासप्रतिश्यायकासमेदोऽरुचिक्लमान् ॥३३॥

अथ चणकयूषनामगुणाः ।

चणकैर्विहितो यूषोऽनुष्णस्तुवरको लघुः ।
रक्तपित्तप्रतिश्यायकासपित्तकफापहः ॥३४॥

अथ मकुष्ठयूषनामगुणाः ।

मकुष्ठयूषः संग्राही पित्तश्लेष्मज्वरापहः ।
लघुः सन्तर्पणः पथ्यो हृद्यः पीनसकासजित् ॥३५॥

अथ कृताकृतयूषनामगुणाः ।

यूषः कृताकृतोऽनयणः स्नेहक्षाराभिसाधितः ॥३६॥
यथाकृतैर्विना सिद्धः क्रमाद् गुरुलघू च तौ ॥३७॥

अथ यूषसामान्यनामगुणाः ।

यूषा गोरसधान्याम्लफलाम्लादिभिरन्विताः ।
यथोत्तरं गुरुतरा वातघ्ना रुचिकारिणः ॥३८॥
यैरम्लैरौषधैर्यैश्च कृता भक्ष्यादयो बुधैः ।
विद्यात्तैः सदृगुणानेतांस्तदृगुणानेव निर्दिशेत् ॥३९॥

अथ सूप्यनामगुणाः ।

सूप्यस्तु सूप्यशी गुष्टैः शिम्बीजैर्निष्टुषैः कृतः ॥४०॥

सूप्य विष्टम्भि रुच्य स्यात् निरम्लन्तु विशेषत ।
निस्तुष भृष्टसिद्ध तल्लाघव सुतरा व्रजेत् ॥४१॥

अथ क्षमरानामगुणा ।

क्वचित्समाषै क्षाप्येव क्षमरा तिलतण्डुलै ।
क्षमरा बलकृद् ग्राह्या सिद्धा तण्डुलवेदलै ॥४२॥
क्षमरा शुक्रला बल्या गुरु पित्तकफप्रदा ।
दुर्जरा वर्तिविष्टम्भमलघ्नवातनाशिनी ॥४३॥

अथ क्षिप्रानामगुणा ।

क्षिप्राऽपि तद्गुणा सेपा सुधान्यगुणकारिणी ॥४४॥

अथ चौरियोनामगुणा ।

चौरियो परमान्न स्यात् पायस चौरतण्डुलै ॥४५॥
चौरियो दुर्जरा बल्या धातुपुष्टिप्रदा गुरु ।
विष्टम्भिनी हरेत् पित्तरक्तदृष्णाग्निमारुतान् ॥४६॥

अथ राजक्षाण्डवादिनामगुणा ।

गुडादिपक्व क्षथितमाममाम्रफल पुन ।
स्नेहैलामागरैर्युक्त ज्ञातव्यो राजक्षाण्डव ॥४७॥
सितारुचकसिन्धूत्थै सह चाम्लपरूपकै ।
निम्बूफलरसैर्युक्तो रागो राजिकया कृत ॥४८॥
क्षाण्डवा मधुराम्लादिरससयोगसम्भवा ।
दीपना हृद्या रुच्यास्तीक्ष्णा हृद्या श्रमापहा ॥४९॥

अथ क्षण्डाम्र क्षण्डामलकनामगुणा ।

आम्रामलकलेह्याद्या हृद्या बुद्धिबलप्रदा ।
तर्पणा रोचना स्निग्धा मधुरा गुरवस्तथा ॥५०॥

अथ रसालानामगुणा ।

शर्करा दधिमध्याज्यमरिचैलादिसस्कृतम् ।

मथितं कान्तमानिन्या कर्पूरपरिवासितम् ॥५१॥
रसाला शिखरा प्रोक्ता मार्जिका माष्टिका बुधैः ॥५२॥
रसाला शुक्तला वल्या रोचनी वातपित्तजित् ।
स्निग्धा गुरुः प्रतिश्यायं विशेषेण विनाशयेत् ॥५३॥

अथ पाननामगुणाः ।

द्राक्षाम्लिकापरूषादिजलं खण्डादिमिश्रितम् ।
मरिचार्द्रककर्पूरचातुर्जातादिसंस्कृतम् ।
पानकं द्विविधं तस्मादम्लानम्लविभेदतः ॥५४॥
द्राक्षाखर्जूरकाम्रार्यमम्बुकपरूषकैः ।
पञ्चसाराभिधे पाने चन्द्रसूर्यौ धिवासितम् ॥५५॥
पानकं मूत्रलं हृद्यं प्रीणनन्तु श्रमापहम् ।
यथा द्रव्यगुणं तत् तु गुरु लघ्वादि निर्दिशेत् ॥५६॥
पञ्चसाराभिधं पिण्डं दाहश्रमापहम् ॥५७॥
मृद्वीकं श्रमदाहास्रपित्तक्लमतृषापहम् ।
रुचाग्नां कोमलं हृद्यं पाचनञ्च बलप्रदम् ॥५८॥
अम्लिकाया रसस्तृष्णाक्लमिदाहश्रमापहः ॥५९॥

अथ सदकनामगुणाः ।

निःस्नेहं दधि निर्मथ्य पचेत् शर्करयान्वितम् ।
मध्योषदाडिमाजाजिः सदकोऽयमुदाहृतः ॥६०॥
सदको रोचनः स्वर्ग्यः पित्तानिलहरो गुरुः ।
दीपनस्तर्पणो बल्यः श्रमक्लमतृषापहः ॥६१॥

अथ पोलिकादिनामगुणाः ।

कुर्यात् समितयाऽतीव तन्वी पर्पटिका सती ।
खेदयेत् तप्तके तान्तु पोलिकां तां सगुर्वुवाः ।
तां खादेत् सर्पिषायुक्तां तस्या मण्डकवत् गुणाः ॥६२॥

मण्डकः सूचितः सूक्ष्म. कर्पूरादिषु पाचितः ॥६३॥
सं एव किञ्चिच्छूलस्तु बुधैः पूपालिका मता ॥६४॥
अङ्गारकर्कटो सैव विज्ञेयाङ्गारयाचितः ॥६५॥
अत्युष्णो मण्डकः पथ्यः श्लोतः स गुरुरुच्यते ॥६६॥
अङ्गारमण्डको ग्राहो लघुर्दोषत्रयापहः ॥६७॥
पोलिका कफकृद् बल्या पित्तला वातनुद् गुरुः ॥६८॥
अङ्गारकर्कटो बल्या हृंहणो शुक्रला लघुः ।
दीपनो कफहृद्रोगपीनसश्वासवातजित् ॥६९॥

अथ शालिभक्ष्यनामगुणाः ।

शालिपिष्टकृता भक्ष्या नातिबल्या विदाहिनः ।
अहृद्या गुरवः श्लेष्मकफपित्तप्रकोपणाः ॥७०॥

अथ गोधूम-वैदलाभक्ष्यनामगुणाः ।

गोधूमविहिता भक्ष्या बल्याः पित्तानिलापहाः ॥७१॥
वैदला वातला भक्ष्या गुरवस्तुवरा हिमाः ॥७२॥

अथ मापभक्ष्यादिनामगुणाः ।

मापपिष्टकृता भक्ष्या बल्याः पित्तकफप्रदाः ॥७३॥
विचार्यौत्तरगुणान् भक्ष्यानन्यानपि विनिर्दिशेत् ॥७४॥

अथ गुडयुक्तभक्ष्यनामगुणाः ।

गौड़िका गुरवो भक्ष्या वातघ्ना कफशुक्रलाः ॥७५॥

अथ घृतपक्वभक्ष्यनामगुणाः ।

घृतपाचितभक्ष्यास्तु बल्याः पित्तकफापहाः ॥७६॥

अथ तैलपक्वभक्ष्यनामगुणाः ।

तैलजा दृक्समीरघ्नास्तूष्णपित्तासृदूषणाः ॥७७॥

अथ दुग्धभक्ष्यनामगुणाः ।

दुग्धलोडितगोधूमशालिपिष्टादिनिर्मिताः ॥७८॥
वातपित्तहरा भक्ष्या हृद्याः शुक्रबलप्रदाः ॥७९॥

अथ घृतपूरनामगुणाः ।

चौरेण मर्दितं चूर्णं गोधूमानां सुगालितम् ।
विस्तार्य सर्पिषा युक्तं ततः खेतविमिश्रितम् ।
घृतपूरोऽयमुद्दिष्टः कर्पूरमरिचान्वितः ॥८०॥
समितो मर्दितः क्षीरनारिकेलसितादिभिः ।
अवगाढे घृते पक्वे घृतपूरोऽपरः स्मृतः ॥८१॥
घृतपूरो गुरुर्वृष्यो हृद्यः पित्तानिलापहः ।
सद्यःप्राणप्रदो बल्यः क्षतजिद् बृंहणः परः ॥८२॥

अथ संयावनामगुणाः ।

समितां सर्पिषा भृष्टां खेतां मरिचमिश्रिताम् ।
एलालवङ्गकर्पूरचूर्णादिपरिसंस्कृताम् ॥८३॥
क्षिप्त्वान्यसमितालम्बपुटेषु सुघृते पचेत् ।
ततः खण्डे न्यसेत् पक्वं संयावोऽयमुदाहृतः ॥८४॥
समिता मधुदुग्धेन मर्दयित्वा सुशोभनम् ।
पचेद् घृतोत्तरे खण्डे नासेत् पक्वे नवे घटे ॥८५॥
ततो मरिचचूर्णैलाखण्डचूर्णावचूर्णितम् ।
कुर्यात् कर्पूरसंयुक्तं संयावममृतोपमम् ॥८६॥

अथ मधुशीर्षकनामगुणाः ।

मर्दयित्वा तु समितामपूपान्सनवः कृताः ।
पक्वा घृतेऽसिते पाके मण्डिता मधुशीर्षिका ॥८७॥
घृतेन मर्दितान्तोयैः समितां मृदु मर्दयेत् ॥८८॥
मातुलुङ्गत्वचा खण्डिपक्वे नार्द्रकपूरितम् ।
विधाय घृपकं हृद्यं गन्धाढ्यं केशरान्वितम् ॥८९॥
पक्वा सर्पिषि खण्डे च मलितो मधुशीर्षकः ॥९०॥

अथ मृदुपूपकनामगुणाः ।

समितां गुडतोयेन मेलयित्वा सुगालितम् ।

घृते विस्तार्य्य विपचेत् सुइत्तान् मृदुपूपकान् ॥८१॥

अथ दधिपूपकनामगुणाः।

गालिपिष्टं युतं दध्ना मर्दयित्वा घृते पचेत्।
वेष्टयेत् पक्वखण्डेन सुइत्तान् दधिपूपकान् ॥८२॥

अथ विस्यन्दनामगुणाः।

संयावा मधुशीर्षाद्याः पूपका दधिसम्भवाः ॥८३॥
गुरवो ह्यंहृणा हृद्या हृद्याः पित्तानिलापहाः ॥८४॥
एते संस्कारभेदेन विविधास्तेऽपि तद्गुणाः ॥८५॥
दधिक्षीरसमे पक्वा त्वर्द्धभागावशेषिते।
आपचेद्रक्तशालीनां तण्डुलान् तिलसंयुतान् ॥८६॥
प्रियालपनसादीनां बीजमुष्टिं समापचेत्।
क्षीरतुल्यं घृतञ्चैव शर्करा चैव तत्समा ॥८७॥
सिद्धस्निकटुकोपेतः कर्पूरेणाधिवासितः।
एष विस्यन्दनो नाम देवलोकेऽपि दुर्लभः ॥८८॥
यस्मात् पक्वेऽपि हि घृतं स्यन्दते सर्वतोमुखम्।
तस्मात् सूपविधानज्ञैर्विस्यन्दो विधिवत् स्मृतः ॥८९॥
विस्यन्दो ह्यंहृणो हृद्य पित्तानिलहरो गुरुः ॥१००॥

अथ लप्सि(मोहनभोग)नामगुणाः।

समितां भर्जयेत् तप्ते घृते ग्वे तां ततो न्यसेत्।
वारिमज्जादिसंयुक्तां पयसा योजयेत् तदा ॥१०१॥
एषैलादियुता तज्ज्ञैर्लप्सिका ललिता मता ॥१०२॥
लप्सिका ह्यंहणो हृद्या वातपित्तहरा गुरुः ॥१०३॥

अथ फेनीनामगुणाः।

फेनिका पुटिनी शुभ्रा वातपित्तहरा लघुः ॥१०४॥
लक्षणं फेनिकादीनां सूपशास्त्रात् विचारयेत् ॥१०५॥

अथ मोदकनामगुणाः ।

मोदका लड्डुकाः प्रोक्तास्ते चानेकविधा मताः ॥१०६॥
तेषामश्लत्वप्राप्तानां न्यसेद् गोधूमगालिताम् ॥१०७॥
दधि घीरं मुष्टियुष्टं मन्थिता मापपिष्टकः ।
शूरणार्द्रं कटुमाक्षड्गालूकामिषमत्स्यकाः ॥१०८॥
इत्यादिभिर्बहुविधाः कल्पास्ते सूपशास्त्रतः ।
द्रव्यं विचार्य्य मतिमान् तद्गुणानपि निर्दिशेत् ॥१०९॥
मोदका दुर्जरा हृद्या बलदाः पित्तानिलापहाः ॥११०॥

अथ मापवटकनामगुणाः ।

माषमुद्गादिपिष्टोत्थाः कटुकाः वटिकादयः ।
तत्कारणगुणान् ज्ञात्वा तद्गुणानपि निर्दिशेत् ॥१११॥
माषाणां वटको हृद्यो बल्यो वातहरो गुरुः ।
विष्टम्भी घोलवटको विदाही पवनापहः ॥११२॥

अथ शाण्डकवटकनामगुणाः ।

शाण्डको वटको दृष्टिनाशनो दीपनो गुरुः ॥११३॥

अथ तुषाम्बु-पूपलीवटकनामगुणाः ।

तुषाम्बुवटको रुच्यः पित्तल: कफवातजित् ॥११४॥
पूपली शुष्कला रुच्या विष्टम्भी कफवातकृत् ॥११५॥

अथ सोमालिकानामगुणाः ।

सोमालिका गुरुर्ज्ञेया रोचनो पित्तनाशिनी ॥११६॥

अथ कुण्डलिकानामगुणाः ।

द्विप्रस्थां शुद्धसमितां प्रस्थं गोधूमगालितम् ।
विमर्द्य पयसा स्थाप्यं व्रजेदावत्तदम्लताम् ॥११७॥
सच्छिद्रे नारिकेलस्य पात्रे निक्षिप्य निर्मले ।
परिभ्राम्य घृते तप्ते मन्दाग्नौ तु विपाचयेत् ॥११८॥
कर्पूरवासिते पक्वे सिक्थेया नृपवल्लभा ।

सुपक्का कङ्गणाकारा सितालेहे विनिक्षिपेत् ॥११९॥
सातु कुण्डलिका नाम्ना पुष्टिकाग्निबलप्रदा ।
धातुवृद्धिकरी हृद्या हृद्या चेन्द्रियतर्पणी ॥१२०॥
सश्यामश्वेतत्वमायाया न्यसेद्गोधूमगालिताम् ॥१२१॥

अथ कुल्मायानामगुणा ।

गोधूमाद्यास्तु कुल्मापा मर्दस्निग्धा मता क्वचित् ॥१२२॥
कुल्मापा गुरवो रूक्षा वातला भिन्नवर्चस ॥१२३॥

अथ मन्थनामगुणा ।

यक्तावस्तु घृताभ्यक्ता शीतवारिविलोडिता ।
नातिद्रवो नातिसान्द्रो मन्थ सज्ञि प्रकीर्त्तित ॥१२४॥
मन्थो बलकर सद्य परिणामे बलावह ।
मोहतृष्णाचयच्छर्दिकुष्ठदाहश्रमान् जयेत ॥१२५॥
द्राक्षा सितेक्षुखरसैर्मिश्रा पित्तासदाहजित् ॥१२६॥
द्राक्षा मधुयुता बल्या कफश्रममदापहा ॥१२७॥
वर्गत्रयसमायुक्ता दीपवर्चोऽनुलोमत ॥१२८॥

अथ यवनामगुणा ।

नवोननिस्तुषोद्भृष्टा यवचूर्णश्च शक्तव ॥१२९॥
यवागूर्यवजा शीता दीपना लघव सरा ।
कफपित्तहरा रूक्षा लेखना पानतस्तु ते ॥१३०॥
मद्यो बलप्रदा पथ्या घर्मादिक्रान्तदेहिन ॥१३१॥
निस्तुषेक्षणके भृष्टे तुर्य्यांशेक्षु यवे कृता ।
शक्तव शर्करासर्पियुक्ता शीते ऽतिपूजिता ॥१३२॥
पिण्डी प्रोक्ता गुरुस्तेषा द्रवल्वाल्पेन्द्रिका लघु ॥१३३॥
न भुक्ता न रदै स्पृष्ट्वा न निर्याता न वा वदन ।
न जलान्तरितान्नीरान् शक्तून्खादन्न केवलान ॥१३४॥

अथ लाजादिनामगुणाः ।

भृष्टाश्याद्यादिजा लाजा धानाः भृष्टयवोद्भवाः ॥१३५॥
लाजा लघुतराः शीता बल्याः पित्तकफच्छिदः ।
हृद्यं तोसारदाहास्रमेहमेदस्तृषापहाः ॥१३६॥
धानाः विष्टम्भिनी रूक्षा कफमेदोहरा गुरुः ॥१३७॥

अथ पृथुकानामगुणाः ।

पक्वार्द्रा व्रीहयः सम्यक् पोड़िताः पृथुका मताः ॥१३८॥
पृथुका गुरवो बल्यां श्लेष्मला वातनाशनाः ॥१३९॥

अथ होलकनामगुणाः ।

शमीधान्यैरर्द्धपक्वैः सुभृष्टैर्होलको मतः ॥१४०॥
होलकोऽल्पानिलो मेदःकफदोषव्रयापहः ॥१४१॥

अथ लम्बीनामगुणाः ।

अपक्वभृष्टैर्गोधूमैरुलम्बोलम्बलम्बिका ॥१४२॥
लम्बी कफप्रदा बल्या लघुः पित्तानिलापहा ॥१४३॥

अथ परिशुष्कादिमांसनामगुणाः ।

छिन्नपक्वे घृते दत्त्वा मांसमालोड्य भर्जितम् ।
मरिचार्द्रकसयुक्तं सुगन्धिद्रव्यवासितम् ।
गतद्रवं सुघातुल्यं परिशुष्कं तदुच्यते ॥१४४॥
घनद्रवोपलिप्तं तत् प्रदिग्धमिति कीर्त्यते ॥१४५॥
प्रदिग्धं कफजिद् बल्यं गुरु शुक्रविवर्द्धनम् ॥१४७॥
रसेन युक्तं सरस शूल्य शूलेन संस्कृतम् ॥१४८॥
परिशुष्कं स्थिरं स्निग्धं रोचनं तर्पणं गुरु ।
बलमेधाग्निमांसौजः शुक्रहृद्धितकरं परम् ॥१४८॥
तदेवोल्लिखितपिष्टत्वात् उल्लिखं परिकीर्त्तितं ॥१५०॥
उल्लिखं गुरु पथ्यं तत् परिशुष्कसमं गुणैः ॥१५१॥
सरसं तद्गुणं ज्ञेयं विशेषाल्लघु दीपनम् ॥१५२॥

प्रोतं शूलेन पिम्मित सौरभाद्यम्बुना सह ।
लिप्तं विधूमैरङ्गारैः पाचितं शूल्यमुच्यते ॥१५३॥
शूल्यं सर्वोत्तमं मांसं लघु पथ्योत्तमं मतम् ॥१५४॥

अथ अङ्गारमतप्तमांसगुणाः ।

अङ्गारादिषु यत्पक्वं मतप्तं तदुदाहृतम् ॥ १५५ ॥

अथ पिष्टमांसगुणाः ।

मांसं दाडिमसिन्धूत्थं सौरभादिसमन्वितम् ।
पिष्ट्वा पूपादिसङ्कल्पा पक्वं पिष्टमिति स्मृतम् ॥१५६॥

अथ घृतादिसाधितमांसगुणाः ।

भर्जितं स्याद् घृतादौ तु भृष्ट्वा यत्साधितं पुनः ॥१५७॥

अथ तन्दुपक्वमांसगुणाः ।

मांसं सौरभसंलिप्तं तन्दुपक्वं मधुप्रभम् ॥१५८॥

अथ तैलपक्वमांसगुणाः ।

प्रदिग्धं सरस पक्वं भर्जितं मृदुपाचितम् ।
प्रतप्तं परिशुष्कञ्च शूल्य यच्चान्यदोदृशम् ॥१५९॥
मांसं तैलेन सिद्धं तद् घोर्य्योष्णं गुरु पित्तलम् ॥१६०॥

अथ घृतपक्वमांसगुणाः ।

घृतपक्व तदेव स्यात् लघु रुच्यमपित्तलम् ।
अत्युष्णं वीर्य्यबलद हृद्य दृष्टिप्रसादनम् ॥१६१॥

अथ तक्रादिपक्वमांसगुणाः ।

गोरसद्रवे दधान्याम्लफलाम्लकटुकादिभिः ।
सिद्धं मांसं भवेद् बल्यं रोचनं दीपनं गुरु ॥ १६२ ॥

अथ सुस्विन्नमांसगुणाः ।

मांसमतिरसं रूक्ष सुस्विन्नं वातलं गुरु ॥१६३॥

अथ वेसवारगुणाः ।

गतास्थि मांसं सुस्विन्न पुनर्भृष्टं यदि पेषयेत् ।

व्योषादि संस्कृतं कृत्वा पचेद् भूयो घृतान्वितम् ।
वेसवारोऽयमुद्दिष्टो बल्यो वातहरो गुरुः ॥१६४॥
स्विन्नमुक्तादिकल्कोऽपि वेसवारोऽपरः स्मृतः ॥१६५॥
मुक्तादिवेसवारस्तु यथा द्रव्यगुणान् वदेत् ॥१६६॥

अथ सौरभनाम ।

हरिद्राव्योषसिन्धूत्थहिङ्गुधान्यकदाडिमैः ।
साजाजीभिर्वेसवारः सौरभोऽयमुदाहृतः ॥१६७॥

अथ मांसरस-सौरसनाम ।

पिष्टमांससमुद्भूतः स्मृतो मांसरसो रसः ॥१६८॥
सौरभः सौरसः स्यात् तु यो रसो लवणान्वितः ॥१६९॥

अथ खानिष्कनाम ।

सयुक्तो वेसवारेण रसः खानिष्कमुच्यते ॥१७०॥

अथ मांसरसनामगुणाः ।

रसो हृद्यः श्रमश्वासवातपित्तक्षयापहः ।
प्रीणनो व्रणयुक्तानां क्षीणानामल्परेतसाम् ॥१७१॥
विश्लिष्टभग्नसन्धीनां शुद्धानां शुद्धिकाङ्क्षिणाम् ।
शस्यते स्वरहीनानां हृष्टायुः श्यवणार्थिनाम् ॥१७२॥

अथ दाडिमयुक्तमांसरसनामगुणाः ।

सदाडिमादिर्बलदो दीपनस्तु कृतस्तु सः ॥१७३॥

अथ सौरभादिगुणाः ।

सौरभः प्रीणनः शीतो मुखशोषश्रमापहः ।
दीपनः कृमिवातघ्नः सर्वधातुविवर्धनः ॥१७४॥
खानिष्कस्तु गुरुः पथ्यो दोषाग्नीनां विशेषतः ।
अल्पमांसादिसंयुक्तो लवणाम्बुविपाचितः ॥१७५॥
दर्कलावणिका ज्ञेया रसाद्या लघवो मताः ॥१७६॥
तक्रादिक्षायसम्भूताः कथिका कथिता बुधैः ॥१७७॥

क्षधिका पाचनी हृद्या रुच्या वह्निप्रदा लघुः ।
कफानिलविबन्धघ्नी किञ्चित् पित्तप्रकोपनी ॥१७८॥

अथ क्षथितनामगुणाः ।

शाकं तक्रादिभिः सम्यक् साधितं क्षथितं मतम् ॥१७९॥
क्षथितं दीपनं रुच्यं वातश्लेष्मघ्नमापह्नम् ॥ १८० ॥
त्यक्ता स्वहेतुशाकस्य गुणानेतद्गुणं भवेत् ॥१८१॥

अथ पर्पटनामगुणाः ।

पर्पटा लघवो रुच्या लघीयान् क्षारपर्पटः ॥१८२॥

अथ पिण्याकनामगुणाः ।

पिण्याकस्तिलकिट्टः स्यात् पललं तिलपिष्टकम् ॥१८३॥
पिण्याकी लेखनो रूक्ष विष्टम्भी दृष्टिदूषणः ॥१८४॥

अथ पललनामगुणाः ।

पललं हृंहणं स्निग्धं कफपित्तकरं गुरु ॥१८५॥

अत्र परिभाषा ।

द्रव्यकाल क्रियायोगदेहादीनि विचार्य तु ।
अन्येषामप्यनुक्तानामेषामपि गुणान् वदेत् ॥१८६॥

इति अन्नादिवर्गः सप्तान्नवर्गो वा

एकादश ।

मांसवर्गः ।

मुखेन्दुपद्मप्रतिबोधलुब्धं विधुन्तुदालिभ्रममादधानम् ।
लक्ष्मीकपोलप्रतिबिम्बिताङ्गं नीलाञ्जनीलं कलयामि सैज· ॥१

अथ हस्तिनामगुणा· ।

हस्ती मतङ्गजो दन्ती मातङ्गोऽनेकपः करी ।
सिन्धुरः कुञ्जर. पद्मी वारणो द्विरदो द्विप· ।
द्विपो दन्तावलो नागः कुम्भी स्तम्बेरमो गजः ॥२॥

हस्तिनी धेनुका प्रोक्ता करेणुः करिणी च सा ॥३॥
हस्ती कफानिलौ हन्यादुष्णपित्तास्रकोपनः ॥४॥

अथ घोटकनामगुणाः ।

घोटकः सैन्धवो वाजी तुरङ्गस्तुरगो हयः ।
तुरङ्गमोऽश्वो गन्धर्वो वाहः सप्तियंशुर्जवी ॥५॥
घोटिका वड़वा वामी प्रसूताश्वा च वाजिनी ॥६॥
घोटकः कटुकः पाके दीपनः कफपित्तजित् ।
वातहृद् हृंहणो बल्यश्चक्षुष्यो मधुरो लघुः ॥७॥

अथ अश्वतरनामगुणाः ।

तज्जोघोव्यामश्वतरी शीघ्रवेगोऽङ्गपूजितः ॥८॥
बल्यमाश्वतरं मांस हृंहणं कफपित्तलम् ॥९॥

अथ उष्ट्रनामगुणाः ।

उष्ट्रः क्रमेलको वक्रग्रीवः शाखाशनो मयः ।
गूढ्वलः करभो दीर्घजङ्घो धूम्रो मरुप्रियः ॥१०॥
उष्ट्रमांसं लघु स्वादु चक्षुष्यमनिलापहम् ।
उष्ट्रमांसं प्रशमनं मेदःपित्तकफप्रदम् ॥११॥

अथ गर्दभनामगुणाः ।

गर्दभो रासभो भारवाही दूरगमः खरः ॥१२॥
गार्दभं पित्तलं बल्य हृंहणं कफपित्तजित् ।
कटु पाके लघु श्रेष्ठं तस्मात् वन्योष्ट्रखरोऽवम् ॥१३॥

अथ महिषनामगुणाः ।

महिषः सैरिभः शृङ्गी वाहवैरी घनाघनः ।
कामरो गवलो दंशो लुलापः कालवाहनः ॥१४॥
माहिषं मधुरं मांसं स्निग्धोष्णं वातनाशनम् ।
निद्रारितोबलस्तन्यलनुदाग्न्यंकरं गुरु ॥१५॥
तद्दारण्यजं विन्द्याद्विशेषाच्छोषिणे हितम् ॥१६॥

अथ भल्लूक गण्डकनामगुणा ।

ऋक्षोऽच्छभल्लो भल्लूक क्षद्मो दक्षथ गण्डक ॥१७॥
ऋक्ष स्निग्धो गुरुर्ग्रंथ स्वादूष्ण पवनापह ॥१८॥
गण्डको बद्धविण्मूत्रे पित्तोऽनिलनाशन ॥१९॥

अथ सिंहशार्दूलयोर्नामगुणा ।

सिंह पञ्चाननो दीप्तो मृगेन्द्र केसरी हरि ॥२०॥
शार्दूल स्यात पञ्चनखो मृगनाथ सकृत्प्रज ॥२१॥
सिंहशार्दूलयोर्मांसमुष्ण वाताश्चिरोगजित् ॥२२॥

अथ व्याघ्रनाम ।

व्याघ्रो मृगारिर्हिंगद्वा व्यालो भीमपराक्रम ॥२३॥

अथ चित्रकनाम ।

चित्रको वेगवाश्चित्रो द्वीपी स्याद्दीर्घदंष्ट्रक ॥२४॥

अथ हृक तरक्ष्वादिनामगुणा ।

ईहामृगो हृक कोकस्तरक्षुस्तु मृगादन ॥२५॥
व्याघ्रचित्रतरक्षुणा हृकाणा मलल गुरु ।
उष्ण वातहर स्वर्य हितमच्चिविकारिणाम् ॥२६॥

अथ कुक्कुरनामगुणा ।

कुक्कुर शुनक श्वा स्याल्लौलेय सुनख शुन ।
सारमेय क्षतज्ञस्य भषको मृगदंशक ॥२७॥

अथ शूकरनामगुणा ।

शूकरो रोमश पोत्री कोलो घोणि किरि किटि ।
दंष्ट्री क्रोष्टुस्थूलरोमा भूदारश्च वराहक ॥२८॥
शौकर पिशित स्वादु बल्य वातापह गुरु ।
स्निग्धोष्ण शुक्रल रुच्य निद्रास्थूलत्वदार्ढ्यकृत् ॥२९॥

अथ छागनामगुणा ।

छागी गलस्तनी मञ्जा सर्वभक्ष्या त्वजा स्तुभा ॥३०॥

सर्वरश्छागलश्छागो वस्तेयः कालवः पशुः ॥२१॥
छागमांस लघु स्निग्धं स्वादुपाकं त्रिदोषजित् ।
अदाह्यि ह्रंहणं नातिशीतं पीनसनाशनम् ॥२२॥
देहधातु समानत्वादनभिष्यन्दि ह्रंहणम् ॥२३॥

अथ मेष-मेदःपुच्छनामगुणाः ।

मेषो भेडो हुडो मेद्र उरभ्र उरणोऽविकः ।
ऊर्णायुरेडको ह्रष्णिर्मेदःपुच्छस्तु दुम्बकः ॥२४॥
मेषमांसं गुरु स्निग्धं वल्यं पित्तकफप्रदम् ।
मेदःपुच्छामिषं ह्रद्य कफपित्तकरं गुरु ॥२५॥

अथ हरिणनाम ।

हरिणस्तास्रवर्णः स्यात् कुरङ्गश्चारुलोचनः ।
सारङ्गोऽजिनयोनिश्च वातायुश्चलनो मृगः ॥२६॥

अथ एणनामगुणाः ।

एणः कृष्णोऽपरः श्यामश्चुरङ्गः कृष्णसारकः ॥२७॥
एणमांसं हिम कृच्यं प्राहि दोषत्रयापहम् ।
पङ्गमं बलदं पथ्यं लघु हृद्यं ज्वरासजित् ॥२८॥

अथ गोकर्णगम्बरनामगुणाः ।

गोकर्णो विकटशृङ्गो पिन्वादन्यस्तु गम्बरः ॥२९॥
गोकर्णं गम्बरौ गोतौ गुरुस्निग्धौ कफप्रदौ ।
रसे पाके च मधुरौ रक्तपित्तविनाशनौ ॥३०॥

अथ गवयनामगुणाः ।

गव्यो नीलाङ्गको नीलो गवयश्चारुदर्शनः ॥३१॥
गवयो मधुरो बल्यः स्निग्धोष्णः कफपित्तलः ॥३२॥

अथ कस्तूरीमुण्डिनोमृगनामगुणाः ।

कस्तूरोद्भविणी गन्धी सुण्डिनो मृगमातृका ॥३३॥
कस्तूरीहरिणः स्वादुर्बलविट् दीपनो लघुः ॥३४॥

मुण्डिनो ज्वरकासास्रक्षयश्वासापहा हिमा ॥४५॥

अथ क्षतमालादिनामगुणाः।

क्षतमालो वर्णचरः पृषतो बिन्दुचित्रकः।
वातघ्नमीर्वारुमृगः क्षिकरः क्षुद्रपुच्छकः ॥४६॥

क्षतमालादिजं मांसं मधुरं ग्राहि दीपनम्।
हृद्यं शीतं लघु श्वासज्वरदोषक्षयापहम् ॥४७॥

अथ रुरु-न्यङ्कुनामगुणाः।

रुरुः शरन्मृगो न्यङ्कुर्बहुविषाणकः ॥४८॥
रुरोर्मांसं गुरु स्वादु हृद्यं पित्तानिलापहम् ॥४८॥
न्यङ्कुः स्वादुर्लघुर्बल्यो हृद्यो दोषत्रयापहः ॥५०॥

अथ गवयनामगुणाः।

गवयः शूली लोमकर्णो लम्बकर्णो विलेशयः ॥५१॥
गवयः शीतो लघुः स्वादुर्ग्राही पथ्योऽग्निदीपनः।
सन्निपातज्वरश्वासरक्तपित्तकफापहः ॥५२॥

अथ महामृगनाम।

काश्मीरदेशे शरभोऽष्टपात् स्यात्
दशार्धयुक्तश्चतुरङ्घ्रिपादः।
उष्ट्रप्रमाणः समहाविषाणः
ख्यातो वनस्थः स मृगोमहाख्यः ॥५३॥

अथ शल्लक (सजारु)-मेधा नामगुणाः।

शल्लकः शलाका स्रवित् मेधास्यात्सूचिनी खरा ॥५४॥
शल्लकः श्वासकासास्रगोफदोषक्षयापहः ॥५५॥
मेधा तथैव विज्ञेया विशेषाद् बलवर्द्धनी ॥५६॥

अथ बिडाल नकुलनामगुणाः।

बिडालकस्तु मार्जारो विषदंशक आखुभुक् ॥५७॥
नकुलः पिङ्गली बभ्रुः सर्पारिः सर्पभक्षकः ॥५८॥

मार्जारो मधुरः स्निग्धो वीर्य्योष्णः कफवातजित् ॥५८॥
क्षयतास्वासकासघ्नो नकुलोऽपि समो गुणैः ॥६०॥

अथ वानरनामगुणाः ।

वानरो मर्कटः कोश्यो वनीकाय बलीमुखः ।
हरिः शाखामृगः प्लावी प्लवङ्गः प्लवगः कपिः ॥६१॥
वानरो पवनश्वासमेदःपाण्डुक्रमीन् जयेत् ॥६२॥

अथ शृगालनामगुणाः ।

शृगाली जम्बुकः फेरुर्गोमायुः फेरवः शिवः ।
शिवेशो वक्रकः क्रोष्टुः शृकालः स्वल्पजम्बुकः ॥६३॥
शृगाली बलदो हृद्यः सर्ववातक्षयापहः ॥६४॥

अथ मूषकनामगुणाः ।

मूषकः खनकः स्तेयो हग उन्दुररास्नुकः ॥६५॥
मूषको बहुविण्मूत्रो बल्यो हृद्योऽनिलापहः ॥६६॥

[इति चतुष्पदः ।]

अथ पक्षीनामगुणाः ।

पक्षी विहङ्गमः पत्री शकुन्तर्विहगः खगः ।
अण्डजो विः पतत्रयः पतत्री शकुनिर्द्विजः ॥६७॥

अथ तित्तिरिनामगुणाः ।

तित्तिरिर्धिचपक्षः स्यात् कृष्णो गौरः कपिञ्जलः ॥६८॥
तित्तिरिर्बलदो वाह्यो हिक्कादोषक्षयापहः ।
ग्रासश्वासहरः पथ्यस्तस्माद् गौरोऽधिको गुणैः ॥६९॥

अथ वर्त्तकनामगुणाः ।

वर्त्तको वर्त्तिकाधिक्यस्ततोऽल्पवर्त्तकाः मताः ॥७०॥
वर्त्तिकोऽग्निकरः शीतो ज्वरदोषक्षयापहः ॥७१॥

अथ लावनामगुणाः ।

लावधिक्याधिक्यतनुः स च चतुर्धा मतो बुधैः ।

पांशुलो गौरकोऽन्यस्तु पौण्ड्रको दर्भरस्तथा ॥७२॥
लावाः क्षुधा हिमाः स्निग्धा ग्राहिणो वह्निदोषनाः ॥७३॥
पांशुलः श्लेष्मलस्तेषां वीर्योष्णोऽनिलनाशनः ॥७४॥
गौरकः कफवातघ्नो रूक्षो वह्निप्रदः परम् ॥७५॥
पौण्ड्रकः पित्तकृत् किञ्चिल्लघुः श्लेष्मानिलापहः ॥७६॥
दर्भरो रक्तपित्तघ्नो क्षुदामयहरो हिमः ॥७७॥

अथ चटकनामगुणाः।

चटकः कलविङ्कः स्यादन्यो ग्राम्यस्तु पुण्ड्रकः ॥७८॥
चटकः शीतलः स्निग्धः स्वादुः शुक्रकफप्रदः।
सन्निपातहरो, वेश्मचटकः शुक्रलः परम् ॥७९॥

अथ वार्त्तिकनामगुणाः।

वार्त्तीको मधुरः शीतः रूक्षश्च कफपित्तनुत् ॥८०॥

अथ पारावतादिनामगुणाः।

पारावतः कलरवो मञ्जुघोषो मदोत्कटः ॥८१॥
कपोतो घुघुरुक्षत् पाण्डुरन्यः काणकपोतकः ॥८२॥
पारावतो गुरुः स्निग्धो रक्तपित्तानिलापहः।
ग्राह्यो शुक्रलः शीतः कपोतोऽपि समो गुणैः ॥८३॥
किञ्चिल्लघुः परं काणकपोतः सर्वदोषकृत् ॥८४॥

अथ मयूरनामगुणाः।

मयूरश्चन्द्रको केको मेघरावो भुजङ्गभुक्।
शिखी शिखावली वर्ही शिखण्डी नीलकण्ठकः।
शुक्लापाङ्गः कलापी च मेघनादानुलासकः ॥८५॥
मयूरो हंहणः शीतगिरीरुग्वातगोषजित्।
उष्णो बलायुर्मेधाग्निकेशहृद्वरवर्णदः ॥८६॥
सेव्यं मयूरजं मांसं हेमन्ते शिशिरे मधौ।
न शरत्ग्रीषयोः पथ्य वर्षास्वप्यहिभक्षणात् ॥८७॥

अथ कुक्कुटनामगुणाः।

कुक्कुटो विष्किरः शौण्डो कालञ्जरणायुधः।
ककवाकुस्ताम्रचूडः स्यादन्योऽरण्यकुक्कुटः ॥८८॥
कुक्कुटो हृंहणः स्निग्धो वीर्योष्णोऽनिलजिद् गुरुः।
चक्षुष्यः शुक्रकफकृद्धन्यो रूक्षः कषायकः ॥८९॥
पानीयकुक्कुटः स्निग्धो हृंहणः श्लेष्मलो गुरुः ॥९०॥

अथ शुकनामगुणाः।

शुको रक्तमुखः कीरो वाग्मी सुन्दरदर्शनः ॥९१॥
सारिका रसिका दूती सुमतिः प्रियवादिनी ॥९२॥
शुक शोतो लघुर्मांही चतकासचयापहः।
रूक्षस्तद्वन्मता सारी स्निग्धा बुद्धिबलाग्निकृत् ॥९३॥

अथ कोकिलनामगुणाः।

कोकिल कलकण्ठ स्यात् परपुष्टो वनप्रिय ।
पिक. परभृताहारो ताम्राक्षो मधुदूतक' ॥९४॥
कोकिलो दीपनो ग्राही चक्षुष्यः क्षयकासजित् ॥९५॥

अथ काक-भासनामगुणाः।

काको ध्वाङ्क्षो गूढकामी बलिपुष्टः सकृत्प्रज.।
वायसो बलिभुक् काग' करटश्चतुरो द्विक. ॥९६॥
भास शिखावान् भासल्लो गृध्राकारो रज प्रज ॥९७॥
काकभासभव मास चक्षुष्य दीपन लघु ।
आयुष्य हृद्य वश्यं क्षतरोगक्षयापहम् ॥९८॥

अथ गृध्रनामगुणा.।

गृध्र सुदृष्टिः शकुनो वक्रदृष्टिश्च दूरदृक् ॥९९॥
गृध्रस्य काकवन्मांस विशेषात्वेषरोगजित् ॥१००॥

अथ हंसनामगुणा ।

हंसः श्वेतो लघुस्तुण्डो मानसौका रसायनः ॥१०१॥

राजहंसः स्मृतः क्षत्रे धार्त्तराष्ट्रोऽथ मालिकः ॥१०२॥
मलिनैः कलहंसस्तु पीतैः कादम्ब उच्यते ॥१०३॥
कारण्डवः प्लवो मद्गुर्वरटा हंसयोषितः ॥१०४॥
हंसः स्निग्धो गुरुर्ह्यो वीर्य्योष्णः स्वरवर्णकृत् ।
वातास्रपित्तशमनो हृद्यो बलवर्द्धनः ॥१०५॥

अथ चक्रवाक-कङ्कनाम ।

सारसो लक्ष्मणो रक्तमूर्द्धा स्यात् पुष्करात्मयः ।
चक्रवाकः पत्ररथयुक्तयुग्मो सुकामुकः ।
रथाङ्गनामा कोकोऽथ कङ्कः स्यात्लोहपृष्ठकः ॥१०६॥

अथ वकनाम ।

बको वकोटो धवलो बलाका विषकण्ठिका ॥१०७॥

अथ आडिनाम ।

आडिः शरालिराटिश्च विचिलजलचारिणी ॥१०८॥

अथ चक्रादिमांसगुणाः ।

चक्रकङ्कवकोटादिमांसं स्निग्धं हिमं गुरु ।
मधुरं सृष्टविण्मूत्रं वातपित्तास्रनाशनम् ॥१०९॥

अथ करेटुनामगुणाः ।

करेटुकः कर्कराटुः करेटुः कर्कराटुकः ॥११०॥
करेटुः हृद्यो बल्यो वातपित्तहरो लघुः ॥१११॥

अथ खञ्जरीट-चाषनाम ।

खञ्जरीटः खञ्जनकश्चाषनामा किकीदिविः ॥११२॥

अथ चातकनाम ।

चातकस्तु घनतोयः सारङ्गस्तोककोऽभ्रमः ॥११३॥

अथ भारद्वाजादिगुणाः ।

भारद्वाजः कर्कराटो व्याघ्राटोऽस्थिकुटिः परः ।
खञ्जरीटो भरद्वाजश्चाषः श्लेष्मानिलापहः ॥११४॥

वातलोऽनिलपित्तघ्नो भारद्वाजः कफासजित् ॥११५॥

अथ श्येन-चिरिंगामगुणाः ।

श्येनः शशादनः पक्षी चिरिंचिल्ली चिरिंल्लिका ॥११६॥
श्येनश्चिरिंभवं मांसं प्रायो दोषकरं गुरु ॥११७॥

अथ उलूकनामगुणाः ।

उलूकः कौशिकः काकवैरी घूको निशाचरः ॥११८॥
उलूकपललं भ्रान्तिकरं वातप्रकोपदम् ॥११९॥

अथ चकोरनामगुणाः ।

चकोरश्चन्द्रिकापायी जीवञ्जीवः सुलोचनः ॥१२०॥
चकोरो ह्रंहणो बल्यः स्निग्धोष्णो वातनाशनः ॥१२१॥

अथ क्रौञ्चादिनामगुणाः ।

क्रौञ्चकः पेचकोऽन्यस्तु पुच्छाधोभागलोहितः ।
वक्रोटः कुररोऽन्यान्यः कोयष्टिष्टिट्टिभस्तथा ॥१२२॥
क्रौञ्चः पित्तानिलहरः पेचकः कफवातजित् ।
कुररः क्रौञ्चवत् श्रेयः टिट्टिभोऽल्पमरुत्करः ॥१२३॥

अथ मत्स्यनामानि ।

मत्स्यो झषस्तिमिर्मीनः शल्को वैसारिणोऽण्डजः ।
पृथुरोमाऽभिसारः स्याद्विसारः शकुली तथा ॥१२४॥

अथ रोहितादिमत्स्यनामगुणाः ।

रक्तोदरो रक्तमुखो रोहितो मत्स्यपुङ्गवः ॥१२५॥
महाशदंष्ट्रः पाठीनः शुक्लवर्णो महाशिराः ॥१२६॥
शफरः क्षुद्रमत्स्यः स्यात् प्रोष्ठी तु शफरी स्मृता ॥१२७॥
शलमीनशिलिचिमस्तिमिः स्यातः समुद्रजः ॥१२८॥
मत्स्या बलप्रदा हृद्या गुरवः कफपित्तलाः ।
उष्णाभिष्यन्दिनः स्निग्धा हृंहणाः पवनापहाः ॥१२९॥
नादेया हृंहणा मत्स्या गुरवोऽनिलनाशनाः ॥१३०॥

कौप्या हृद्याः कफाष्ठीलामूत्रकुष्ठविबन्धदाः ॥१३१॥
ताड़ागा गुरवो हृद्याः शीतला मलमूत्रदाः ॥१३२॥
ताड़ागारश्चिमजाता बलायुर्मंतिहृत्करा: ॥१३३॥
सरोजा मधुराः स्निग्धा बल्या वातनिबर्हणाः ॥१३४॥
सामुद्रा गुरवो नाति पित्तलाः पवनापहाः ॥१३५॥
तत्रापि लवणाम्भोजा ग्राहिणो दृष्टिनाशनाः ॥१३६॥
ह्रदोद्भवा बलकरा न तु स्वल्पजलोद्भवाः ॥१३७॥
हेमन्ते कूपजा मत्स्याः शिशिरे सारसा हिताः ॥१३८॥
मधुशीताम्बुकालेषु नदीचौच्चतड़ागजाः ॥१३९॥
शरत्सु नैर्झराः सर्वे वर्षोत्थाः सर्वदोषदाः ॥१४०॥
रोहितः प्रवरस्तेषु नातिपित्तकरो लघुः ॥१४१॥
कषायानुरसो बल्यः पाठीनः श्लेष्मलो गुरुः ॥१४२॥

अथ क्षुद्रमत्स्य-मत्स्याण्डनामगुणाः।

क्षुद्रमत्स्याः स्वादुरसा दोषवयनिबर्हणाः ॥१४३॥
सूक्ष्माः परं पुंस्त्वहरा रुच्याः कासानिलापहाः।
विदोषकश्चिलोचिमर्मत्स्यो बल्य. परं मतः ॥१४४॥
मत्स्यगर्भो भृशं हृद्य. स्निग्धः स्थैर्यकरो गुरुः।
कफमेदःप्रदो बल्यो ग्लानिक्लम्क्षीनाशनः ॥१४५॥

अथ शिशुमार मकरनामगुणाः।

शिशुमारो हृतेस्तुल्यो मकरस्त्विमिदंष्ट्रकः ॥१४६॥
शिशुमारो गुरुर्हृद्यः कफक्षुद्वातनाशनः।
हृद्यो बलदः स्निग्धस्तद्वन्मकरमादिशेत् ॥१४७॥

अथ कच्छपनामगुणाः।

कच्छपो गूढपात् कूर्मः कमठो दृढ़पृष्ठकः ॥१४८॥
कच्छपो बलदः स्निग्धो वातजित् पुंस्त्वकारकः ॥१४९॥

अथ मण्डूकनामगुणाः।

मण्डूकः प्लवगो भेको वर्षाभूर्दर्दुरो हरिः ॥१५०॥
मण्डूकः श्लेष्मलो नातिपित्तलो बलकारक ॥१५१॥

अथ कर्कटनामगुणाः।

कर्कटः कुरुचिमः स्यात् कुलीरः षोड़याङ्घ्रिक ॥१५२॥
कर्कटो हृंहणो हृद्यः शीतलोऽसृग्दरापहः ॥१५३॥

अथ सर्पनामानि।

सर्पो भुजङ्गो भुजगः फणी भोगी भुजङ्गमः।
कुण्डली कञ्चुकी चक्री पन्नगः पवनाशनः ॥१५४॥
गूढपादुरगो नागो जिह्मगश्च सरीसृपः।
चक्षुःश्रवा दीर्घपृष्ठो व्याल आशीविषस्त्वहिः ॥१५५॥
दर्वीकरो विषधरो दन्दशूको विलेशयः।
कुक्षीनसः पृदाकुः स्याद् दंष्ट्री काकोदरो विषी ॥१५६॥

अथ डुण्डुभादि नाम।

डुण्डुभो राजिलः मोक्षोऽजगरो वाहसः शयुः ॥१५७॥
जलसर्पो गलार्दः स्यात् तिलिक्षो गोनसः स्मृतः ॥१५८॥

सर्पमांसगुणाः।

सर्पाणां श्लेष्मलं मांसं चक्षुष्यं हृंहणं गुरु।
दूषीविषकृमिहरं मेधाग्निबलवर्द्धनम् ॥१५९॥

अथ गोधानामगुणाः।

गोधा घोरपदा पञ्चनखरा जनिपल्लधा ॥१६०॥
क्ष्मासर्पेषु गोधेयो गोधेरः स्युर्मेहागुणाः ॥१६१॥
गोधाऽग्निजननी बल्या हृद्या पित्तानिलापहा ॥१६२॥

अथ सद्योद्धतमांसगुणाः।

सद्योद्धतं भवेन्मांसं व्याधिघाति यथाऽहतम्।
वयस्थं हृंहणं बलासमेदसां परिवर्द्धनम् ॥१६३॥

अथ च्युतगर्भा-सगर्भागुणाः ।

हतानां दोषलं मांसं बालानां बलदं लघु ॥१६४॥
च्युतगर्भां गुरुर्योषित् सगर्भाच तथा मता ॥१६५॥

अथ स्वयं मृतमांसगुणाः ।

स्वयं मृतमबल्यं स्यादतिसारकरं गुरु ॥१६६॥

अथ विषादिहतमांसगुणाः ।

विषाम्बुरुक्षृत स्यैतन् मृत्युदोषरुजाकरम् ॥१६७॥

-- अत्र परिभाषा ।

विहङ्गेषु पुमान् श्रेष्ठः स्त्री चतुष्पदजातिषु ॥१६८॥
परार्धं लघु पुंसां स्यात् स्त्रीणां पूर्वार्धमादिशेत् ॥१६९॥
तुल्यजाति स्वल्पदेहा महादेहेषु पूजिताः ।
अल्पदेहेषु शस्यन्ते तथैव स्थूलदेहिनः ॥१७०॥
चेष्टावतां परं मांसमलसेभ्यो लघु स्मृतम् ॥१७१॥
देहमध्यं गुरु प्रायं सर्वेषां प्राणिनां स्मृतम् ॥१७२॥
पक्षच्छेपादिहङ्गानां तदेव लघु कथ्यते ॥१७३॥
गुरूण्यण्डानि सर्वेषां गुर्वीषोवाच पक्षिणाम् ॥१७४॥
ये मृगाविहगास्तोयदूरावासप्रचारकाः ।
ते नाभिष्यन्दिनः सर्वे विपरीतान्यतोऽन्यथा ॥१७५॥
जलानूपभवाः सर्वे जलानूपचराश्च ये ।
गुरुभ्यो गुरुतरं तेषां मांसमुदाहृतम् ॥१७६॥
धन्वोत्पत्तिप्रचाराणां लघु स्यात्लघुभोजिनाम् ॥१७७॥
उर स्कन्धोदर कुक्षौ पादौ पाणौ कटौ तथा ।
पृष्ठत्वक् यकृदन्त्राणि गुरूणीह यथोत्तरम् ॥१७८॥

इति मांसवर्गो द्वादशः ।

—०—

अथ मिश्रवर्गः ।

गोपालवालैः सहमञ्जविद्याविलोडदत्तं धृतकाकपक्षम् ।
उपाक्षहे वाक्षनखातिदूरं मद्दः परं नोलमचिन्त्यनीयम् ॥१॥

अथ अनुपानादिगुणाः ।

वातेऽनुपानं स्निग्धोष्णं रूक्षोष्णं श्लेष्मणि स्मृतम् ।
पित्ते स्निग्धं हित स्नेहपाने तोयमशीतलम् ॥२॥
भल्लातकस्नेहमूर्च्छाव्यापन्नानां शीतलं जलम् ।
शालिमुद्गादिमद्यानां यूषो मासरसस्तथा ॥३॥
मांसादिभोजिनामन्नं धान्याम्लं दधि वा घृतम् ।
मद्यं शोषिविषार्त्तानामल्पाग्नीनाञ्च शस्यते ॥४॥
क्लान्तानामुपवासाध्वभारस्त्रीसुरतादिभिः ।
पयो सुधासमं प्रोक्तं क्षीणानां रक्तपित्तिनाम् ॥५॥
वसामंसं दीपलं शीतमतिमात्रमधो गुरुः ।
उष्णानुपानतो भुक्तं सुखमन्नं प्रजीर्य्यते ॥६॥
तदादौ कर्षयेत् पीतं स्थापयेन्मध्यसेवितम् ।
पश्चात् पीतं हृंहयति तस्मादौष्ण्य प्रयोजयेत् ॥७॥
न पिबेच्छासकासार्शोजन्तुरोगवतातुरः ।
पीत्वातिभाष्याध्ययन निद्रां न त्वरया भजेत् ॥८॥

अथ जलपानम् ।

सत्म्यकानिलपित्तेषु चैकद्वित्रिपलोन्मितम् ।
वारि शस्यमूष काले दृष्टिकारि रसायनम् ॥९॥
बलीपलितवैस्वर्य्यपीनसश्वासशोफजित् ।
पानीयप्रसृतोरष्टौ यः पिबेदरुणोदये ॥१०॥
धान्येषु मांसे सकलेषु चैवं शाकेषु चानुक्तमिह प्रमादात् ।
आस्वादितो भूतगुणैर्ग्रहीत्वा तदादिशेद् द्रव्यमनल्पबुद्धिः ॥११॥

अथ स्वभावतोऽहितानि।

पट्टिका यवगोधूमा लोहिता याश्च शालयः।
मुद्गाढ़की मसूराश्च धान्येषु प्रवराः स्मृताः ॥१२॥
यः सदामलकैः स्नानं करोति स विनिश्चितम्।
वलीपलितनिर्मुक्तो जीवेद्वर्षशतं सुखी ॥१३॥
भुक्तोपविष्टशुन्दि बलसुप्तानशायिनः।
वायुर्वामकटिस्थस्य मृत्युर्धावति धावतः ॥१४॥
रात्रौ जागरणं रूक्षं स्निग्धं प्रस्वपनं दिवा।
न तेषां स्वपतां दोषा जायतां चोपजायते ॥१५॥
भोजनानन्तरं निद्रा वातघ्नी कफपुष्टिकृत् ॥१६॥
कफमेदोविपार्त्तानां रात्रौ जागरणं हितम्।
दिवास्वप्नश्च वट्मूलह्रिक्काजीर्णातिसारिणः ॥१७॥

अथ दन्तधावनगुणाः।

दन्तधावनमुद्दिष्टमास्यवैमद्यकारणम्।
प्रसेकारुचिदौर्गन्ध्यमलपित्तकफापहम् ॥१८॥
मदातुरः क्षयः श्यामो दन्तताल्वोष्ठरोगवान्।
हिक्काच्छर्दिगिरःपीड़ामूर्च्छाग्नीषो न तच्चरेत् ॥१९॥

अथ मुखप्रक्षालनगुणाः।

मुखप्रक्षालनं शीतपयसा रक्तपित्तजित्।
मुखस्य पिडकाग्नीषनीलिकाव्यङ्गनाशनम् ॥२०॥

अथ पादप्रक्षालनगुणाः।

पादप्रक्षालनं दृष्टिकरं हृद्यं श्रमापहम् ॥२१॥
निद्रासुखकरः सम्यगनेत्ररुगापहः ॥२२॥

अथ गण्डूषगुणाः।

सशेषगण्डूषकरणं मुखशोषद्विजामयान्।
स्वरघातौष्ठपाकव्यरक्तवातान् विनाशयेत् ॥२३॥

सुखोष्णोदकगण्डूषः कफारुचिमलापहः ॥२४॥
विषमूर्च्छामदार्त्तानां शोषिणां रक्तपित्तिनाम् ।
कुपिताच्चिमल-क्षीण-रूक्षाणां न प्रशस्यते ॥२५॥

अथ अञ्जनगुणाः ।

अञ्जनं नेत्रनैर्मल्यं दृष्टिकारि रुजापहम् ॥२६॥
रात्रौ जागरितः श्रान्तश्छर्दितो भुक्तवां स्नया ।
ज्वरातुरः शिरःस्नातः कदाचिन्न तदाचरेत् ॥२७॥

अथ व्यायामगुणाः ।

व्यायामः कर्मसामर्थ्यं स्थैर्यं दोषक्षयाग्निकृत् ।
स सदा गुणमाधत्ते बलिनां स्निग्धभोजिनाम् ॥२८॥
व्यायामदृढचित्तानां व्याधिर्नास्ति कदाचन ॥२९॥
विरुद्धं वा विदग्धं वा भुक्तं शीघ्रञ्च पच्यते ।
भवन्ति शीघ्रं नैतस्य बलोत्थिथिलताजराः ॥३०॥
वसन्ते शीतसमये सुतरां स मतो हितः ।
अन्यदापि स कर्त्तव्य शक्त्यर्द्धेन यथाबलम् ।
तदा समोक्ष्य स्वस्वेदो कण्ठे शीवाललाटयोः ॥३१॥
भुक्तवान् कफमम्भोग' कासी श्वासी क्षयी ज्वर' ।
रक्तपित्ती क्षती शोषी न तं कुर्य्यात् कदाचन ।
अतिव्यायामतः कासो ज्वरश्छर्दिश्च जायते ॥३२॥

अथ मर्दन कर्त्तनगुणाः ।

मर्दनं श्रमवातघ्नं निद्रापुष्टिबलप्रदम् ॥३३॥
केशश्मश्रुनखानाञ्च कर्त्तनं शुचिरूपकृत् ॥३४॥

अथ अभ्यङ्गगुणा' ।

अभ्यङ्गो वातरोगघ्नो धातुसाम्यं बलं सुखम् ।
निद्रावर्णमृदुत्वायुष्कुरुते देहपुष्टिकृत् ॥३५॥
शिरोऽभ्यङ्गः शिरस्तृप्तिकेशदार्ढ्यादिपुष्टिकृत् ।

केशप्रसाधनः केश्यः रजोजन्तुमलापहा ।
पादाभ्यङ्गः सदा हृद्यो बलोत्साहविवर्द्धनः ॥३६॥
उच्चैः श्रवणबाधिर्यं न च मन्याहनुग्रहान् ।
कदापि कर्णरोगाणां कुरुते कर्णपूरणम् ॥३७॥
सिक्त्वाङ्गियथा मूले तरुणां पल्लवादय ।
वर्द्धन्ते हि तथा नृणां स्नेहसिक्तस्य धातव ॥३८॥
स्नेहावगाहनं वातघ्नमनं धातुपुष्टिदम् ।
मात्राभिस्त्रिचतुःपञ्चषड्सप्ताष्टभिरात्रजेत् ।
रसरक्तमांसमेदोमज्जाधातुन् यथाक्रमम् ॥३९॥
वात्तो नवज्वरोऽजीर्णी विरिक्तः केवलामकृत् ।
निरूहतर्पणं यश्च स्नेहाभ्यङ्गादि वर्जयेत् ॥४०॥

अथ उद्वर्त्तनगुणाः ।

उद्वर्त्तनं वातहरं भ्राजकानलदीपनम् ।
गात्रस्थिरत्वसुश्लिष्टत्वक्प्रसादमृदुत्वकृत् ॥४१॥

अथ स्नानगुणा ।

स्नान वातश्रमस्वेदपामाकण्डूमलापहम् ।
हृद्यं कान्तिकर वह्निसर्वेन्द्रियविबोधनम् ॥४२॥
न तदुष्णेन शिरसो योज्यं नेत्राहितं यतः ।
कफवातप्रकोपे तु भेषजार्थे तदाचरेत् ॥४३॥
तच्चातिसारज्वरितकर्णशूलाऽनिलार्त्तिषु ।
आध्मानारोचकाजीर्णभुक्तवत्सु च गर्हितम् ॥४४॥

अथानुलेपादिधारणगुणाः ।

अनुलेपटयामूर्च्छादौर्गन्ध्यश्रमवातजित् ।
सौभाग्यतेजस्त्वस्वर्ग्यमोत्योजोबलवर्द्धन. ॥४५॥
कौशेयाम्बररत्नाना धारण कान्तिकारकम् ।
पापरक्षोमङ्गहरं कामदं श्रीविवर्द्धनम् ॥४६॥

सुखोष्णोदकगण्डूष कफारुचिमलापह ॥२४॥
विषमूर्च्छामदार्त्तानां शोषिणां रक्तपित्तिनाम् ।
कुपिताच्चिमल घीण रूक्षाणा न प्रशस्यते ॥२५॥

अथ अञ्जनगुणा ।

अञ्जन नेत्रनैर्मल्य दृष्टिकारि रुजापहम् ॥२६॥
रात्रौ जागरित श्रान्तस्छर्दितो भुक्तया स्तथा ।
ज्वरातुर शिर स्नात कदाचिन्न तदाचरेत् ॥२७॥

अथ व्यायामगुणा ।

व्यायाम कर्मसामर्थ्यं स्थैर्य्य दोषक्षयाग्निकृत् ।
न सदा गुणमाधत्ते बलिना स्निग्धभोजिनाम् ॥२८॥
व्यायामदृढचित्ताना व्याधिर्नास्ति कदाचन ॥२९॥
विरुद्ध वा विदग्ध वा भुक्त शीघ्रञ्च पच्यते ।
भवन्ति शीघ्र नैतस्य बलोश्रियिलताजरा ॥३०॥
वसन्ते शीतसमये सुतरा म मतो हित ।
अन्यदापि स कर्त्तव्य शक्त्यर्द्धेन यथाबलम् ।
तदा समोक्ष्य सस्वेदो कण्ठे शीवाललाटयो ॥३१॥
भुक्तावान् कृतसम्भोग कासी श्वासी क्षयी क्षय ।
रक्तपित्ती क्षती शोषी न त कुर्य्यात् कदाचन ।
अतिव्यायामत कासो ज्वरश्छर्दिश्च जायते ॥३२॥

अथ मर्दन कर्त्तनगुणा ।

मर्दन श्रमवातघ्न निद्रापुष्टिबलप्रदम् ॥३३॥
केशरमश्रुनखानाञ्च कर्त्तन शुचिरूपकृत् ॥३४॥

अथ अभ्यङ्गगुणा ।

अभ्यङ्गो वातरोगघ्नो धातुसाम्य बल सुखम ।
निद्रावर्णमृदुत्वायुष्कुरुते देहपुष्टिकृत् ॥३५॥
शिरोऽभ्यङ्ग शिरस्तृप्तिकेशदार्ढ्यक्षिपुष्टिकृत् ।

केशप्रसाधनः केश्यः रजोजन्तुमलापहा ।
पादाभ्यङ्गः सदा हृद्यो बलोत्साहविवर्धनः ॥३६॥
उद्वेः श्रवणवाधिर्यं न च मन्याहनूग्रहान् ।
कदापि कर्णरोगाणां कुरुते कर्णपूरणम् ॥३७॥
सिक्तस्याङ्गियंथा मूले तरुणां पल्लवादयः ।
वर्धन्ते हि तथा नृणां स्नेहसिक्तस्य धातवः ॥३८॥
स्नेहावगाहनं वातगमनं धातुपुष्टिदम् ।
मात्राभिस्त्रिचतुःपञ्चषड्सप्ताष्टभिरात्रजेत् ।
रसरक्तमांसमेदोमज्जाधातून् यथाक्रमम् ॥३९॥
वान्तो नवज्वरोऽजीर्णी विरिक्तः केवलामरुक् ।
निरूहतर्पणं यश्च स्नेहाभ्यङ्गादि वर्जयेत् ॥४०॥

अथोद्वर्तनगुणाः ।

उद्वर्तनं वातहरं श्लेष्मजानलदीपनम् ।
गात्रस्थिरत्वसुश्लिष्टत्वक्प्रसादश्लक्ष्णदुत्वकृत् ॥४१॥

अथ स्नानगुणाः ।

स्नानं वातश्रमस्वेदपामाकण्डूमलापहम् ।
हृद्यं कान्तिकरं वह्निसंवेन्द्रियविबोधनम् ॥४२॥
न तदुष्णेन शिरसो योज्यं नेवाहितं यतः ।
कफवातप्रकोपे तु भेषजाद्यं तदाचरेत् ॥४३॥
तच्चातिसारज्वरितकर्णशूलाऽनिलार्त्तिषु ।
भक्तानारोचकाजीर्णभुक्तवत्सु च गर्हितम् ॥४४॥

अथानुलेपादिधारणगुणाः ।

अनुलेपश्चपामूर्च्छादौर्गन्ध्यश्रमवातजित् ।
सौभाग्यतेजस्त्वग्वर्णप्रोत्योजोबलवर्धनः ॥४५॥
कौशेयाम्बररत्नानां धारणं कान्तिकारकम् ।
पापरक्षोग्रहहरं कामदं श्रीविवर्धनम् ॥४६॥

रोगकृद् विषजुष्टानां क्षतव्रणविलासिनाम् ॥६६॥
विदाही पातलः श्लेष्मकफगोफघतां हितः ॥६७॥
दक्षिणः पवनः स्वादु रक्तपित्तहरो लघुः ।
अविदाहप्रदो वृष्यः पक्वपो न च पातलः ॥६८॥
पश्चिमः पवनो रूक्षस्तीक्ष्णः क्षेदबलापहः ।
विशदः शोषणो नृणां कफमेदोहरो लघुः ॥६९॥
उत्तरो मारुतः शीतः स्निग्धदोषप्रकोपकृत् ।
क्लेदनः प्रकृतिस्थानां बलदो मधुरो मृदुः ॥७०॥
क्षयक्षीणविषार्त्तानां विशेषाद् गुणकारकः ॥७१॥

अथ मधुररसगुणाः ।

रसो मधुरकः शीतो धातुस्तन्यबलप्रदः ।
पक्वपो वातपित्तघ्नः कुर्य्यात् स्थौल्यकफक्लमौ ॥७२॥
शोणितयुक्तो ज्वरप्लोषगलगण्डार्बुदादिजित् ॥७३॥

अथ अम्लरसगुणाः ।

रसोऽम्लः पाचनो वृष्यः पित्तश्लेष्मकरो लघुः ।
क्षेपनोष्णो वह्निः शीतः क्लेदनः पवनापहः ॥७५॥
शोणितयुक्तः परं दृष्टे रक्तपित्तादिरोगजित् ॥७५॥

अथ कटुरसगुणाः ।

कटुकः पित्तलः प्रेक्षबलमिकफकृमीन् ॥७६॥
पाचने यो वातसन्धान्यमेदःस्थौल्यहरो गुरुः ।
शोणितयुक्तो भ्रमस्थौल्यातृगोपादिदाहदः ॥७७॥

अथ तिक्तरसगुणाः ।

तिक्तः शीतलधातूष्णज्वरपित्तविषास्रजित् अग्निः ।
वातश्लेष्मविषहरः पाचनोषणः शोषणो लघुः ॥७८॥
शोणितयुक्तः तिक्तगुण सन्धानाश्च सन्धानिजित् ॥७९॥

अथ लवणरसगुणा ।

लवण शोधनो रुच्य पाचन कफपित्तद ।
पु स्त्ववातहर कायग्रैथिल्यमृदुताकर ॥८०॥
सोऽतियुक्तोऽचिपाकास्रपित्तकोठाचितापकृत् ॥८१॥

अथ कषायरसगुणा ।

कषायो रोपणो ग्राही शोषणो वातकोपन ।
सोऽतियुक्तो ग्रहाध्मानहृत्पीडाक्षेपणादिकृत् ॥८२॥
प्रसन्नदृष्टिर्दशनकेश शशाङ्कवक्त्र पलितैर्विहीन ।
पिकाभकण्ठ कमलास्यगन्धो तस्योपसेवो भवतोह मर्त्य ॥८३

अथ वमनगुणा ।

कासोपलेपस्वरभेदनिद्रातन्द्रास्यदौर्गन्ध्यविषोपसर्गा ।
कफप्रसेको ग्रहणीप्रदोषा न सन्ति जन्तोर्वमत कदाचित् ॥८४

अथ विरेचनगुणा ।

बुद्ध प्रसाद बलमिन्द्रियाणा धातुस्थिरत्व च्यवनातिदीप्तिम् ।
चिराच्च पाक वपुष करोति विरचन सम्यगुपास्यमानम ॥८५॥

वस्तिकर्म्मादिगुणा ।

वस्तिर्वाते च पित्ते च कफे रक्ते च शस्यते ।
ममग सन्निपाते च वस्तिरेव हित सदा ॥८६॥
वमन श्च पित्तघ्न विरको रक्तपित्तहा ॥८७॥
वस्तिर्वातहरा श्रेया स्वेदे मान्ये ऽपकारक ॥८८॥
मूले निषिक्तो हि यथा द्रुम प्यात्
नालच्छद कोमलपल्लवाय ।
काले ह्वहत्पुष्पफलप्रदय
तथा नर प्यादनुवासनेन ॥८९॥

अथ रक्तमोक्षणगुणा ।

त्वग्दोषा पक्ष्मय शोफा रोगा शोणितसम्भवा ।

कुन्देन्दु स्वच्छकीर्त्तिं परमददलनोद्दामदोर्दण्डदक्ष ।
यस्याकर्ण्य प्रभूत प्रथितगुणगण कर्णसाफल्यभाजो
दैव निन्दन्ति लोका नयनविफलताखेदमावेदयन्त ॥१०५॥

जननयनसुधांशुस्तस्य शुद्धस्तनूजो
जगति भरणपाले क्षोणिपालो बभूव ।
सकलसकलवाञ्छासिद्धिहेतोर्विधाता
सुरतरुवरचक्रे यत्करच्छद्मनैव ॥१०६॥
हरिचन्द्रस्तस्मात् समजनि जनानन्दजननो
हरिचन्द्रो लोके परबलपरीतापकरण ।
पर विख्यामित्रे ऽहितमयमाधत्त मतिमान् ।
विशिष्टो नैतस्माज्जगति महितोऽन्य सुकृतिन ॥१०७॥

तस्मादभूदङ्गुलक्षत्यमान्य साधारणो भूमिपतिर्वदान्य ।
दारिद्र्यमुन्मूल्य पुन स्ववैरिष्वस्थापि काम कृपयैव येन ॥१०८॥

अजनि सहजपालस्तस्य पूर्वस्तनूज
सकलगुणनिधान शास्त्रधर्मैकवेत्ता ।
प्रथितपुरुषरत्न य समालोक्य लोका
बहुविधिषु विधातु कान्तता मन्यते स्म ॥१०८॥

यो राज्ञा मुखतिलक कोटारमल्ल
स्तन श्रीमदनृपेण निर्मितेऽत्र ।
ग्रन्थे ऽस्मिन् मदनविनोदनाम्नि पूर्णो
वर्गोऽय गुणगणमिश्रमिश्रकोऽयम् ॥११०॥
समाप्तोऽय ग्रन्थ ।

रक्तमोक्षणशीलानां न भवन्ति कदाचन ॥८०॥

अथ ऋतुचर्य्या ।

संदर्भात् क्षुपिता भवन्ति हि मला वर्षासु वातादयः
क्लिन्नत्वाद् वपुषोऽनले क्षणतरं वैद्येन देयं ततः ।
अन्नं दीपनपाचनञ्च मलघ्नं क्लेदापहोष्णद्रवं
रूक्षं नातिकषायतिक्तकटुकं स्निग्धञ्च किञ्चिद्रसैः ॥८१॥
दिव्यं चौक्षमधाम्बु तप्तशिशिरं मध्वौद्रमल्पं पिबेत्
गच्छन्त्योषधयो विदाहमधिकं तारुण्ययोगात्तदा ।
व्यायामार्कमरीचिमैथुनसुखावश्यायवर्ज्यं ततः
भूवाष्पाम्बुभुजङ्गदंशमशकैर्वर्ज्यं शयीतालये ॥८४॥
शीतोत्थे मृदुवातवृष्टिजनिते साङ्गारयाने गृहे
निर्वाते क्षितिपः शयीत मधुरं किञ्चिच्च पीत्वासवम् ।
काश्मीरागुरुलेपभूषिततनुर्यष्टाङ्गनाभिर्व्रजेत्
गुर्वन्नव्यजनावगाढनरतिं स्वापन्दिवा च त्यजेत् ॥८५॥
सेव्याः स्वादुकषायतिक्तविशदा वर्षे त्यजेज्जाङ्गलं
द्राक्षाचोरसितेक्षुशालिमधुरा गोधूममुद्गादयः ।
नैसेल्यादखिलं जलं लघुतरं वासः सजलचन्दनं
सेवेतेन्दुकरान् प्रदोषसमये गाहेत साम्भं सरः ॥८६॥
वर्षासूपचितं विरेचविधिना पित्तं हरेद् बुद्धिमान्
युक्त्या रक्तविमोक्षणेन हविषस्तिक्तस्य पानं तथा ।
रात्रौ जागरणं व्यवायमधिकं घर्मं तुषारं दधि
क्षाराम्लोष्णविदाहि तीक्ष्णकटुकं निद्रां दिवा च त्यजेत् ॥८७॥
हेमन्ते लवणाम्लतिक्तकटुका वारोल्कटं हृंहणं
सर्पिस्ते लसमेतमुष्णमशनं तोयानि पानानि च ।
सेवेतागुरुकुंपितोऽम्बु शिशिरङ्गाहेत तैलप्लुतः
कौशेयास्तरणे शयीत शयने साङ्गारयाने गृहे ॥८८॥

श्यामापीनपयोधरोरुजघनामाश्लिष्य धन्योऽङ्गनां
वाह्लीकागुरुलेपभूषिततनुं धूपैर्वृतं धूपिताम्।
कामं मैथुनमद्यतर्पितवपुः सेवेत बल्यै रसैः
कर्तव्यः शिशिरेऽयमेव नितरां शीताधिकत्वाद्विधिः ॥९९॥
तीक्ष्णोष्णकषायरूक्षकटुकं कोष्णं वसन्तेऽशनं
तन्मद्यं मधुसुप्तजाङ्गलयवप्रायं हितं निर्मलम्।
व्यायामं विपिनञ्च कोकिलकलालापाकुलं कामिनो-
स्नानोद्वर्तनचन्दनानि नृपतिः सेवेत रम्या स्रजः ॥१००॥
हेमन्ते निचितः प्रकुप्यति कफो भानोः करैरादृत-
स्तस्मात् तीक्ष्णगिरोविरिकवमनैर्गण्डूषधूपादिभिः।
त प्राज्ञो विजयेत विश्वजनदक्षायैरथोष्णाम्बुभिः
शीतस्निग्धगुरुद्रवाम्लमधुरं निद्रां दिवा च त्यजेत् ॥१०१॥
ग्रीष्मे शीतगृहान् सरांसि सरितो वापीवनानि स्रजो
हारान् शीतलतालवृन्तपवनान् सेवेत निद्रां दिवा।
वासांस्यच्छलघून्यनुष्णमधुरं चान्न समर्पिंद्रवं
मन्यच्चीरसुपानकानि च सिताद्यिग्धानि शीतान्यपि ॥१०२॥
शुभ्रे हर्म्यतले शयीत शयने प्रत्यग्रपुष्पाचिते
चातेश्चन्दनचन्द्रचर्चिततनुः संस्पृश्यमानः सुखैः।
व्यायामं परिशीलयेन्मिथुनरतिं घर्मं तथोष्णं रसा-
नाग्नेयान् परितस्त्यजेन्मतिमतो वैद्यस्य वाक्ये रतः ॥१०३॥

अथ धन्यकृत् परिचयः।

टीकान्वये महति भूमिभुजां विशुद्धे
काञ्चेति नाम नगरं जगति प्रसिद्धम्।
यद्वैधसा विहितमादरतः स्वसृष्टे-
स्तत्सृष्टतातिशयपुञ्जदिदृक्षयेव ॥१०४॥
तत्र श्रीरत्नपालः समजनि जनतानन्दसन्दैकसान्द्रः

कुन्देन्दुः स्वच्छकीर्त्तिः परमददलनोद्दानदीक्षैकदक्षः ।
यस्याकर्ण्य प्रभूतं प्रथितगुणगणं कर्णसाफल्यभाजो
दैवं निन्दन्ति लोका नयनविफलतां खेदमावेदयन्तः ॥१०५॥

जननयनसुधांशुस्तस्य सुहस्तनूजो
जगति भरणपाले चौणिपालो बभूव ।
सकलसकलवाञ्छासिद्धिहेतोर्विधाता
सुरतरुवरचक्रे यत्करच्छद्मनैव ॥१०६॥

हरिचन्द्रस्तस्मात् समजनि जनानन्दजननो
हरिचन्द्रो लोके परबलपरीतापकरणः ।
परं विख्यातेऽस्मिन्नहितमयमाधत्त मतिमान् ।
विशिष्टो नैतस्माज्जगति महितोऽन्यः सुकृतिनः ॥१०७॥

तस्मादभूदङ्गुतकृत्यमान्यः साधारणो भूमिपतिर्वदान्यः ।
दारिद्र्यमुन्मूल्य पुनः स्ववैरिष्वस्यापि कामं कृपयैव येन ॥१०८॥

अजनि सहजपालस्तस्य पूर्वस्तनूजः
सकलगुणनिधानं शास्त्रधर्मैकवेत्ता ।
प्रथितपुरुषरत्नं य समालोक्य लोका
बहुविधिषु विधातुः कान्ततां मन्यते स्म ॥१०८॥

यो राज्ञां मुकुटतिलकः कटारमल्ल-
स्तेन श्रीमदनभूपेण निर्मितेऽस्मिन् ।
धन्येऽस्मिन् मदनविनोदनाम्नि पूर्णो
वर्गोऽयं गुणगणमित्यमित्यकोऽयम् ॥११०॥

समाप्तोऽयं धन्यः ।